Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

आत्मज्ञान

१६ मार्च से १५ अप्रैल १९८८ तक

कर्मयोगी महात्मा वेदभिक्षुः जी
०४ मार्च १९८८ को जि[illegible]तिथि है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

मान्यवर,

दयानन्द संस्थान एवं हिन्दू रक्षा समिति के संस्थापक वेद और आर्ष साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए आत्मोत्सर्ग करने वाले सुप्रसिद्ध लेखक, पत्रकार व आर्य नेता स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः (पंडित भारतेन्द्रनाथ) के साठवें जयन्ती समारोह में आपकी सपरिवार उपस्थिति प्रार्थनीय है।

उत्तराकांक्षी
प्रो० धर्मवीर, मन्त्री दयानन्द संस्थान
२२८६, आर्यसमाज मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली ५
दूरभाष ५७२४७४१, ७४५३२५

भवदीय
रामनाथ सहगल
(मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा)
संयोजक

कार्यक्रम

स्मृति सभा : आर्यसमाज, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली में/ रविवार, १३ मार्च, १९८८ को / दोपहर मध्याह्न २ बजे

मुख्य अतिथि : वेदप्रताप वैदिक

अध्यक्षता : स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

प्रमुख वक्ता : सर्वश्री न्यायमूर्ति जयंत पटेल, बालाराव सावरकर/ प्रशांत वेदालंकार/क्षितिश वेदालंकार, प्रो. रतनसिं

यज्ञ : वेद मंदिर, इब्राहीमपुर, दिल्ली-३६ में/ सोमवार १४ मार्च, १९८८ को प्रातः ९ बजे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य के लिए संघर्ष करो ।

संस्थापक—स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु:
सम्पादक—राकेशरानी
वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम
अलीपुर, दिल्ली-110036
फोन नं. : 745325
कार्यालय—2286, आर्यसमाज मार्ग,
नई दिल्ली-110005
फोन—5724741
वार्षिक मूल्य : 35 रुपये
विदेश में : विमान से 48 पौंड, 60 डालर
समुद्री डाक से 7 पौंड, 12 डालर
आजीवन : 501 रुपये
विदेश में : 1501 रुपये
यह अंक : साढ़े तीन रु.
र्च 1988 : वर्ष 20, अंक 11

वेदोपदेश

सब उपकार करें

पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्य्याणाम् ।
इन्द्रं सोमे सचा सुते । ऋग् 1-5-2

पदार्थ—हे मित्र विद्वान् लोगो ! (वार्य्याणाम्) अत्यन्त उत्तम (पुरूणाम्) आकाश से लेके पृथ्वी पर्य्यन्त असंख्यात पदार्थों को (ईशानम्) रचने में समर्थ (पुरूतमम्) दुष्ट स्वभाव वाले जीवों को ग्लानि प्राप्त कराने वाले (इंद्रम्) और श्रेष्ठ जीवों को सब ऐश्वर्य्य के देने वाले परमेश्वर के तथा (वार्य्याणाम्) अत्यन्त उत्तम (पुरूणाम्) आकाश से लेके पृथिवी पर्य्यन्त बहुत-से पदार्थों की विद्याओं के साधक (पुरूतमम्) दुष्ट जीवों वा कर्मों के भोग के निमित्त और (इन्द्रम्) जीव-मात्र को सुख-दुःख देने वाले पदार्थों के हेतु भौतिक वायु के गुणों को (अभिप्रगायत) अच्छी प्रकार उपदेश करो । और (तु) जो (सुते) रस खींचने की क्रिया से प्राप्त वा (सोमे) उस विद्या से प्राप्त होने योग्य (सचा) पदार्थों के निमित्त कार्य हैं, उन्हें उक्त विद्याओं से सब के उपकार के लिए यथायोग्य युक्त करो ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

महात्मा वेदभिक्षुः की जय (सम्पादकीय) 3
हमारा लक्ष्य (महात्मा वेद भिक्षुः की अमर वाणी) 7
दूरदर्शन की नीतियों पर तमस छा गया —मुकेश कौशिक 9
धन : एक सन्तुलित दृष्टिकोण —पंडित नरदेव वेदालंकार 16
माता विद्यावती शारदा का एक पत्र भगवान् के नाम 21
आप ही के पत्र 25
पत्रकारिता : भारतेन्द्र जी से मेरे परिचय का सेतु — ब्रह्मदत्त स्नातक 26
भाई भारतेन्द्रनाथ जी : सार्थक जीवन के कुछ अध्यायन —सत्यपाल शास्त्री 33
संघर्षशील कर्मयोगी : महत्त्वपूर्ण तिथियां 40
बाल जगत् 47
सांस्कृतिक प्रदूषण भी एक बड़ा खतरा है —विश्वम्भर प्रसाद "गुप्तबन्धु" 53
दयानन्द के जीवन की कहानी : चित्रों की जुबानी —अमरनाथ आर्य 59
अंग्रेजी छोड़िये, हिन्दी अपनाइये —सन्तोष 'कण्व' 65
संस्कृत भाषा का पुनरुद्धार : महर्षि दयानन्द का महान् संकल्प —डा. प्रशान्त वेदालंकार 73
धर्मवीर आर्य पथिक पंडित लेखराम —स्वर्गीय दीनानाथ सिद्धान्तालंकार 81
धर्मान्तरण से राष्ट्रान्तरण का मिशनरी षड्यन्त्र —दशरथ उपाध्याय 89
हिन्दू उपेक्षा वृत्ति को समाप्त करने की आवश्यकता — हैरी एन. डेस 95
महर्षि दयानन्द और युगान्तर —स्व. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' 101
पंजाब : अब पटाक्षेप होना चाहिए —सुरेन्द्र सिंह कादियाण 111
आर्यसमाज के मौलिक आधार —स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती 115
नशे में डूब रही है विश्वविद्यालय संस्कृति —पृथ्वीनाथ पाण्डेय, निशानाथ पाण्डेय 123

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णत. सहमत हो।)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

महात्मा वेदभिक्षुः की जय

अपने अन्तःकरण में स्वदेश, स्वधर्म और अपनी संस्कृति के प्रति अनुराग एवं अन्याय, अत्याचार और अनाचार से स्वराष्ट्र को मुक्त कराने के लिए एक मनीषी ने आजीवन संग्राम किया था। वह अपने लिए नहीं अपितु दूसरों के लिए जिया था। भारत को महिमामय और गरिमामय बनाना ही उसकी चिरसाध थी और इस राष्ट्र की प्राण वायु अर्थात् वैदिक संस्कृति, सभ्यता तथा धर्म को उसके ओजस्वी रूप में जन-जन के समक्ष प्रस्तुत करना ही उसने अपनी जीवन विधा बनाया था। वह महामानव आज हमारे मध्य होता तो हम समारोहपूर्वक उसकी षष्टिपूर्ति (साठवीं जयन्ती) मनाते। श्रद्धा सुमन उसके श्री चरणों में समर्पित करते, परन्तु जगन्नियन्ता का तो अपना ही विधान है। उसने लगभग चार वर्ष पूर्व (20 दिसम्बर 1983) अपने उस प्रिय पुत्र को अपने पास बुला लिया। महात्मा वेदभिक्षुः के श्रद्धालुओं ने उनका जय निनाद करते हुए उनकी नश्वर काया को अग्नि की ज्वालमालाओं में समाहित होते हुए देखा था तथा उनके नेत्रों से श्रद्धा का गंगा जल निस्सृत हो उठा था।

वे निर्भीकता और सिद्धांतवादिता के एक ऐसे जीवित प्रतिमान थे, जिनका स्मरण कर भावी पीढ़ियां 'अभय मन्त्र' को हृदयंगम कर राष्ट्र निर्माण के पथ पर निर्भीकतापूर्वक बढ़ेंगी। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के युग-परिवर्तनकारी आह्वान को साकार करने का संकल्प बाल्यावस्था में ही ग्रहण कर लिया था, जब वे गुरुकुल में विद्यार्थी थे। क्रांतिकारी पिता पंडित गयाप्रसाद शुक्ल से उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में क्रांति लाने की उमंग विरासत में मिली थी और माता विद्यावती शारदा ने उन्हें सत्य मार्ग पर चलने को ही जीवन का गुण दूध के साथ पिलाया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसीलिए वे अर्था भाव को भी कभी अपनी यात्रा में बाधक नहीं बनने देते थे। सिद्धांत त्याग कर सम्मान और प्रतिष्ठा की प्राप्ति के मिथ्या सुख से कभी स्वयं को प्रेरित नहीं होने देते थे। जहां और जब भी उन्हें कभी अन्याय होता लगा, वे अपने-पराये का भेद भूलकर वक्षःस्थल तानकर खड़े हो जाते थे। ब्रिटिश राजसत्ता को चुनौती देने के लिए वे किशोरावस्था में ही निर्भीक होकर स्वतन्त्रता संघर्ष के रणांगन में कूद पड़े थे तो स्वतन्त्र भारत में भी विदेशी मिशनरी विरोधी आंदोलन और गोरक्षा आंदोलन में उन्होंने सक्रिय योगदान दिया था।

पोप जब पहली बार भारत आये थे तो उन्होंने अपने धुआंधार प्रचार से राष्ट्र के जन मानस को झकझोर उनकी उस यात्रा का दुरुपयोग धर्मान्तरण के लिए नहीं होने देने के लिए जगाया था। उनका वह तूफानी प्रचार ही पोप महोदय के अनुयायियों की दुरभिसन्धि को तार-तार करने में सहायक सिद्ध हुआ था। इस बार जब पोप पाल द्वितीय का भारत आगमन हुआ तो महात्मा वेदभिक्षु: के युगप्रवर्तक विचारों से प्रेरित कुछ बन्धुओं ने विरोध की रीति तो निभाई परन्तु उस आंदोलन में वैसी ओजस्विता नहीं आ पाई। वे सिद्धान्तों के आधार पर किसी पंथ या मजहब के प्रचार करने के ओछे हथकण्डों को अपना कर धर्म के नाम पर व्यापार के षड्यन्त्र को तार-तार कर देना देव दयानन्द के प्रत्येक उपासक का नैतिक कर्तव्य मानते थे। साधनों का अभाव कभी उनकी सत्य साधना की राह में बाधक न बन पाया। आर्यसमाज के प्रचार और प्रसार के लिए आर्य मित्र को दैनिक समाचार पत्र के रूप में प्रकाशित कर दिखाना उन्हीं का चमत्कार था। पास में कुछ भी न होते हुए सैकड़ों वैदिक ग्रन्थ तथा प्रभु की अमरवाणी वेद का हिन्दी भाष्य छापकर प्रत्येक हिन्दू परिवार में पहुंचाने के महान् यज्ञ का शुभारम्भ उनके अडिग आत्मविश्वास का परिचायक था। आज देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी सहस्रों हिन्दू परिवारों में वेद का सुलभ होना उनकी कर्मठता के चमत्कार की साक्षी प्रस्तुत कर रहा है।

विदेशी धन और साधनों के बल पर हिन्दुओं को धर्मच्युत करने का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घिनौना सपना अपने नेत्रों में संजोकर कतिपय देशी-विदेशी शक्तियाँ सक्रिय हुई तो महात्मा वेदभिक्षु: ने ही महर्षि के अनन्य शिष्य पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा स्वातंत्र्य विनायक दामोदार सावरकर अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, देवतास्वरूप भाई परमानन्द, महामना पंडित मदन मोहन मालवीय और पंजाब केसरी लाला लाजपत राय द्वारा प्रारम्भ किये गये हिन्दू संगठन के महान् अभियान को अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति का गठन कर पुनः गतिमान् किया था। गिरते हुए स्वास्थ्य को उन्होंने अपने इस अभियान में बाधक नहीं बनने दिया और डाक्टरों के बहुत मना करने पर भी भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक हिन्दू जागरण के अभियान को अपने रक्त का कण-कण और जीवन का क्षण-क्षण समर्पित कर प्रबल प्रभजन के रूप में चलाया। उन्होंने "जनज्ञान" की जन-जन में स्वदेश प्रेम की चिनगारी का स्फुरण कर उसे प्रचण्ड अग्नि के रूप में धधकाने का व्रत निभाया। विश्व बन्धुत्व का पावन लक्ष्य उन्हें सदैव प्रेरित करता रहा। उन्होंने इस देश के इतिहास का गहन अध्ययन-मनन कर जो निष्कर्ष निकाला और जिसे उन्होंने अपने मन मन्दिर में श्रद्धा सहित बसाया था, वह यह था कि हिन्दुत्व ही विश्व की विभ्रान्त मानवता को ... पावन पथ पर ला पाने में समर्थ और सक्षम है, जिसमें व्यक्ति ... क्षेत्र, मत, सम्प्रदाय और मजहब के भेदभाव से ऊपर उठकर "अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम्, उदार चरितानां वसुधैव कुटुम्बकम्" के महान् आदर्श को सहर्ष स्वीकार करता है।

उनकी मान्यता थी कि सबल हिन्दू राष्ट्र ही साम्प्रादायिकता से स्वदेश को मुक्त कराने की एक मात्र युक्ति है, क्योंकि वेद के जिस पावन ज्ञान से हिन्दुत्व का चिन्तन पक्ष प्रेरणा पाता है, वह अपने अनुगामियों को यही सिखता है कि विश्व का हर प्राणी अपना है। भेदभाव की दीवारें अज्ञान की देन है। वे यही मानते थे कि जब हिन्दुत्व का अनुगामी अपने जीवन में वैदिक सिद्धान्तों को क्रियात्मक रूप से अपनायेगा तो राम प्रसाद बिस्मिल के सम्पर्क में आने वाला अशफाकुल्ला भी मादरेवतन (मातृ भूमि) के लिए अपना जीवन-सुमन समर्पित करने में गर्व अनुभव करेगा। वे सशरीर हमारे मध्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं है, किन्तु उनका प्रेरक जीवन, उनकी कर्मठता और सिद्धान्त पर अडिग रहते हुए सर्वस्व समर्पण की जीवन-शिक्षा हमें प्रेरणा प्रदान कर रही है। आज उनकी पावन जन्म तिथि (चौदह मार्च) पर हम उनके अधूरे स्वप्नों को साकार करने का संकल्प दोहरा रहे हैं। इस आशा और विश्वास के साथ महात्मा वेदभिक्षु: के सिद्धांतों और आदर्शों के प्रति निष्ठावान जनज्ञान के सहस्रों पाठक भी यह व्रत दोहराएंगे कि वे दयानन्द संस्थान के वेद प्रचार और हिन्दुत्व रक्षा अभियान में अपनी-अपनी सहयोग समिधा प्रदान कर अपना कर्तव्य निभायेंगे और इस राष्ट्र को वह महिमामण्डित तथा बलशाली रूप प्रदान करेंगे, जिससे यह विश्व की पथ भूली मानवता को सत्पथ दर्शा पायेगा और वह कृत्रिम भेदभावों से मुक्त होकर उस भारत के प्रति नत-मस्तक होगी, जिसका शाश्वत स्वर है शान्ति और सौहार्द तथा सत्य पथ का अवलम्बन।

हमारी सर्वशक्ति मान प्रभु से प्रार्थना है कि वह हमें महात्मा वेदभिक्षु: के अधूरे कार्य को पूर्ण करने की शक्ति प्रदान करें और हम जीवन के अंतिम क्षण तक उनके सपनों को साकार करने के लिए असिधारा व्रत का पालन करते हुए कर्मरत रहें। निराशा हमारी राह न रोक सके और विरोध तथा अभाव एवं इस मार्ग पर चलते हुए लगभग चालीस अभियोगों का क्रम हमें हमारे कर्तव्य पथ से डिगा न पाये और हम सब समवेत स्वर में यह जय घोष जग-जग में गुंजायें—वैदिक धर्म की जय, देव दयानन्द के महान् शिष्य महात्मा वेदभिक्षु: की जय। हमारा हर श्वास, हमारा हर पल, हमारा हर पग उनकी धवल कीर्ति को संसार में विस्तारित करने का माध्यम बने। उनका महान् तप: पूत जीवन हमारे लिए ज्योति: स्तम्भ बना रहे और हम अविरल उन द्वारा प्रदर्शित पावन पथ पर बढ़ते रहें। आप सब के सहयोग का विश्वास लिये ही हम उनके सपनों की पूर्ति हेतु सतत् संघर्ष रत करने का व्रत दोहरा रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षु की अमरवाणी

हमारा लक्ष्य

हमारा काम आप के मस्तिष्क के अनुसार सोचकर आपको प्रसन्न करना नहीं है। न ही हम समय के प्रवाह के साथ बहकर आप की कल्पनाओं के गीत गाने के लिए तैयार हैं।

हमारा लक्ष्य है वर्तमान के प्रवाह को बदलना, आप के मस्तिष्क को सोचने की नई दिशा देना। आप को सत्य का बोध कराना, भले ही वह आप को कटु लगे, पर यह कटुता तो शान्ति और आनन्द का रस पान कराने के लिए आवश्यक है।

शान्ति का दिशा बोध हमारा दायित्व है। उज्ज्वल-उन्नत जीवन का रेखा चित्र, चिन्तन और दर्शन हमारा कर्तव्य है। हम आप को देव बनाने की दिशा में प्रयत्न कर रहे हैं।

आप भले ही कुछ भी सोचते रहें किन्तु हमारा संकल्प अडिग है। हम प्राणों को स्वर देने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे। स्वर में जीवन और जीवन में आनन्द के लिए हमारी सक्रियता अविराम चलती रहेगी।

पीड़ाहरण के लिए कष्ट वरण करना हमारा स्वभाव बन गया है। देश-देशान्तरों में बसी समूची मानवता की ऐक्य बद्धता के लिए दिशा बोध के तार हम बजाते रहें हैं। धर्म के अमृत स्रोत की पावन गंगा का निर्झर बनाने का प्रयत्न हमने किया है।

गौ, गंगा और गायत्री का संगम पृथ्वी, प्यार और ज्ञान का प्रतीक है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आत्म तत्व का बोध, सब की समता का चिन्तन और धरती की ऊर्जा में पोषण का संगीत आज की नहीं, मानव की शाश्वत अभिलाषा है।

प्यार बांटते चलो, ज्ञान बांटते चलो, दर्द सब मिलें हमें, सुख सभी को मिल सके, यह हमारी साधना है। आप सोचते रहिए, हमारा प्रयत्न दिन-रात जारी रहेगा। आप का सुख हमारा सुख है। आपकी पीड़ा हमारी पीड़ा है।

सचमुच हम आपके हैं। आपके लिए हैं। हमारा अपना कुछ भी तो नहीं, जो कुछ भी है वह आपके लिए है। आप स्वीकार करें तो सौभाग्य ठुकराएं तो हमारी दुर्बलता।

साधना का दीप जलाकर वेद मन्दिर में बैठे हैं। यमुना तीरे मन्द पवन से पूत पावन धरती का प्रांगण वेद मन्दिर की शोभा है। प्रभु का अमर संगीत भुवन भर में भास्कर की भांति ज्योतिर्मय करने की निष्ठा लेकर हमने मन्दिर वेद की प्रतिष्ठा की है।

देव दयानन्द के शिष्य होने का हमें अभिमान है। भारत मां के एक छोटे-से स्थान में दीप्ति की धारा बहेगी और अज्ञान तम समूल नष्ट होगा, यह विश्वास हमारी प्रेरणा है।

काल को ठुकरा कर काल निर्माण के लिए कालक्रम में कला अध्याय जोड़ते हुए हम चल रहे हैं।

आप आशीर्वाद दें कि हम चलते रहें—फिर अनन्त तक और हमारे बाद और, और फिर और क्रम रुकेगा नहीं, ध्वज झुकेगा नहीं।

(जनज्ञान मासिक के सितम्बर 1970 के अंक से उद्धृत)

यह पूर्णत: सत्य है कि जब किसी के विनाश की घड़ी निकट आती है तो उसका विवेक अर्थात सोचने समझने की शक्ति स्वतः नष्ट हो जाती है। उस स्थिति में उसकी बुद्धि भी विपरीत आचरण करती है।

परिग्रह नहीं, अपरिग्रह ही सामाजिक व्यवस्था को सुदृढ करने का धर्मसम्मत प्रातन पथ है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दूरदर्शन की नीतियों पर तमस छा गया है

—मुकेश कौशिक

धारावाहिक "तमस" को न्यायालय ने हरी झण्डी दिखा दी। एक खास किस्म की विचारधारा वाले लोगों और संगठनों ने अदालत के निर्णय को न केवल सराहा बल्कि वक्तव्य जारी कर खुशी भी जाहिर की। बुद्धिजीवियों ने इसे प्रतिबंधित करने की मांग करने वाले हिन्दू संगठनों की पराजय के रूप में दर्शाया और साथ ही अनेकानेक तर्कों से "तमस" का प्रसारण न्यायसंगत ठहराया। जनता ने इसे किस रूप में लिया और लेगी, यह अभी साफ तौर से जाहिर नहीं हो पाया है।

जनता की मनोभावना व्यक्त होने में समय तो लगता ही है, साथ ही वह उस रूप में भी जाहिर नहीं हो पाती कि किसी तंत्र पर कोई खास प्रभाव डाल पाए। लेकिन जन भावना से जुड़े कई सवाल "तमस" धारावाहिक पर उठी आवाज से जुड़े हुए है। एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उभरा है कि न्यायलय द्वारा दिया गया निर्णय क्या जन-भावनाओं की कसौटी पर खरा उभरा है? न्यायालय ने इतिहास की दुहाई देकर जिस धारावाहिक को चालू रखने की अनुमति दी, क्या वास्तव में वह इतिहास कहलाए जाने लायक है?

न्यायलय न कहा कि यह इतिहास है। अदालत ने जो निर्णय दिया, उसका आदर किया जाना चाहिए और उस आधार पर यह मान लेना चाहिए कि देशकाल की परिस्थिति का थोड़ा-सा भी पुट रखने वाली कहानियां इतिहास है। प्रेमचन्द की कहानी का पात्र "नमक का दारोगा" वंसीधर इतिहास पुरुष है। आज के वातावरण पर लिखी जा रही कहानियां कल इसी आधार पर इतिहास कहलाई जाए तो कोई आश्चर्य नहीं। कल अगर फिर कोई विशेष धारा से प्रेरित साहित्यकार पंजाब में हुई वारदात को हिन्दुओं के माथे मढ़ दे और उसे इतिहास बता दिया जाए तो भी कोई आश्चर्य नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"तमस" के लेखक भीष्म साहनी से ही सवाल है—क्या "तमस" उपन्यास के पात्र वास्तविक हैं ? क्या यह उपन्यास काल्पनिक पात्रों पर टिका हुआ नहीं है ? क्या उपन्यास की घटनाएं काल्पनिक नहीं हैं और यदि घटनाएं और पात्र काल्पनिक है तो उसे शाश्वत इतिहास कैसे माना लिया जाए और कैसे यह विश्वास कर लिया जाए कि लेखक ने अपने पूर्वग्रहों को घटनाओं की रचना और कथानक में इस्तेमाल नहीं किया होगा ? क्या "तमस" महज इसलिए इतिहास है कि उसके पात्र और घटनाएं देश की तत्कालीन परिस्थितियों से जुड़े हैं ? इतिहास की तिथियों से जुड़ी काल्पनिक घटनाओं को सत्य रूप में कैसे देखा जा सकता है ? यदि फिर भी देखा जा सकता है तो उपन्यास को इतिहास की पुस्तक क्यों नहीं कह दिया जाता ? क्यों उसे फिर अलग से एक नाम "उपन्यास" दिया जाता है। अतः वास्तविकता यही है कि "तमस" काल्पनिक उपन्यास पर आधारित है, इतिहास पर नहीं।

माना कि तमस की घटनाओं का भारत विभाजन से सीधा सम्बन्ध है और वह विभाजन की घटनाओं के मर्म को उभारता है, तब भी उसे ऐतिहासिक उपन्यास कहने से पहले यह देख लेना जरूरी है कि वह इतिहास सत्य के कितना समीप रहा है। यह साफ जाहिर होता है कि उपन्यासकार दंगों के पीछे हिन्दुओं को दोषी ठहराना चाहता है। भला कल की इस घटना को लोग गलत रूप में कैसे स्वीकार कर लें ? कौन नहीं जानता कि उस समय मुस्लिम लीग ने ही "सीधी कार्रवाई" (डायरेक्ट ऐक्शन) की घोषणा की थी ? उस कार्रवाई के पीछे सारी सोच अंग्रेजों की भले ही रही हो, पर इतना तो स्पष्ट है ही कि शुरुआत पहले मुस्लिम लीग की तरफ से ही हुई। लेकिन "तमस" में दिखाया गया इसके ठीक विपरीत। "हर-हर महादेव" के नारे के साथ कत्ल करते हुए दिखाए जाने में भीष्म साहनी को इतिहास का चित्रण नजर आता है और मुस्लिम लीग को आवाज इतिहास का कमजोर पृष्ठ। क्या "तमस" को एतिहासिक उपन्यास कहने का यही आधार है ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इससे भी आगे लेखक दिखाया ने है कि उस समय कम्युनिस्टों ने दंगों को शान्त करने का प्रयास किया। दूरदर्शन की बस यही कसर पूरी करनी थी। धारावाहिकों में पार्टी विशेष का प्रचार दूरदर्शन बगैर प्रायोजन की राशि लिये करने लगा है—विभिन्न दलों के लिए इससे बढ़कर खुशी की बात क्या हो सकती है ? लेकिन इससे पहले आयोजक पार्टी को अपने आपको इतिहास की किसी काल्पनिक घटना से जोड़ना होगा।

रहा अदालत का निर्णय उसकी तो मजबूरी है। उसे सबूत चाहिए। एक आदमी के खिलाफ दस गवाह खड़े किये कि अभियोग साबित हो जायेगा। सबूत नदारद तो खून का अपराधी भी साफ बरी हो सकता है। सही फैसला तो जनता की अदालत में होता है। लेकिन यहां एक बात सोचनीय है कि जिन बूढ़ी आंखों ने विभाजन के समय को अपनी आंखों से देखा है उन पर भले ही "तमस" सरीखे धारावाहिक का कोई असर न हो पर जिन युवाओं के गले "तमस" की घटनाएं इतिहास के नाम पर मढ़ी जा रही हैं क्या उनके मन पर गलत असर नहीं होगा ? माना कि "तमस" से साम्प्रदायिकता नहीं भड़केगी लेकिन क्या साम्प्रदायिक दंगों का भड़कना ही जनभावनाओं को ठेस लगानें का एक मात्र मापदण्ड है ? हो सकता है कि उसकी अभिव्यक्ति दंगों के रूप में न होकर दिलों में जहर पनपने के रूप में हो।

कुछ बुद्धिजीवियों का यह भी तर्क है कि भीष्म साहनी ने यह उपन्यास वर्षों पहले लिखा था। तब तो जनभावनाओं को ठेस नहीं लगी थी ? ऐसा कहने वालों को यह बता देना आवश्यक है कि अगर यह उपन्यास टी.वी. देखने की तरह लोगों पर लाद दिया जाता तो शायद ठेस का पता चलता। जिस देश के टी.वी. दर्शक के पास दूसरा चैनल तक नहीं है कि वे नापंद कार्यक्रमों को बदल दें, वैसे देश में ऐसे धारावाहिकों का प्रसारण लादना ही तो है। और गलत तथ्यों को लादने से क्या भावनाओं पर आघात नहीं होता ? किसी जाति या वर्ग की छवि धूमिल करने के लिए अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खोखला तर्क देने वाले बद ा नरिक के "डेकेन हेराल्ड" में छपी कहानी के बाद ए दंगों की बात भूल गए ? वह कहानी भी तो पहले एक मलयालम दैनिक में छप चुकी थी । "डेकेन हेराल्ड" एक सशक्त माध्यम था और उससे भी सशक्त माध्यम है दूरदशन। उपन्यास और दूरदर्शन के धारा पाठक की प्रतिक्रिया में तो फर्क होगा ही।

दूरदर्शन के जो नौकरशाह हर हिंदू विरोधी बात को धर्मनिरपेक्ष मान लेते हैं, उन्हें "तमस" भी धर्मनिरपेक्ष ही नजर आया और विरोध करने वाले साम्प्रदायिक लगे। ऐसे मे दो निष्कर्ण निकाले जा सकते हैं। एक तो यह है कि दूरदर्शन अधिकारियों के मन में धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा ही स्पष्ट नहीं है। अथवा यह है कि दूरदर्शन पर एक विशेष वर्ग का कब्जा हो गया है। एक तमस है जो दूरदर्शन पर छा गया है।

ओ अन्वेषक

ओ अन्वेषक, क्या खोज रहे हो, जीवन प्रहरों में,
शान्ति-सत्य या आनन्द तृप्ति की धारा
या लहरों पर भदनों के सिंहासन सजा रहे हो ?
अन्तर की पीड़ा सिहरन और वेदना मिट सकती है ?
विकट प्रश्न का उत्तर अभी नही मिल पाया.
उसके आदि-अन्त का पता लगाने दौड़ रहे हो ?
ठहरो, पल भर सोचो, जीवन क्या है खाना पीना |
और नृत्य यह या मृत्यु का आलिंगन ?
कुछ देना-पाना या खो देना
'प्राण' किसे कहते हैं यह बतला दो,
सब कुछ स्वय तुम्हें मिल जाए !।

—स्व. पडित भारतेन्द्र नाथ (महात्मा वेदभिक्षु:)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म प्रचार यज्ञ में प्राप्त आहुतियां

सर्वश्री आर्य समाज काकड़वाड़ी बम्बई 150

इन्द्रपुरी मोगा 101

आगम राम स्वामी डाकरा कोलियरी 100

सर्वश्री राजमाता साहिबा आगरा 80 रु., डा. सुरेन्द्रसिंह सतना 65 रु., रवीन्द्र सिंह जी महबूब नगर 40 रु, कुमारी असना पौडी गढ़वाल 35 रु., हीरा लाल राम जी पोरबन्दर 35 रु., भागी लाल नथमल आर्य जोधपुर 16 रु., सिपाही राजवीर सिंह अम्बाला छावनी 15 रु, देवराज शर्मा जी मुजफ्फरनगर 15., सत्यवती शर्मा बरेली 15 रु., हरिसिंह आर्य सहारनपुर 15 रु.।

50 रु. दान देने वाले

सर्वश्री वगडू लाल जी मन्दसौर, गुरुदेव सिंह धीमान् होशियारपुर, हरिभाई जीवा कोटिया पोरबन्दर।

25 रु. दान देने वाले

सर्वश्री सत्यनारायण चौबे बनारस, वासुदेव शर्मा शिमला, विशाल भारत बुक एजेंसी मद्रास, लाल जी पढूालम पोरबन्दर, राम जी दास जी पोरबन्दर, पी. आर्यानन्द जी मद्रास।

21 रु. दान देने वाले

सर्वश्री राम बहादुर आर्य इलाहाबाद, वीरेन्द्र कुमार आजमगढ़, राम० जी दास जयपुर, लक्ष्मी महादेवी बाराबंकी।

20 रु. दान देने वाली

सर्वश्री रघुनाथ प्रसाद वर्मा पटना, भृगुनाथ त्रिपाठी देवरिया, राम नगीन सिंह बम्बई, सिपाही राजवीर सिंह अम्बाला छावनी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

11 रु. दान देने वाले

सर्वश्री बंगाली ठाकुर समस्तीपुर, मोहन दास गुप्त गाजियाबाद, रामदेव आर्य लखनऊ।

10 रु. दान देने वाले

सर्वश्री अभय सिंह आर्य आगरा, धर्मेन्द्र सिंह लोधी कोटा, नंपाल सिंह नालन्दा, तिलक सिंह यादवेंदु हरदोई, मेघनाथ आर्य फर्रुखाबाद, ज्वाला प्रसाद आर्य कानपुर, इन्द्र पुरी मोगा, डी. बी. रोदरमाल, आ. स. पोरबन्दर।

सभी दानदाताओं का धन्यवाद।

राकेशरानी

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

नई दिल्ली–5

मानव को चाहिए कि वह प्रतिदिन आत्म-निरीक्षण करे। रात्रि में सोते समय सर्वप्रथम प्रभु का ध्यान करे। तदुपरांत अपने दिन भर के क्रिया-कलाप पर दृष्टिपात कर यह जाने कि आज उसने दिन भर में कौन कौन से कार्य तुल्य, कितने राक्षस के सामान, कितने सामान्य मानव के तुल्य और कितने आदर्श व्यक्ति के समान किए हैं। इस प्रकार वह अपनी त्रुटियों को सुधार कर श्रेष्ठ एवं उतम जीवन को राह पर बढ़ सकता है।

× × ×

जो स्वयं उठने का प्रयत्न करता उसे ही दूसरों का सहयोग भी प्राप्त होता है। जो केवल आलस के वशीभूत होकर उठने का ही प्रयास नहीं करता उसका कभी साथ छोड जाते हैं।

× × ×

यदि आप कोई बात गुप्त रखना चाहते हैं तो उसे दूसरों पर कदापि प्रकट न करें. क्योंकि नीति का वचन है कि 6 कानों में पड़ी बात कभी नहीं छुप सकती; वह प्रकट हो ही जाती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हम बन्धनमुक्त कैसे हों ?

– पंडिता राकेशरानी

आज हम सबसे पहले एक वेद मन्त्र का पाठ करें –

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुः
अथो दिव्यः सः सुपर्णो गरुत्मान् ।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति
अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ।।

यह ऋग्वेद के मंडल 1 सूक्त 164 का 46वां मंत्र है । इसका सीधा-सा अर्थ है कि—

सत्य वस्तु एक ही है, पर उस एक ही सत्य वस्तु को ज्ञानी लोग अनेक नामों से पुकारते हैं । उसी को इन्द्र, अग्नि, यम, मित्र, वरुण, सुपर्ण, मातरिश्वा नामों से हम जानते हैं ।

वह एक है । प्रभु एक है, अज्ञानी उसे भिन्न-भिन्न बताते हैं । ज्ञानी उसकी सच्चा स्वरूप जान उससे मिलने का मार्ग प्रशस्त करते हैं ।

वस्तुतः ज्ञानी, विद्वान् वही है, जो प्रभु को जानता है, जिसने उसे देखा है । जो उससे मिला नहीं, जिसने उसके दर्शन नहीं किए, वह कितनी भी डिग्रियां प्राप्त कर ले, धर्म की दृष्टि से ज्ञानी नहीं है ।

ज्ञान और विद्या का लक्ष्य है उसे जानना, उसे देखना उससे मिलना, और उस धन का संग्रह करना, जिसे पाकर प्रभु से मिलने की राह सहल बनती है ।

प्रभु से मिलने का मार्ग बताते हुए वेद ने कहा है—

उत्तमं पाशं अस्मत् उत् श्रथाय ।
मध्यमं पाशं अस्मत् वि श्रथाय ।
अधमं पाशं अस्मत् अव श्रथाय ।

उत्तम सत्य ज्ञान प्राप्त करके बुद्धि के पाशों को ढीला करो । उत्तम विचारों से मन के और उत्तम आचारों से शरीर के बन्धन दूर करो । ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धन : एक सन्तुलित दृष्टिकोण-1

— पण्डित नरदेव वेदालंकार

यह सच है कि धन में शक्ति है। जो इसका दुरुपयोग करते हैं, वे कष्ट उठाते हैं। किसी भी उपक्रम में सफलता प्राप्त करने के लिए हमें पर्याप्त धन की आवश्यकता होती है।

जब हमारे शास्त्र कहते हैं कि हमें धन का त्याग करना चाहिए, तब वस्तुत: उनका आशय क्या होता है ? उनका आशय यह नहीं होता कि हम धनोपार्जन न करें। उनका आशय तो यह होता है कि हम धन के दास न बनें।

दान और कल्याणकारी कार्यों के क्षेत्र में आने वाले जिन लोगों ने निःस्वार्थ सेवा का व्रत ले रखा होता है, धन के अभाव में वे सफल नहीं हो सकते धन के बिना परिवारों, समाजों कल्याणकारी संगठनों, राज्य—मतलब यह कि किसी का भी काम नहीं चल सकता।

वैदिक शास्त्रों की व्यवस्था के अनुसार वैश्य का कर्त्तव्य है कि वह अधिकाधिक धन कमाए। वैश्य उसे कहते हैं, जो धन के उत्पादन और वितरण में पहल करे। वाणिज्य, उद्योग, कृषि, पशुपालन आदि में लगे लोग वैश्य हैं। ये सब लोग धन के उत्पादन में सहायक हैं। यदि इस वर्ग के लोग अपने कर्त्तव्य का पालन न करेंगे तो कोई भी राष्ट्र समृद्ध कैसे होगा ? उस स्थिति में पूरा देश निर्धन हो जायेगा और अन्तत: नष्ट हो जायेगा। धन बुरी चीज नहीं। यह प्रगति और समृद्धि का साधन है। जैसा हमने ऊपर लिखा— धन में शक्ति है।

धन पैदा करना और उसके बाद उसका मालिक बन बैठना ये दो अलग अलग बातें हैं। यदि हम धन जमा करने के बाद इसे भोग विलास पर खर्च करते हैं—मौज-मेले पर खर्च करते हैं तो इससे हमारा अभिमान बढ़ेगा— हमारा अहम् पुष्ट होगा। ऐसे धन से समाज को कष्ट-क्लेश आयेंगे। जब कोई व्यक्ति बेईमानी से धन कमाता है ताकि वह अधिक ऊंची स्थिति में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पहुंचे—उसकी शान बढ़े। तब वह ईमानदारी और सच्चाई भूल जाता है। इस प्रकार घर में लाया गया धन पापपूर्ण धन कहलाता है, जिससे सम्बन्धित व्यक्ति को कभी भी शान्ति और सुख की प्राप्ति न होगी।"

बेईमानी से धन कमाने के लिए बाइबल कहती है कि 'ऊंट के लिए सुई के छेद में से गुजर जाना अधिक सरल है अपेक्षाकृत किसी धनी के प्रभु के साम्राज्य में प्रविष्ट होने के।"

संघर्ष कब प्रारम्भ होता है ?

हर आदमी धन पैदा नहीं कर सकता। हर आदमी में अलग-अलग तरह की प्रतिभा होती है। कुछ लोगों का दिमाग तेज होता है—औसत आदमी के दिमाग से अधिक तेज, जबकि कुछ अन्य लोगों में संगठन और नेतृत्व की योग्यता होती है। इसी प्रकार कुछ लोग वाणिज्य-व्यवसाय के विशेषज्ञ होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को राष्ट्र के हित में अपनी कुशलता बढ़ाने का अवसर मिलना चाहिए। जो वाणिज्य और उद्योग में लगे हैं, और धन पैदा करते हैं, उन्हें अपनी प्रतिभा के पूरे इस्तेमाल द्वारा सारे देश की प्रगति और समृद्धि के लिए अधिकाधिक श्रम करने के लिए अधिकाधिक प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

जिनमें धन कमाने की क्षमता और प्रतिभा है, उनका कर्त्तव्य है कि वे अधिकाधिक धन कमायें और उससे सब को लाभ पहुंचायें। टकराव तब होता है, जब दूसरे का ध्यान रखने और दूसरों को भी धन देने का सिद्धान्त भुला दिया जाता है और लोभ व स्वार्थ मनुष्य के मन पर हावी हो जाते हैं। कारण स्पष्ट है—तब मनुष्य जनहित के लिए कार्य नहीं कर रहा होता। तब मनुष्य अपने लिए अथवा सीमित वर्ग के लिए धन कमा रहा होता है।

ऐसे लोग धन का इस्तेमाल अपने क्षुद्र स्वार्थों के लिए करते हैं। वे अपना दर्जा और रुतबा बढ़ाने के लिए झूठा दिखावा करते हैं। दूसरे लोग भूखों मर रहे होते हैं और ऐसे लोग मौज-मेला कर रहे होते हैं। इससे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाज में असन्तोष और रोष फैलता है । इसी सामाजिक टकराव से वर्ग-संघर्ष जन्म लेता है।

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः

प्रश्न उपनिषद् में इस बात को बहुत ही सुन्दर ढंग से समझाया गया है कि मनुष्य समाज और राष्ट्र के लिए अपने धन का उपयोग कैसे करे ? वहां पांच प्राणों की चर्चा है, जिनका हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनमें से तीसरा प्राण समान कहलाता है, जो नाभि और नाड़ियों के समीप है। उपनिषद् कहती है कि इसे समान नाम इसलिए दिया गया है, क्योंकि मध्ये तु समान एष ह्येतद् हुतं अन्नं समानं नयति·प्रश्न उपनिषद 3/4 हम जो कुछ खाते हैं, वह पेट में जाता है, जहां यह समान प्राण की सहायता से पचाया जाता है । इसके बाद पचाये गये अन्न को शरीर के विभिन्न भागों की आवश्यकता के अनुसार यथायोग्य ढंग से बांट दिया जाता है।

उदाहरणार्थ यदि कोई व्यक्ति इसलिए अधिक खा जाता है कि भोजन स्वादिष्ट था तो उसे तकलीफ होगी, क्योंकि पेट में जमा अन्न पचेगा नहीं और पेट उसे अंगीकार नहीं करेगा.।

इससे शरीर को पीड़ा होगी। फोड़े-फुंसियां होंगी अलसर भी हो सकता है। समान प्राण शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अन्न को सारे शरीर में अनुपात से बांट देता है। किसी भी भाग को आवश्यकता से रत्ती भर भी कम या अधिक नहीं मिलना चाहिये। इसी प्रकार धन कमाने वाले को यह अधिकार नहीं कि वह धन कमाकर जमा करता जाये। किसी को भी आवश्यकता से कम या अधिक नहीं मिलना चाहिये । जब यह नियम अपना लिया जायेगा, तब कोई व्यक्ति धन जमा करके उसे अनावश्यक भोग-विलास और मौज-मेलों पर व्यय न करेगा। तब कोई व्यक्ति भूखा रहकर नहीं मरेगा। इस नियम के न अपनाये जाने पर हमारा समाज रोगों से पीड़ित होकर नष्ट हो जायेगा। ऐसे समाज में चोर, बदमाश और अन्य प्रकार के बुरे लोग जन्म लेंगे और जनता के लिए शान्तिपूर्वक रहना कठिन हो जायेगा। तब लोग एक-दूसरे का गला काटेंगे। एक देश दूसरे देश पर आक्रमण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रेगा। असन्तोष होगा, शत्रुता होगी और समाज स्वस्थ न रह सकेगा।

ऋग्वेद का मन्त्र है—

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी।।
(ऋग्वेद 10-117-6)

इसका भावार्थ यह है कि जिस धनी व्यक्ति ने अपने धन का उपयोग अच्छे कामों के लिए नहीं किया—अपने साथियों को नहीं दिया, केवल अपना ही पेट भरा, वह स्वार्थी है और उसने पाप का अन्न कमाया है। जो व्यक्ति धन को बांटता नहीं और उसका सदुपयोग नहीं करता, उसका धन निरर्थक और मूल्यहीन हो जाता है। अन्ततः उसका जमा किया हुआ धन उसके पतन और नाश का कारण बनता है।

लक्ष्मी : धन की देवी

हमारे शास्त्रों के अनुसार इस संसार का नियन्त्रण करने वाली उच्चतम सत्ता परमेश्वर कहलाती है। परमात्मा तो एक है, लेकिन उसकी शक्तियों को देखते हुए हम उसकी कल्पना तीन भिन्न-भिन्न-भिन्न रूपों में करते हैं। सृजन करने वाली शक्ति का नाम ब्रह्म है। नियन्त्रण और धारण करने वाली शक्ति का नाम विष्णु है। प्रलय करने वाली शक्ति का नाम रुद्र अथवा शिव है। ये अपनी पृथक्-पृथक् शक्ति और ऊर्जा से काम करने वाले पृथक्-पृथक् भगवान् नहीं। जैसा हमने ऊपर लिखा, भगवान् तो एक ही है, हम उसकी कल्पना भिन्न-भिन्न रूपों में करते हैं। संसार की व्यवस्था और नियन्त्रण करने वाली शक्ति का नाम विष्णु है। हमारे घरों में जो हमारी देखभाल करे और हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करे, उसे गृहिणी कहते हैं। कर्त्तव्यों में समानता के कारण हमने कल्पना की है कि विष्णु की धर्म-पत्नी लक्ष्मी है। लक्ष्मी धन की देवी है।

क्योंकि धन के बिना जीवन की आवश्यकतायें पूर्ण करना सम्भव नहीं, इसलिए हम कल्पना में लक्ष्मी का सम्बन्ध विष्णु से जोड़ते हैं। परिवार का पालन-पोषण करना गृहिणी का कर्त्तव्य है। पति की सेवा करने वाली धर्म-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पत्नी किसी बच्चे की माता भी हो सकती है। इसलिए विष्णु की धर्मपत्नी होने के साथ-साथ लक्ष्मी संसार की माता भी है। माता बहुत प्रेम और ध्यान से अपने बच्चों का पालन-पोषण करती है। इसीलिए हम बोलचाल में धर्मपत्नी को लक्ष्मी कहते हैं। इसी कारण लक्ष्मी को बहुत पवित्र और प्रमुख स्थान दिया जाता है। जब लक्ष्मी हमारे घर में प्रविष्ट हो, तब उसे शुद्ध और स्वच्छ होना चाहिये। हमें धन का उपार्जन गलत तरीकों और बेईमानी से नहीं करना चाहिये।

खून-पसीने से कमाई रोटी प्रसन्नता देती है

कठोर परिश्रम और ईमानदारी से मिला धन ही शान्ति और प्रसन्नता देता है। जो लोग परिश्रम से धन नहीं कमाते अपितु दूसरों को गिरा कर धनोपार्जन करते है, वे कभी सुखी न होंगे। ऐसे लोग बड़ी मात्रा में भौतिक पदार्थ भले ही जमा कर लें, लेकिन वे चैन की नींद न सो पायेंगे। उनकी चिन्तायें बढ़ती जायेंगी। रोग उनके शरीर को घेर लेंगे। आध्यात्मिक तौर पर वे बौने हो जायेंगे। इसलिए कोई पेशकश कितनी लुभावनी क्यों न हो उसके शिकार मत होइये। धन राशि कमाने के लिए लोग जुआ खेलते हैं, लाटरियों के टिकट खरीदते हैं और घुड़दौड़ पर शर्तें लगाते हैं। इससे वे अपने फैलाये जाल में स्वयं ही फंस जाते हैं। याद रखिये कि ऐसे कामों में हजारों लोगों का कमाया हुआ धन कुछ ही लोगों की जेब में चला जाता है।

यह धन किसी कम्पनी अथवा ग्रुप द्वारा अदा नहीं किया जाता। यह उन हजारों लोगों से निचोड़ा जाता है, जो इस जाल में फंस गये होते हैं। ऐसा धन अधिक समय तक किसी के पास नहीं रहता अपितु अनेक समस्यायें पैदा करता हैं। इसलिए हमें इस जाल में फंस कर धन बटोरने की कोशिश नहीं करनी चाहिये। जिस सरकारों को अपनी जनता के कल्याण की चिन्ता है, उन्हें ऐसे अवांछनीय और अवैतिक धनोपार्जन के उपायों को प्रोत्साहित नहीं करना चाहिये। वेद की शिक्षा है –

अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व ।
वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

माता विद्यावती शारदा का एक पत्र भगवान् के नाम

पत्र अपने दिल की बात प्रकट करने का बहुत अच्छा साधन हैं। निजी पत्र लिखते समय मन में किसी प्रकार का संकोच अथवा दुराव नहीं होता। एकान्त में खुलकर बातें होती हैं। भारतेन्द्र नाथ जी की माता जी शिशुओं के नाम तो पत्र लिखती ही थीं, परमात्मा को सम्बोधित करके भी पत्र लिखा करती थीं। नीचे उनका ऐसा ही एक पत्र दिया जा रहा है, जो उन्होंने पगली नाम से भगवान् को लिखा है।

लीजिये, पढ़िये यह पत्र—

ओ३म्

आर्य कन्या महाविद्यालय
करौली बाग, बड़ोदा
5-3-36 (बृहस्पतिवार)

मेरे एक मात्र सच्चे सहायक प्रभो! आज सारा विद्यालय "धर्मात्मा" फिल्म देखने गया। किन्तु मैं—अभागी मैं—ही नहीं गई। क्यों? क्या तुम नहीं जानते हो? तुम तो अन्तर्यामी हो। मैं इसलिए नहीं गई कि अपने प्यारे परमात्मा से मिलने का इससे अच्छा सुयोग कब मिलेगा। जब से यहां आई हूं, कार्यों में व्यस्त होने से एक दिन भी तेरे पास बैठ—तेरी अमृतमयी गोद में बैठ—प्रेम और श्रद्धा के आंसू न बहा सकी। कई दिनों से तीव्र वेदना संचित हो रही थी। बहुत चाहती थी कि कहीं अवकाश मिले। किसी एकान्त प्रदेश में बैठकर मैं तेरा आह्वान करूं। तू मेरे पास बैठे और प्यारे, मैं अविरल अश्रुओं से तेरा स्वागत करूं। परन्तु देव, मेरा ऐसा भाग्य कहां। आज इसीलिए केवल तेरे ही मिलन की तीव्र लालसा लिये मैंने यह सुअवसर खोना उचित न समझा। मेरे हृदय देश के एक मात्र आधार! मैंने आज चारों ओर से किवाड़ बन्द करके तुम्हें पुकारा—बार-बार पुकारा, परन्तु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुम मेरे पास नहीं आये। क्या मुझे खिझाने, चिढ़ाने और रुलाने के लि किसी कोने में छिप गये हो ? नाथ ! ऐसा मत करो। यह सत्य है कि से मैं यहां आई हूं, मुझे तुम से मिलने का, तुम्हारे साथ बातें करने का बहु ही कम अवकाश मिलता है। प्रियतम, तुम हैरान होगे कि तुम्हारी अपेक्ष रात्रि को निद्रा देवी का गाढ़ आलिंगन हो जाता है। सेवा की इसी त्रुटि मेरी इसी स्वार्थपरायणता से—क्या तुम मुझसे इतने नाराज हो गये कि अब मेरे बार-बार बुलाने पर भी मेरी आवाज पर ध्यान ही नहीं देते प्रियतम, तुम्हीं बताओ, तुम तो न्यायी हो। क्या इसमें मेरा कोई दोष है ! तुम्हारी आज्ञा का पालन करने में लगी हूं। तुम्हारे ही प्रदान किये शिशुओं की सेवा के निमित्त यह जीवन बनाया है प्रभो ! ऐसी अवस्थामें मुझसे नाराज होना क्या तुम्हारे नाम पर बट्टा नहीं ? मेरे जीवनाधार, आओ, एक बार आओ और मुझे धैर्य बंधाओ। मैं तुम्हें भूली नहीं हूं। भूल भी नहीं सकूंगी मुझ पर तुम्हारे अनन्त उपकार हैं। तुम मुझे कितना प्यार करते आये हो क्या यह भुलाने योग्य बात है ? नाथ, तुम्हारा प्रेम, तुम्हारी रक्षा भावना तुम्हारी असीम स्मृतियां स्मरण करते हो मेरे हृदय में एक शक्तिमयी आशा का संचार हो उठता है। नाथ, मेरे तो बस तुम्हीं हो। मुझे तुम्हारे पास बैठने का समय नहीं मिलता। यह भी तुम्हारी ही इच्छा है। तुम्हारे ही इशारे पर मैं यह नाच रही हूं। परन्तु यहां मैं शान्त नहीं हूं। मैं क्यों शांत नहीं हूं ? प्यारे प्रभो, यह तुमसे छिपा नहीं। बहुत इच्छा होते हुए भी, बहुत-सी वियोगवह्नि जलती रहने पर भी मैं तुम्हारे चरणारविन्दों में बैठ श्रद्धांजलि देने का समय नहीं निकल पाती। प्यारे प्रभो, तू ही मुझे इस परदेश में—इस सर्वथा विपरीत वायुमंडल में प्रभो, सांत्वना दे, धैर्य दे। प्रभो, तेरे सिवाय इस संसार में मेरा कोई नहीं। ऐ सर्वशक्तिमन् दयालो, मेरे हृदय में शक्ति प्रदान करो कि मैं अपने स्वार्थी स्वजनों को भूल जाऊं। एक बार ऐसी दिव्य ज्योति प्रकट करो कि मैं कठोर से कठोर समय का हंस-हंसकर सामना करूं। प्रियतम, एक बार मुझे दर्शन की झलक दिखा, जिससे मेरे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सब पाप-ताप शान्त हो जायें। क्रोध, लोभ और मोह की पीड़ाओं से त्रस्त न होऊं। ऐ अनाथों के नाथ, ऐसी शक्ति दो कि संसार के भय और प्रलोभन मुझे सन्मार्ग से विचलित न करें। दयालो, शक्ति दो कि जब-जब एकान्त में जाऊं, तेरे ही राग गाऊं। मेरे जीवन नाथ, कहां हो, आओ! ओह, संसार तो मेले-तमाशे पर मरता है, लेकिन मैं तो केवल हृदय रंगमंच पर इस विचित्र सृष्टि का नाटक तेरे ही साथ बैठकर देखना चाहती हूं, मेरी इच्छा है कि अब एक बार तू मुझे मिले और मैं पूरी शक्ति से तुझे रोके रखूं। इस बार अपने पास से भागने न दूं। प्रियतम, आ और जल्दी आ, तेरी ही प्रतीक्षा में बाल्यकाल बीत गया, यौवन चला गया, सिर के बाल सफेद होने लगे हैं। सच बता, तू कब मुझे अपनी बनायेगा? प्रभो, कब अपने चरणों में स्थान दोगे? कब मुझसे क्षणमात्र भी वियुक्त न होगे? देवाधिदेव, मैं केवल तुझे चाहती हूं—केवल तुझे। अन्य सभी वरदान तो तूने मुझे दे रखे हैं। बस, अब अपना सम्मिलन—अटूट सम्बन्ध—प्रदान करो। यही चाहती हूं। बस, केवल यही।

तुम्हारी ही प्रेमरत
पगली

अध्यापक (छात्र से) "मनु, तुमने भूगोल के प्रश्न याद नहीं किए, तुम परीक्षा में क्या करोगे?"

मनु: "सर मैं बहुत परेशान हूं। पिता जी कह रहे थे कि दुनिया का नक्शा बदल रहा है—तो मैं याद क्या करता?

× × ×

मालिक बहुत कंजूस था। एक दिन उसे उत्तेजित करने के लिए नौकर ने एक मनगढ़न्त बात कही, "हजूर, मैंने कल सपने में देखा कि आपने मुझे पच्चीस रुपए पेशगी दिए हैं।"

"ठीक है, ठीक है। अगले महीने तनख्वाह में से कट जायेंगे।" मालिक ने तपाक से उत्तर दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थात् जुआ मत खेलो परिश्रम से और खेती करके धन कमाओ। इससे जो धन मिले, उससे सन्तुष्ट रहो। सन्तोष प्रसन्नता का आधार है, जबकि लोभ दु:ख और ईर्षा को जन्म देता है।

हमारे शास्त्र कहते हैं—

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुंक्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति॥

अर्थात् तीन रास्तों से धन हमारे पास से जाता है—दान, भोग और नाश। जो न देता है और न भोग करता है, उसकी तीसरी गति होती है।

कोई व्यक्ति नहीं चाहता कि चोर उसका धन चुरायें अथवा लापरवाही से धन नष्ट हो जाये। सब यही चाहते हैं कि उनके धन का सदुपयोग हो। इसके दो ही रास्ते हैं—दान अथवा भोग।

मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कठोर परिश्रम करता है ताकि वह सुख-शान्ति और चैन प्राप्त कर सके। वह चाहता है कि उसके जीवन की आवश्यकतायें पूर्ण हों। धन आवश्यकता तो सदा ही रहती है—अपने हित के लिए और अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए। भोजन, वस्त्र और आवास बुनियादी और प्रारम्भिक आवश्यकतायें हैं। इसके बाद हमें शिक्षा, सुरक्षा और चिकित्सा के लिए धन की आवश्यकता होती है।

मनुष्य की बुनियादी आवश्यकतायें अवश्य पूरी की जाने चाहिए। उसके जीवन में शान्ति और प्रसन्नता होनी चाहिये। लेकिन गरिमापूर्वक जीवन यापन के लिए उसे यह भी पता होना चाहिये कि उसकी बुनियादी आवश्यकतायें क्या है?

डाक्टर: 'क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि मेरे क्लिनिक का समय 8 से 10 बजे तक है?"

मरीज: "जी मुझे तो मालुम है, पर यह बात उस कुत्ते को नहीं मालुम थी, जिसने मुझे काटा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

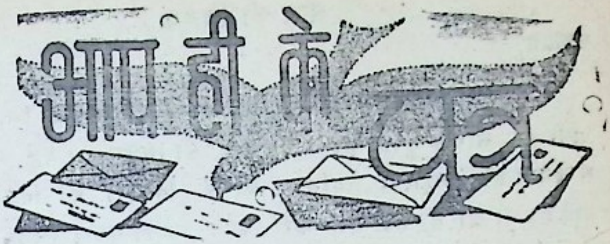

महात्मा वेदभिक्षु: की उपलब्धियां

बहन राकेशरानी जी, नमस्ते।

जन ज्ञान का मार्च 1984 का महात्मा वेद भिक्षु: स्मृति अंक पढ़ने को मिला। यह पत्रिका मुझे एक आर्य बहन ने भारत से भेजी थी। पुरानी होते हुए भी यह पत्रिका मुझे नई लगती थी, क्योंकि यहां ऐसी धार्मिक पुस्तकों का बहुत अभाव है। बाहर के पृष्ठ पर एक महात्मा का चित्र देख कर विस्मय बढ़ गया तथा कई बार पुस्तक खोलकर देखने का साहस किया —पढ़ने का नहीं। कोई सम्पादक एक महात्मा का चित्र आवरण पृष्ठ पर छापता है तो निश्चय ही वह बहुत साहसी और पक्का देशभक्त ही हो सकता है।

पूरी पत्रिका पढ़ने से एक प्रकार का RefreSher Course हो गया तथा वेद भिक्षु: जी की मृत्यु का दुःखद समाचार दो वर्ष देर से मिला। इसे अपना दुर्भाग्य ही कहूंगा।

मुझे अच्छी प्रकार याद है कि आर्य अम्बाला छावनी से निकलता था सम्पादक महात्मा वेद भिक्षु: (उस समय पंडित भारतेन्द्रनाथ) थे।

समाज सेवा का जो कार्य महात्मा वेद भिक्षु: जी अकेले कर गए हैं, किसी बड़ी से बड़ी संस्था से भी उसकी आशा नहीं की जा सकती।

मदनलाल गुप्त
566 N. Marengo 12 Pasadena U.S.A.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्य की विजय

महोदय,

जनज्ञान के पिछले अंक से यह जानकर हर्ष हुआ कि पंडित राकेश-रानी जी आरोप मुक्त हुई । यह सत्य की विजय है । यह महर्षि दयानन्द सरस्वती और महात्मा वेदभिक्षु: जी के विचारों की विजय है । ईश्वर राकेशरानी जी की सदा रक्षा करे । आप सबको बधाई । आप सब यशस्वी हों । मेरी मंगल कामनयें सदा आपके साथ हैं ।

मनमाड़ — लक्ष्मणराम जी पगारे

हम सहयोग देते रहेंगे

मान्यवर महोदया, नमस्ते ।

आप हिन्दू समाज और भारत देश के लिए जो त्याग और बलिदान कर रही हैं, वह अनुकरणीय है । आशा है कि आप इसी प्रकार देश और समाज को जगाती रहेंगी । हम आपको यथाशक्ति सहयोग देते रहेंगे ।

धामपुर (बिजनौर) — रमेशचन्द्र वर्मा

आर्यसमाज अटवा अलीमर्दानपुर का उत्सव

हरदोई । पहली फरवरी से तीन फरवरी तक समीपवर्ती ग्राम अटवा अलीमर्दानपुर में, आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया । श्री जयप्रकाश आर्य, श्री रामवली (कानपुर) श्री महावीर प्रसाद (सीतापुर) और श्री राकेश आर्य (बिजनौर) ने अपने विचार प्रकट किये ।

आर्यसमाज रामपुरा (कोटा) का उत्सव

कोटा । आर्यसमाज रामपुरा का 28 वां वार्षिकोत्सव 23 फरवरी से 29 फरवरी तक धूमधाम से मनाया गया । उत्सव पर मथुरा के श्री प्रेमभिक्षु, अजमेर के श्री धर्मवीर, दिल्ली के भजनोपदेशक श्री सत्यपाल आदि ने अपने विचार प्रकट किये ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पत्रकारिता : भारतेन्द्रजी से मेरे परिचय का सेतु

—ब्रह्मदत्त स्नातक

भारतवर्ष के इतिहास में सन् 1950 का महत्त्व राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में अनुपम है, क्योंकि शताब्दियों के बाद भारत भूमि पर गणतन्त्र की स्थापना हुई। व्यक्तिगत दृष्टि से मेरे लिए भी इस वर्ष में नये युग का प्रवेश माना जाना चाहिये। इसी वर्ष में मैं देश की राजधानी दिल्ली में सर्व-प्रथम सम्पादकीय जीवन में उतरा था। तभी साप्ताहिक पुण्य भूमि का न केवल सम्पादन अपितु समारम्भ मेरे हाथों से हुआ। यों इससे पूर्व सन् 1937 से ही कविता और कहानी के क्षेत्रों को छोड़कर चांद, सरस्वती, सुधा, कर्मयोगी आदि मासिक, साप्ताहिक व दैनिक पत्रों में मेरी रचनायें प्रकाशित होती रहीं, लेकिन सम्पादन के इस नये क्षेत्र में प्रवेश का मुझे अनुभव न था। उस काल में पत्रकारिता के प्रशिक्षण के लिए आजकल की भांति संस्था अथवा महाविद्यालय नहीं थे।

उस काल में घोर श्रम से साप्ताहिक पुण्यभूमि का कार्य मुझे निभाना पड़ा। तत्कालीन बड़े और छोटे कहे जाने वाले अनेक शुभ चिन्तकों ने मुझे अपनी अमूल्य सम्मतियां और प्रेरणाप्रद योगदान दिया। उन दिनों पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय सदृश विचारकों एवं आर्यसमाजी नेताओं ने समय-समय पर अपनी रचनाओं से पुण्यभूमि को चार चांद लगाये थे।

उन दृष्ट और अदृष्ट महानुभावों के अतिरिक्त, जिनकी सूची बहुत लम्बी है, एक दम्पती जिसने पत्र के पाठकों को अपनी रचनाओं से आकृष्ट किया, वह उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के बीघापुर वैदिकाश्रम के निवासी स्वर्गीय पंडित भारतेन्द्र नाथ शुक्ल (बाद में उन्होंने यह जातिसूचक पुछल्ला हटा दिया था) और उनकी सहधर्मिणी पंडिता राकेशरानी, थीं। मेरे लिए बीघा-पुर सदृश लगभग अज्ञात स्थान से जो रचनायें पत्र में प्रकाशनार्थ आती थीं,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वे अतीव आशाजनक और प्रेरणाप्रद प्रतीत होने के कारण सहसा मेरा ध्यान खींच लेती थीं। जैसा मैं ऊपर लिख चुका हूं, रचनावैविध्य की दृष्टि से मैं काव्य रचना के क्षेत्र में अछूता रहा। फिर भी उक्त रचनाधर्मियों को मैं समय-समय पर अपने सुझाव देता रहा। इस काल के बाद मैं जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी आता और जाता रहा, लेकिन आनुषंगिक रूप से लेखन, पत्रकारिता और सम्पादन आज भी मेरे जीवन से जुड़े हुए हैं। मुझे यह लिखते हुए हार्दिक प्रसन्नता होती है कि बीघापुर के जिन रचनाधर्मी दम्पती का मेरे साथ पत्रव्यवहार से सम्पर्क हुआ, वे अपने जीवन में यशस्वी लेखक, प्रखर वक्ता और अपने ढंग के निराले प्रकाशक बने।

पंडित भारतेन्द्रनाथ अपनी कर्मठता से बीघापुर से बरेली, अम्बाला छावनी, लखनऊ और अन्त में दिल्ली आकर अपने स्वप्नों को अविरत बढ़ाते रहे। उन्होंने दैनिक "आर्यमित्र" और कई साप्ताहिक एवं मासिक पत्रों में सम्पादन और प्रकाशन का काम अपने जीवन में बहुत सशक्तता से किया। विनोद में मैं उन्हें प्राय: कहता था कि "गुरु गुड़ रहे और चेला शक्कर हो गये।" पं. भारतेन्द्रनाथ मुझसे उम्र में लगभग दस वर्ष छोटे थे। उनकी निश्छल विनम्रता और श्रेष्ठजनोचित प्रगल्भता—दोनों की ही मुझे अनुभूति होती रही। वे अत्यन्त उच्चकोटि के लेखक, संगठक, मंच पर धुआंधार भाषण देने वाले रहे। यदि वे आज इस साठवें जन्म दिवस पर जीवित होते तो मैं 'साठा सो पाठा' कहकर अपना विनोदपूर्ण आशीर्वाद उन्हें देता, लेकिन इस वेला में महाकवि कालिदास रचित रघुवंश की इस उक्ति को उद्धृत करके सन्तोष कर लेता हूं—

मरणं प्रकृतिः शरीरिणां
विकृतिर्जीवनमुच्यते बुधैः।
क्षणमप्यवतिष्ठते श्वसन्
यदि जन्तुर्ननु लाभवानसौ।

पंडित भारतेन्द्रनाथ जब तक आर्य समाज के संगठनों में रहे, तब तक उसे गौरव प्रदान करते रहे—अपनी लेखनी, अपने भाषणों और कार्यों द्वारा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब उन्होंने स्वतन्त्र रूप से कार्य करना प्रारम्भ किया, तब वे अपने महान् कार्यों से बड़ी-बड़ी संस्थाओं को पीछे छोड़ गये।

"आर्य" के सहायक सम्पादक के रूप में स्वर्गीय पंडित भीमसेन विद्यालंकार के सहयोगी के नाते उनकी टिप्पणियां और निर्भीक विचार आर्य समाज के निष्पक्ष दृष्टिकोण को उजागर करती थीं।

सन् 1953 में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पानीपत अधिवेशन के बाद "अपनी बात" शीर्षक से उनके द्वारा की गई टिप्पणियां आर्यसमाज के वैचारिक क्षेत्र के लिए आज भी पैनी चाबुक की तरह सजग करने वाली हैं। 2 अगस्त 1953 के आर्य में प्रकाशित निम्नलिखित उद्धरण पं. भारतेन्द्रनाथ की जागरूकता और बेचनी को मुखरित कर रहे हैं—

मेरा हृदय आर्यसमाज के भविष्य की कल्पना को सोच कर चिंतित हो रहा है। मैं सोच रहा हूं कि यदि भारत की सर्वाधिक संगठित और प्रभावशाली आर्य संस्था का यह हाल है तो ऋषि के कार्य को कौन पूरा करेगा? ऐसा लगता है कि सुझाव देने हैं, इसलिए सुझाव दिए जा रहे हैं, बोलना है, इसलिए बोला जा रहा है। कोई योजना, कोई क्रियात्मक उपाय, आर्यसमाज की विचारधारा के प्रसार के लिए नहीं सोचा गया। यह दुःख का विषय है।

जिस संस्था के पास सभी कुछ हो, वह क्यों न अपनी विचारधारा फैला सके? यह समस्या है। इस समस्या के उत्तर में आर्यसमाज को उन्नत करने की भावना से मैं स्पष्ट शब्दों में यह लिखना चाहता हूं कि जो लोग आज कालिजों के लिए, स्कूलों के लिए, धन व्यय करते हैं, वे आर्यसमाज के सब से बड़े विरोधी हैं। वे एक पाप कर रहे हैं। इसलिए आर्यसमाज को यह कार्य तुरन्त बन्द कर देना चाहिए। यह समय की मांग है। हो सकता है कि अधिकारों और सत्ता के अभिमान में वे इस आवाज को सुनने का प्रयत्न न करें किन्तु आवाज सत्य है, महर्षि दयानन्द की आज्ञाओं के अनुकूल है। इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता।

2. गुरुकुल को गुरुकुल ही रहने दिया जाए। उसका संचालन वैदिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विचारधारा के प्रसार के लक्ष्य को सामने रखकर किया जाए। यह भी समय की मांग है।

3. बार-बार प्रश्न उठाया गया कि जनता कार्यक्रम, योजनायें सामने रखे। पर क्या आर्य नेताओं को आज कोई कार्य करने के लिए नहीं दीखता? क्या मूर्तिपूजा और गुरुडम के वेग को रोकने लिए कुछ सोचा गया? क्या विरोधी विचारधारा के लगातार प्रकाशित होने वाले साहित्य का उत्तर देने के लिए कुछ उपाय सोचा गया? क्या शराब की बढ़ती गंदे चित्रों का प्रचार, मांस की दुकानें समाप्त करने के लिए पग उठाने की कोई बात सोची गई? क्या इन्हें समाप्त करना हमारा कार्य नहीं है? क्या इन बुराइयों को बढ़ते देख कर हम मौन ही रहेंगे? इसका उत्तर कौन देगा?

आज इन सभी पापों और बुराइयों को मिटाने के लिए मैं दयानन्द के भक्तों को पुकार रहा हू। नेताओं से कुछ आशा नहीं की जा सकती, तो क्या यह सोच लिया जाए कि सारे देश से दयानन्द के भक्त समाप्त हो गए हैं।

आर्यो! उठो! मेरी पुकार को सुनो। महर्षि दयानन्द की जलाई हुई ज्योति को फैलाने के लिए प्राणों की आहुति देकर आगे बढ़ने का संकल्प करो। अधिकारों का मोह छोड़कर, वर्तमान प्रवाह को बदलने का निश्चय करो। मूर्तिपूजा, गुरुडम, फैशन, मांस, शराब, गंदे चित्र और विदेशी विचार धारा के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करो। परमात्मा तुम्हारा साथ देगा। सत्य तुम्हें प्रकाश पहुंचाएगा। तुम विजयी होगे। उठो और बढ़ने का संकल्प करो तो सही।

कितना अच्छा होता यदि आर्यसमाज का सारा बल विरोधी विचार-धाराओं को बदल 'कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्'' की पूर्ति में व्यय होता। प्रवाह के साथ बहने के लिए तत्पर न होते हुए हम प्रवाह को बदलने का प्रण करते और धरती के हर कोने पर प्रत्येक मानव के अंतः-करण में वेद की पावन ज्योति प्रभासित होती। संसार स्वर्ग बनता, सतयुग का समय हो जाता और सभी सुखी, शांत, आनन्दित हो, मानव जीवन के लक्ष्य की पूर्ति के लिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रयत्नशील होते। यह सभी कुछ हो सकता है, यदि आर्यसमाजी "आर्य" बन महर्षि के चरण चिह्नों पर चलने का संकल्प करें।

महर्षि दयानन्द, वेद और आर्यसमाज की दुहाई देते हुए भी जो इन सभी को नष्ट करने के लिए प्रयत्नशील हैं, क्या वे अपनी राह बदलेंगे? यही प्रश्न है, जिसके उत्तर पर उत्थान और पतन का इतिहास लिखा जाएगा, यह सत्य है।

पं. भारतेन्द्रनाथ की काव्यप्रतिमा सचमुच अद्भुत थी। पुण्यभूमि में उन्होंने जो काव्यबद्ध रचना भेजी थी, उसकी सार्थकता 35 वर्ष बाद भी पहले की तरह सटीक है। आज के पाठक उनकी निम्नलिखित पंक्तियों से इसे मुलाहिज़ा फर्मा सकते हैं—

नवोदित नये राष्ट्र युग की कहानी,
लिखें स्वर्ण गाथा, भरें स्नेह वाणी।

जगे राष्ट्र अपनी नई कामना ले,
उठे राष्ट्र सुन्दर सबल साधना ले,
बढ़े राष्ट्र मनहर मिलन भावना ले,

जगे भारती सभ्यता वह सयानी।
नवोदित नये राष्ट्र युग की कहानी॥

प्रलय की प्रबल आंधियों में न हारे,
सतत पंथ के कण्टकों को बुहारे,
उषा स्वर्ण किरणों से पंकज पसारे,

सुनाये विजय विश्व गाथा सुहानी।
नवोदित नये राष्ट्र युग की कहानी॥

सबल हों सभी नागरिक दिव्य-मूर्ति,
सुलभ हों सभी सौख्य साधन व स्फूर्ति,
करे मुस्करा कर अभय प्राण-पूर्ति,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विमल-सी मनोमुग्ध आभा निशानी, ।
नवोदित नये राष्ट्र युग की कहानी ।।

हिमाचल अचल दे सुखद स्वर्ण सरिता,
विजयश्री बने प्रिय सुकोमल सुचरिता,
हृदय भावनाये सबल पुण्य भरिता,
सकल ऐक्य भावों की धारा बहानी ।
नवोदित नये राष्ट्र युग की कहानी ।।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मुखपत्र आर्य के 30 अगस्त 1953 के अंक में मैंने जो प्रतिक्रिया उन द्वारा सम्पादित स्वाध्याय अंक पर उन्हें भेजी थी, वह मुझे आज भी याद आ रही है। प्रतिक्रिया इस प्रकार थी—

प्रिय श्री भारतेन्द्रनाथ जी, सप्रेम नमस्ते ।

विशेषांक निकला, और बहुत अच्छा निकला। सामग्री चयन की दृष्टि से, शुद्ध मुद्रण की दृष्टि से और रूप-रंग व सज्जा की दृष्टि से आर्यसमाजी कहलाने वाले अखबारों में ही नहीं, अपितु पंजाब, हिमाचल प्रदेश, पेप्सु और दिल्ली से ऊपर के प्रदेशों में हिन्दी (आर्यभाषा) का कोई ऐसा साप्ताहिक देखने को नहीं मिलता। यदि अपनी शैली में कहूं तो अंक के प्रारम्भ में श्री भीमसेन जी के शब्दों को इस अंक के पीछे आपकी चलती-फिरती आत्मा बोल रही है। अन्त में साधुवाद ।

यह है पत्रकारिता के माध्यम से भारतेन्द्र जी से मेरे परिचय की संक्षिप्त गाथा। ★

बस मे एक व्यक्ति ने जेबकतरे को अपनी जेब काटते पकड़ लिया और कहा 'तुम्हें शर्म नहीं आती, जेब काटते हो ?'

'शर्म तो आपको आनी चाहिए। जेब में एक पैसा भी नहीं है।" जेबकतरे ने कहा। × × ×

मां: "अरे सोनू तुम आंखे बंद करके इमली क्यों खा रहे हो ?"
सोनू: "मम्मी आपने ही तो कहा था अगर इमली का मुंह देखा तो मार-मार कर कचूमर निकाल दूंगी।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाई भारतेन्द्र नाथ जी : सार्थक

जीवन के कुछ अध्याय

—सत्यपाल शास्त्री

लेखक स्वर्गीय पंडित भारतेन्द्र नाथ जी के सहपाठी और वर्षों निकट सहयोगी रहे हैं। इससे पूर्व भी आप उनकी लेखनी से पंडित जी के यशस्वी जीवन के सम्बन्ध में अनेक लेख पढ़ चुके हैं।

दिवंगत महात्मा वेदभिक्षु: जी (पंडित भारतेन्द्र नाथ जी) का जीवन बहु-आयामी था। उनके जीवन की उपलब्धियां इतनी अधिक थीं कि उनका विवरण देने के लिए एक नया टॉड राजस्थान लिखने की आवश्यकता होगी। हमारा विचार उनका एक बृहदाकार जीवन चरित्र प्रकाशित करने का है, लेकिन यह कार्य दीर्घकालसाध्य है। प्रस्तुत लेख में उनके जीवन के कुछ अंशों पर प्रकाश डाला गया है।

गुरुकुल में प्रवेश

7 और 8 अगस्त 1942 को बम्बई के गवालिया टैंक मैदान में अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति का अधिवेशन हुआ, जिसमें "भारत छोड़ो" प्रस्ताव स्वीकृत किया गया। अगले दिन महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, मौलाना अबुलकलाम आजाद आदि कांग्रेसी नेता गिरफ्तार कर लिये गये। उन दिनों इन पंक्तियों का लेखक दो महीने की छुट्टी पर जेहलमवर्ती अपने गुरुकुल से अपने घर कुंजाह, जिला गुजरात आया हुआ था। (ये दोनों स्थान अब पाकिस्तान में हैं।) अक्तूबर में जब मैं गुरुकुल लौटा, तब मैं ने भारतेन्द्र जी को वहां देखा।

भारतेन्द्र जी पंजाब विश्वविद्यालय की हिन्दी भूषण परीक्षा के परीक्षार्थी होकर आये थे। वैसे उन का हिन्दी का ज्ञान बहुत अच्छा था, लेकिन केवल अंग्रेजी विषय में मैट्रिक आदि परीक्षाओं में बैठने के लिए हिन्दी परीक्षायें पास करना आवश्यक था, इसलिए उन्हें ये परीक्षायें पास करनी पड़ीं। इस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रकार की अंग्रेजी परीक्षा प्रणाली उन दिनों वाया बठिंडा अर्थात् छोटे मार्ग से गन्तव्य तक पहुंचना कहलाती थी।)

उन दिनों भारतेन्द्र जी अपने नाम के साथ "विप्लव" उपनाम लगाया करते थे। कविता पढ़ते भी थे, सुनते भी थे और लिखते भी थे। झूम-झूमकर श्रेष्ठ कवियों की कवितायें सुनाया करते थे। राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी की कविता "प्रण और प्राण की बाजी का लगा हुआ है फेरा, उतरेंगी बेरी कड़ियां या उतरेगा सिर मेरा," भारतीय आत्मा माखनलाल चतुर्वेदी की कविता "मुझे तोड़ लेना वन माली, उस पथ में तू देना फेंक, मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जायें वीर अनेक" और बालकृष्ण शर्मा नवीन की कविता "कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाये, एक हिलोर इधर से आये, एक हिलोर उधर से आये" सदृश कवितायें वे गुरुकुल की विद्योल्लासिनी सभा की बैठकों में प्रायः सुनाया करते थे। वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भी उत्साह से भाग लेते थे। बाद में गुरुकुल में रहते हुए ही केवल 16 वर्ष की उम्र में उन्होंने विहान नाम से एक हस्त-लिखित पाक्षिक पत्रिका निकाली, जो पत्रकारिता के क्षेत्र में उनका प्रथम प्रयास था उन दिनों उनका दृष्टिकोण पूर्णतः राजनैतिक था, क्योंकि देश की स्वाधीनता का प्रश्न मुख्य था। उनमें नेतृत्व के गुण प्रारम्भ से ही थे। उन्हीं दिनों वे लाहौर के आर्य (आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख पत्र) और मंडी धनौरा (जिला मुरादाबाद) की पत्रिका "शिक्षा सुधा" के लिए लिखा करते थे। (आर्य के सम्पादक पंडित भीमसेन विद्यालंकार थे और शिक्षा सुधा के डा. अम्बाप्रसाद सुमन।)

अपने गुणों के कारण भारतेन्द्र जी गुरुजनों के विशेष रूप से प्रिय थे। आचार्य रामदेव जी (संन्यासी बनने पर स्वामी सत्यानन्द जी जालन्धर वासी) गुरुकुल के आचार्य थे और पंडित शिवकुमार जी शास्त्री मुख्याध्यापक और मुख्याधिष्ठाता थे अध्यापकों में श्री ओंकार मिश्र "प्रणव" और श्री राजपाल शास्त्री "जयेश" के नाम उल्लेखनीय हैं।

मई सन् 1943 में भारतेन्द्र जी ने हिन्दी भूषण परीक्षा उत्तीर्ण की।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतेन्द्र जी बचपन से ही कुशाग्रबुद्धि थे और हर काम कम से कम समय में कर डालना चाहते थे। सन् 1944 में भारतेन्द्र जी मैट्रिक और हिन्दी प्रभाकर दोनों परीक्षाओं में बैठे और दोनों में उत्तीर्ण हुए। कर्मठता प्रारम्भ से ही उनके स्वभाव का अंग थी। निठल्ले बैठना तो वे जानते ही न थे। बचपन से ही वे राष्ट्रीय घटनाओं पर पैनी दृष्टि रखते थे। अपने भाषणों और रचनाओं में उनका जोर इसी बात पर रहता था कि देश के पराधीन रहते स्वाधीनता के सिवा अन्य लक्ष्यों के लिए कार्य करना निरर्थक-सा ही है।

भारतेन्द्र जी के लक्ष्य ऊंचे थे। कुछ कर गुजरने की साध प्रारम्भ से ही उनमें थी। उस उम्र में भी श्री जयप्रकाश नारायण, श्री देवदास गांधी, श्री अजित प्रसाद जैन सदृश नेताओं के साथ उनका पत्र-व्यवहार चलता था।

भारतेन्द्र जी की माता जी बीच-बीच में गुरुकुल में आती रहती थीं। वे विद्यार्थियों से घुल-मिल गई थीं। पारिवारिक वातावरण में बन्धु-बान्धव भारतेन्द्र जी को "भारत" कहकर पुकारते थे।

माता जी कनखल में भारत माता के नाम से विख्यात थीं। लगभग पचास वर्ष पूर्व की बात है। एक दिन स्वर्गीय आचार्य किशोरीदास जी वाजपेयी के सुपुत्र श्री मधुसूदन वाजपेयी ने अपने पिता जी से कहा कि "माता जी ऐसा कह रही थीं।" वाजपेयी जी ने पूछा कि कौन-सी माता जी ? क्योंकि आज-कल कनखल में तीन मातायें रहती हैं। एक हैं जगत्माता, एक हैं लोकमाता और एक हैं भारत माता। वाजपेयी जी ने भारत माता का विशेषण माता विद्यावती जी शारदा के लिए प्रयुक्त किया था, क्योंकि वे 'भारत' अर्थात् भारतेन्द्र नाथ जी की माता थीं। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्री कृष्ण ने भी अर्जुन को भारत कह कर सम्बोधित किया है। दुष्यन्त का पुत्र भरत इस देश के आदि सम्राटों में है। इस दृष्टि से हम सब भारत हैं—भरतवंशी भारत का एक अन्य अर्थ भी है—भा अर्थात् शोभा उसमें रत अर्थात् लगा हुआ। हमारे देश का भी नाम भारत है। कुछ लोग भारतेन्द्र जी को भारतेन्दु कह कर भी पुकारते थे। अर्थ की दृष्टि से यह नाम भी सही है।

इन्हीं दिनों सिन्ध सरकार ने सत्यार्थ-प्रकाश के चौदहवें समुल्लास पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रोक लगा दी। इस आदेश का विरोध करने के लिए लाहौर में आर्यसमाज बच्छोवाली और आर्यसमाज अनारकली ने अपने वार्षिकोत्सवों के अवसर पर सम्मिलित रूप से गुरुदत्त भवन के विशाल प्रांगण में सत्यार्थ प्रकाश रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया। भारतेन्द्र जी इस सम्मेलन में दर्शक के रूप में सम्मिलित होने गुरुकुल से लाहौर आये।

उन्होंने लाहौर से उन दिनों भाई परमानन्द द्वारा संचालित अंग्रेजी दैनिक "डेली हैराल्ड" के सम्पादक के नाम एक पत्र लिखा, जिसमें सत्यार्थ-प्रकाश पर रोक सम्बन्धी सिन्ध सरकार के आदेश का विरोध किया गया। यह पत्र "डेली हैराल्ड" ने प्रमुख स्थान दे कर छापा।

सन् 1945 में भारतेन्द्र जी ने इंटरमीजियेट परीक्षा पास की। इसी वर्ष वे गुरुकुल से स्नातक बनकर निकले थे। उन्हें विद्याभूषण की उपाधि दी गई। उसी वर्ष उनके साथ इन पंक्तियों का लेखक भी स्नातक बनकर निकला। दीक्षान्त अभिभाषण आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता पंडित यशःपाल सिद्धान्तालंकार ने दिया। उन दिनों भारतेन्द्र जी की माता भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में महोपदेशिका थीं। उनके भाषण में उस समय की परिस्थितियों के कारण धार्मिकता के साथ ही राजनैतिक पुट अत्यधिक रहता था।

गुरुकुल छोड़ने के बाद भारतेन्द्र जी ने आर्य वीर संघ में काम करना शुरू किया। (उन दिनों आर्य वीर दल का यही नाम था।) इसी सिलसिले में वे डा. श्यामस्वरूप सत्यव्रत की पत्रिका संघ के सम्पादक बने। (यह पत्रिका बरेली से निकलती थी।) इस पत्रिका के सम्पादक पद पर अधिष्ठित रहते हुए वे गुरुकुल के गुरुजनों और सहपाठियों को न भूले और उन्हें अपनी पत्रिका में लेख लिखने के लिए निमन्त्रित करते रहे।

8 अगस्त 1946 को माता विद्यावती जी शारदा का स्वर्गवास हो गया और भारतेन्द्र जी संघर्ष से जूझने के लिए अकेले रह गये। लेकिन वे घबराने वाले न थे। उन्हें तो बचपन में ही अपने पूज्य पिता पंडित गयाप्रसाद शुक्ल जी से शिक्षा मिली थी—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एकोऽहमसहायोऽहं कृशोहमपरिच्छदः।
स्वप्नेऽप्येवंविधा चिंता मृगेन्द्रस्य न जायते ॥

(मैं अकेला हूं, असहाय हूं, मेरा शरीर दुबला-पतला है, मैं साधन हीन हूं, शेर को स्वप्न में भी ऐसी चिन्ता नहीं होती।)

दिन बीतते गये। 3 जून 1947 को भारत के विभाजन की घोषणा हो गई—पाकिस्तान नाम से एक अलग देश दुनिया के नक्शे पर प्रकट हुआ। जैसी आशंका थी, हिन्दुओं को पाकिस्तान से भागकर भारत आना पड़ा। मैं उन दिनों जलालपुर कीकनां (जिला जेहलम) के आर्य हाई स्कूल में हिन्दी और संस्कृत का अध्यापक था। गरमियों की छुट्टियों में गुरुकुल आया तो आचार्य रामदेव जो गुरुकुल भूमि से फगवाड़ा (पंजाब) जाने की तैयारी में थे। मैं भी उनके साथ फगवाड़ा आ गया और गुरुकुल में अध्यापन कार्य करने लगा। कुछ दिन बाद आचार्य रामदेव जी ने, जो उन दिनों स्थिति का जायजा लेने के लिए कई स्थानों का दौरा कर रहे थे, भारतेन्द्र जी को अधिकारपत्र देकर गुरुकुल भेजा। भारतेन्द्र जी गुरुकुल में आये और लगभग एक वर्ष तक मुख्याध्यापक के तौर पर कार्य करते रहे। इस बीच गुरुकुल फगवाड़ा से स्थानान्तरित होकर बिरालसी (जिला मुजफ्फरनगर) आ गया था, जहां पहले से एक गुरुकुल चल रहा था। गुरुकुल जेहलम उसी भूमि में काम करने लगा। कुछ महीनों बाद वहां स्थानीय लोगों की दलबन्दी ने ऐसा उग्र रूप धारण किया कि प्रतिद्वन्द्वी दल गुरुकुल भूमि पर अधिकार करने के लिए हथियारबन्द और घोड़ों पर सवार होकर मरने-मारने के लिए मैदान में निकल आये। उस स्थिति में गुरुकुल बन्द हो जाने से आचार्य रामदेव जी जालन्धर चले गये। भारतेन्द्र जी को अपनी ननसाल टोपरी (सहारनपुर) में आना पड़ा।

पत्रकारिता के क्षेत्र में

पत्रकारिता में भारतेन्द्र जी की रुचि बचपन से ही थी। सन् 1951 में आपको बम्बई सरकार के हिन्दी विभाग में 250 रुपये मासिक वेतन तथा आवास आदि सुविधा वाले पद का नियुक्तिपत्र मिला, लेकिन भारतेन्द्रजी

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ने उसके मुकाबले आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में साठ रुपये मासिक प
मिले उपदेशक पद को तरजीह दी। पत्रकारिता में आपकी गहरी रुचि क
देख कर आपको सभा के साप्ताहिक मुखपत्र 'आर्य' का सहायक सम्पादक बन
दिया गया। जैसा सामान्यतः होता है, सारा काम तो सहायक सम्पादक ही
करता है। सभामन्त्री का तो केवल पद के कारण सम्पादक के तौर पर नाम दे
जाता है। आपके सहायक सम्पादक रहते समय अधिकांश समय पंडित भीम-
सेन विद्यालंकार सम्पादक रहे—कुछ समय के लिए प्रिंसिपल माणिकचन्द
खोसला का नाम जाता रहा। उन दिनों सभा के प्रधान महाशय कृष्ण थे।
वे स्वयं एक अच्छे सम्पादक थे। इस प्रकार 'आर्य' को तीन प्रतिष्ठित
सम्पादकों का बहुमूल्य सहयोग मिला—महाशय कृष्ण, पंडित भीमसेन विद्या-
लंकार और पंडित भारतेन्द्रनाथ जी।

भारतेन्द्र जी जहां भी रहे, पहल करके और आगे बढ़ कर सार्वजनिक
कार्यों में हिस्सा लेते रहे। उन दिनों 'आर्य' अम्बाला छावनी से निकलता
था। भारतेन्द्र जी सपरिवार आर्य समाज मन्दिर कच्चा बाजार में रहते
थे। आपने वहाँ प्रचार की धूम मचा रखी थी।

सन् 1953 में मास्टर तारासिंह के नेतृत्व में शिरोमणि अकाली दल ने
पंजाब में पंजाबी सूबा आन्दोलन चला रखा था। तत्कालीन प्रधानमन्त्री
स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू दौरे पर पटियाला गये और वहां के गुरुद्वारे में
उनका भाषण हुआ। मास्टर तारासिंह मंच से कुछ ही गज की दूरी पर
बैठे हुए थे। वे खड़े हो गये और चिल्ला-चिल्ला कर नेहरू जी को पुकारते
हुए कहने लगे कि "मैं आपको नहीं बोलने दूंगा।" इस घटना से हिन्दू
समाज में रोष फैलना स्वाभाविक था। उन्हीं दिनों (25, 26 और 27
दिसम्बर को) अम्बाला छावनी में प्रथम पंजाब प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन
आयोजित था। भारतेन्द्र जी उन लोगों में से नहीं थे, जो राजनीति को
अस्पृश्य मानते हैं। उनमें राजनैतिक चेतना कूट-कूट कर भरी हुई थी।
उन्होंने सम्मेलन में एक प्रस्ताव स्वीकृत करवाया, जिसमें नेहरू जी के साथ
मास्टर तारासिंह के दुर्व्यवहार की निन्दा की गई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन दिनों पंजाब का प्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक ट्रिब्यून अम्बाला छावनी से प्रकाशित होता था। भारतेन्द्रजी की रचनायें उसमें प्रकाशित होती रहती थीं।

सन् 1954 में आप आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के महामन्त्री बाबू कालीचरण जी के निमंत्रण पर आर्य से आर्यमित्र साप्ताहिक में सम्पादक बनकर चले गये। आर्य के तत्कालीन प्रधान सम्पादक पं० भीमसेन जी विद्यालंकार ने दुःखी मन से आप को विदा किया और आर्य के सफल सम्पादन के लिए आपकी प्रशंसा की।

साप्ताहिक 'आर्यमित्र' के प्रधान सम्पादक का पद संभालने के कुछ ही दिन बाद आपने उसे 'दैनिक' कर दिया। आप ग्यारह महीने दैनिक आर्यमित्र चलाते रहे। सभा के अधिकारियों के आपसी झगड़ों के कारण दैनिक आर्यमित्र बन्द करना पड़ा। इस पर भारतेन्द्र जी को इतना दुःख हुआ कि उन्हीं के शब्दों में "यदि मेरे किसी बच्चे की मृत्यु हो जाती तो भी मुझे इतना दुःख न होता, जितना दैनिक आर्यमित्र बन्द होने से हुआ।"

आप हमें इस प्रकार भी सहयोग दे सकते हैं।

501 रु० भेज कर

जनज्ञान मासिक

के आजीवन सदस्य बनिये।

आप को 101 रु० का अमूल्य ग्रन्थ वैदिक सम्पत्ति और 50 रु. मूल्य का संक्षिप्त महाभारत (हिन्दी भाष्य) उपहार में दिये जायेंगे।

2286, आर्यसमाज मार्ग, करीलबाग
नई दिल्ली-110005

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संघर्षशील कर्मयोगी भारतेन्द्रजी का जीवनवृत्त : महत्त्वपूर्ण तिथियां

जन्म—14 मार्च 1928

20 अगस्त सन् 1933 को पहली बार अपनी माता श्रीमती विद्यावती शारदा के साथ गुरुकुल ग्राम जेहलम (अब पाकिस्तान में) में प्रविष्ट हुए। (बाद मे वे इसी गुरुकुल में अनेक वर्ष तक पढ़ते-पढ़ाते रहे।) अप्रैल सन 1934 तक गुरुकुल में रहे।

सन् 1936 में आचार्य पुनितराम जी (संन्यास लेने पर स्वामी आत्मानन्दजी) ने गुरुकुल पोठोहार से बीघापुर जाकर उनका यज्ञोपवीत संस्कार करवाया।

अगस्त 1942 में केवल चौदह वर्ष की उम्र में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। जब पुलिस पीछे पड़ गई, तब पहले ब्रह्मचारी व्यासदेव (संन्यासोत्तर नाम स्वामी योगेश्वरानन्द) के आश्रम में और तत्पश्चात् अक्तूबर 1942 में गुरुकुल जेहलम मे शरण ली।

मार्च 1943 में हिन्दी भूषण परीक्षा पास की।

सन् 1944 में मैट्रिक और हिन्दी प्रभाकर परीक्षा पास की।

सन 1945 में इंटरमीजियेट परीक्षा पास की और पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश कर सबसे पहले 'संघ' नामक पत्रिका के सम्पादक बने। (उससे पहले वे गुरुकुल में निवास के दौरान 'विहान' नाम से हिन्दी की हस्तलिखित पाक्षिक पत्रिका निकालते रहे। कुछ दिन तक अपनी माता जी के ग्राम टोपरी (जिला सहारनपुर) में रह कर सार्वजनिक कार्यों में भाग लेते रहे। देश का विभाजन होने हर जब गुरुकुल जेहलम से स्थानान्तरित होकर पहले फगवाड़ा और उसके बाद बिरालसी आ गया, तब उसके संचालक का पद संभाला।

वहां की गुटीय प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण गुरुकुल के बन्द होने पर अपनी माता जी के जन्म स्थान टोपरी (सहारनपुर) में रहने लगे।

23 जुलाई 1950 को गाजियाबाद में गिनौरा (जिला बुलन्दशहर) के पंडित रामचरण शर्मा की सुपुत्री पंडिता राकेशरानी से परिणय सूत्र में बंधे।

सन 1951 में आर्य के सहायक संम्पादक का पद ग्रहण किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सन् 1954 में साप्ताहिक आर्यमित्र के सम्पादक का पद ग्रहण कर विशालतर क्षेत्र में पदार्पण किया।

सन् 1956 में गाजियाबाद में रहकर आयुर्वैदिक औषधालय चलाते रहे। (उन्होंने आयुर्वेदाचार्य की उपाधि ले रखी। थी।) साथ ही ईसाइयों के अराष्ट्रीय प्रचार के विरुद्ध सशक्त और सबल आन्दोलन का संचालन किया।

मई 1960 में दिल्ली में आयोजित छठे आर्य महासम्मेलन की सफलता के लिए जी जान से जुटे। 1957 में उत्तरा खण्ड आयुर्वैदिक रसायन शाला की स्थापना की तथा कई पेटैन्ट औषधियाँ आविष्कृत कीं। सन् 1963 में पुनः 'आर्योदय' ('आर्य' का नया नाम) के सम्पादक बने।

सन् 1968 में जन-ज्ञान का प्रकाशन प्रारम्भ किया। मई 1971 में श्री मोरारजी देसाई ने Life and Teachings of Swami Dayanand का विमोचन किया। इसका प्रकाशन जन-ज्ञान प्रकाशन ने किया था। सन् 1972 में दीपावली के दिन दयानन्द (वे०) संस्थान की स्थापना की। इन्हीं दिनों घोषणा की कि चारों वेदों का भाषाभाष्य केवल पैंतीस रुपये में दिया जायेगा।

तत्कालीन रक्षा मन्त्री बाबू जगजीवन राम के हाथों ऋग्वेद के प्रथम खंड के भाषाभाष्य का विमोचन हुआ। पं. भारतेन्द्र नाथ जी ने घोषणा की कि "जब तक चारों वेदों के भाषाभाष्य के प्रकाशन की सन्तोषजनक व्यवस्था नहीं हो जाती, तब तक मैं अन्न, मीठा और नमक ग्रहण नहीं करूंगा।"

अक्तूबर 1973 में यजुर्वेद और सामवेद भाषाभाष्य का विमोचन तत्कालीन नागरिक उड्डयन व पर्यटन राज्य मन्त्री डा. सरोजिनी महिषी ने किया। दिसम्बर 1974 में अथर्ववेद के भाषाभाष्य का विमोचन आर्यसमाज मन्दिर मार्ग में तत्कालीन शिक्षा मन्त्री डा. कर्ण सिंह के हाथों हुआ।

जनवरी 1974 में आर्यसमाज मन्दिर हनुमान् रोड में अंग्रेजी जन-ज्ञान के प्रथम अंक का विमोचन हुआ। इनके सम्पादकद्वय थे पंडित भारतेन्द्र-नाथ जी और उनकी सुपुत्री ज्योत्स्ना एम. ए.।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

1975 में नेपाली राजदूत श्री कृष्णबाम मल्ल के हाथों ऋग्वेद के द्वितीय खंड का विमोचन हुआ।

दिसम्बर 1975 में आर्यसमाज की स्थापना शताब्दी मनाई गई। इस अवसर पर संस्थान की ओर से 'वन्दना के स्वर' नामक कविता संग्रह प्रकाशित किया गया।

दिसम्बर 1976 में स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान की अर्धशताब्दी मनाई गई। संस्थान ने प्रो. इन्द्र विद्यावाचस्पति द्वारा लिखित पुस्तक "मेरे पिता" प्रकाशित की। इस अवधि में साप्ताहिक जनज्ञान और मराठी जनज्ञान भी प्रकाशित हुआ। इससे कुछ पूर्व अंग्रेजी जनज्ञान भी प्रकाशित होने लगा था।

14 मार्च 1979 को स्वामी सर्वानन्द जी से वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा लेकर महात्मा वेदभिक्षु: नाम से विख्यात हुए।

दिसम्बर 1979 में आप सिरासिस आफ लिवर से पीड़ित हुए। इसके बावजूद आपने पंडिता राकेशरानी जी को चुनाव संघर्ष में प्रतीकात्मक उम्मीदवार बना कर वेदप्रतिपादित राजनैतिक विचारधारा का प्रचार किया।

सन् 1980 में मीनाक्षीपुरम् की घटना के बाद हिन्दू रक्षा समिति की स्थापना की।

सन् 1981 और 82 में स्वास्थ्य की खराबी के बावजूद हिन्दू संगठन के लिए देशभर का दौरा करते रहे।

सन् 1983 तक पंडित जी के संचालन में दयानन्द संस्थान लगभग 50[illegible] छोटी-बड़ी पुस्तकें प्रकाशित कर चुका था।

13 और 14 मार्च 1983 को पंडित जी ने देश भर के हिन्दुओं का एक सम्मेलन बुलाया। पहले दिन का अधिवेशन विट्ठलभाई पटेल हाउस और दूसरे दिन का हिन्दू महासभा भवन में हुआ।

सन् 1983 के नवम्बर में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर अजमेर गये। वहां से खांसी और जुकाम लेकर लौटे। 5 दिसम्बर को पुनः रोग का आक्रमण हुआ—खून की उलटियां हुईं।

20 और 21 दिसम्बर की रात को दो बजे महासमाधि में लीन हो गये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पत्रकारिता का रिहर्सल

पत्रकारिता में भारतेन्द्र जी की रुचि किशोरावस्था से ही थी। पत्रकारिता के जीवाणु उनके खून में थे। उनका ट्रंक पत्र-पत्रिकाओं से भरा रहता था। नवम्बर सन् 1944 में उन्होंने गुरुकुल से ही विहान नामक एक हस्तलिखित पत्रिका प्रकाशित करनी प्रारम्भ की। इस पत्रिका के दो भाग थे—हिन्दी और अंग्रेजी। सम्पादक का पद भारतेन्द्र जी ने ग्रहण किया और संरक्षक बने पंडित राजपाल शास्त्री 'जयेश', जो गुरुकुल में अध्यापक थे। भारतेन्द्र जी इस समय गुरुकुल में रह कर पंजाब विश्वविद्यालय की इंटरमीजियेट परीक्षा की तैयारी कर रहे थे।

प्रयत्न करने पर भी 'विहान' के सब अंक नहीं मिल सके। केवल प्रथम वर्ष का चौथा अंक मिला है। पत्रिका के शीर्ष पर अंकित है—जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। पत्र गुरुकुल की विद्योल्लासिनी सभा के मुखपत्र के रूप में निकला। पत्रिका के तीसरे पृष्ठ पर अंकित है—संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। (ऋग्वेद) नीचे पद्य है—

मिटे ताप-तम व्योम से, लुके विहग अज्ञान।
ज्ञानभानु से विश्व मे, मंजुल हुआ विहान॥

इसके बाद गुरुकुल और शिक्षा विषय पर सम्पादकीय लेख है। पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय और महात्मा नारायणस्वामी के लेख हैं। भारतेन्द्र जी, पंडित ओंकार मिश्र 'प्रणव', पं. राजपाल शास्त्री 'जयेश' और श्री राजपाल सिंह शास्त्री की कवितायें हैं। भारतेन्द्र जी को सामयिकता का पूरा ध्यान रहता था। क्योंकि 'विहान' का प्रस्तुत अंक दिसम्बर में प्रकाशित हुआ, इसलिए अनेक रचनायें स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्बन्ध में हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्रांतिकारी पिता

उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले का क्रान्तिकारी आन्दोलन में उल्लेखनीय योगदान रहा है। इसी जिले के बीघापुर ग्राम मे श्री मनराखनलाल शुक्ल के कुल दीपक के रूप में सन् 1887 में श्री गयाप्रसाद शुक्ल का जन्म हुआ। बाल्यकाल से ही गयाप्रसाद के मन में स्वदेश की पराधीनता शूल की तरह चुभती थी। बालक को ब्रिटिश सरकार के क्रीतदासों से भी घृणा थी। प्रसिद्ध आर्य विद्वान् आचार्य उदयवीर शास्त्री बताते हैं कि जब गयाप्रसाद शुक्ल गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में राघव के छद्म नाम से रह रहे थे, तब उन्होंने एक थानेदार की हत्या कर दी थी।

यह उग्र पग उठा लेने के बाद उनके लिए स्वदेश में रहना असम्भव हो गया और उन्होंने विदेश की राह ली। फ्रांस, जापान आदि देशों में क्रांतिकारी भारतीय नेताओं से निकट सम्पर्क स्थापित कर वे सक्रिय रूप से क्रांति यज्ञ में शामिल हो गये। आचार्य नरदेव शास्त्री उनकी शारीरिक क्षमता के बारे में बताते थे कि गुरुकुल निवास के दौरान वे एक-एक पीपा दूध पी जाते थे। शुक्ल जी का स्वातन्त्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर से आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध रहा। आपने विदेशों से क्रांतिकारियों के लिए हथियार भिजवाये।

सन् 1924 मे आप भारत लौटे और पुनः क्रांतिकारी कामों में जुट गये। आप ने शहीद भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद के घनिष्ठ सहयोगी बन कर क्रांतिकारी मोर्चा संभाला। सन् 1926 में आपने गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया। श्रीमती विद्यावती शारदा से आपका विवाह जात-पांत के बन्धनों को तोड़ कर हुआ विवाह की रात ही आप गिरफ्तार कर लिये गये। सन् 1929 में लाहौर षड्यन्त्र केस के सिलसिले में पुलिस ने 36 घंटे तक आपको उत्पीड़ित किया। फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य लड़खड़ा गया।

अन्ततः महाप्रयाण की वेला आई और 19 अप्रैल 1932 को डलहौजी में आप का देहान्त हो गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रेरक प्रसंग

—(प्रो.) रत्नसिंह, गाजियाबाद

बात काफी पुरानी है। महात्मा वेदभिक्षु जी (पूर्व नाम श्री भारतेन्द्र नाथ) उ. प्र. आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख पत्र 'आर्यमित्र' का सम्पादन किया करते थे। भारतेन्द्र नाथ जी को यह बात बहुत खटकती थी कि आर्य समाज का कोई अपना दैनिक पत्र न हो। उन दिनों सभा के मन्त्री बाबू कालीचरण जी थे, जो भारतेन्द्र नाथ जी से बहुत स्नेह करते थे।

भारतेन्द्र जी में आर्य समाज के प्रति निष्ठा जन्म काल से ही थी। उन्होंने कालीचरण जी से परामर्श कर दैनिक आर्यमित्र निकालने की योजना प्रस्तुत की, जिसे सभा ने स्वीकार कर लिया। भारतेन्द्र जी प्रभु भरोसे ही हरेक कार्य को आरम्भ कर देते थे। बिना पूंजी के ही दैनिक आर्यमित्र भी शुरु कर दिया गया। दिन में 18-20 घण्टे कार्य करते थे। परन्तु पैसे का काम तो पैसे ही से चलता है।

भारतेन्द्र जी ने एक योजना बनाई कि दैनिक आर्यमित्र के लिए धन-संग्रहार्थ दौरा किया जाय। इस कार्य के लिए मेरा एक मास का समय लिया। पूरे एक मास का कार्यक्रम बनाकर आर्यसमाजों को सूचित कर दिया गया और मेरे हाथ में एक रसीद बुक थमा दी गई। चन्दा मांगने में मुझे संकोच होता था। परन्तु अपने मित्र का आदेश तो पालन करना ही था। फिर भी मैंने उनसे कहा कि कुछ स्थानों पर आरम्भ में आप मेरे साथ चलें ताकि मेरी झिझक दूर हो सके। मेरे इस आग्रह को उन्होंने तुरन्त स्वीकार कर लिया और बाराबंकी जा पहुंचे। आर्यसमाज के मन्त्री को सूचित कर दिया गया था कि हम दोनों व्यक्ति रविवार प्रात आर्यसमाज मन्दिर पहुंच रहे हैं। रविवार का समय हमने इसलिए चुना था कि प्रातःकालीन साप्ताहिक सत्संग में सभी आर्यजनों से भेंट करने का अवसर प्राप्त हो सकेगा। प्रातःकाल आर्य समाज मन्दिर पहुंचने पर ताला लगा मिला। मुझे तो बहुत झुंझलाहट हुई परन्तु भारतेन्द्र नाथ जी हंसते ही रहे और मुझे समझाते रहे कि सार्व-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जनिक सेवा के कार्यों में सुविधा व आराम का ध्यान नहीं रखना चाहिए-इधर उधर खोजकर हम आर्यसमाज के सेवक को पकड़ लाये और उससे दरवाजे का ताला खुलवाया। सेवक से हमने कहा कि आर्यसमाज के अधिकारियों को हमारे आने की सूचना पहुंचा दे। वह तो सूचना देने चला गया और हम दोनों ने आर्यसमाज के हाल में प्रवेश किया। हाल के एक कोने में रखी झाड़ू उठाकर हाल में झाड़ू लगाई। भारतेन्द्र जी ने यज्ञपात्र स्वच्छ किये। दोनों ने मिलकर हवन किया और उसके बाद सम्मिलित सन्ध्या, भजन व प्रवचन का कार्य प्रारम्भ हो गया। इतनी देर में आर्यसमाज का सेवक भी आ गया। आर्यसमाज का एक भी सदस्य उपस्थित नहीं हुआ। साप्ताहिक सत्संग की कार्रवाई तो पूरी होती ही थी। पहले मेरा प्रवचन हुआ और बाद में भारतेन्द्र जी का ओजस्वी व्याख्यात हुआ। आर्य समाज का सेवक अकेला श्रद्धापूर्वक हम दोनों के प्रवचन सुनता रहा।

जो भी है हिन्दू का घर, गूंजे वहां वेद का स्वर

परमात्मा की अमर वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

(मन्त्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित)

लागत मूल्य 500 रु. । साथ में 251 रु. का बढ़िया वैदिक साहित्य (वैदिक सम्पत्ति, महाभारत एवं गीता हिन्दी भाष्य सहित अन्य उपयोगी साहित्य) उपहार में प्राप्त करें।

साहित्य न लेना चाहें तो सम्पूर्ण वेदभाष्य 375 रुपये में प्राप्त करें

वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम,

डाकघर अलीपुर, दिल्ली-110036

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वीर बालक स्कन्दगुप्त

हूण, शक आदि मध्य एशियाकी मरुभूमि में रहने वाली बर्बर जातियां हैं, जो वहां पांचवीं शताब्दी में थीं। हूण और शक जाति के लोग बहुत लड़ाकू, योद्धा और निर्दय थे। इन लोगों ने यूरोप को अपने आक्रमणों से बहुत बार उजाड़-सा दिया। रोम का बड़ा भारी राज्य उनकी चढ़ाइयों से नष्ट हो गया। चीन को भी अनेक बार इन लोगों ने लूटा। ये लोग बड़ी भारी सेना लेकर जिस देश पर चढ़ जाते थे, वहां हाहाकार मच जाता था।

एक बार समाचार मिला कि हूणों की बड़ी भारी सेना हिमालय पर्वत के उस पार भारत पर आक्रमण करने के लिए इकट्ठी हो रही है। उस समय भारत में सबसे बड़ा राज्य मगध का था। वहाँ के सम्राट् कुमारगुप्त थे। उनके पुत्र युवराज स्कन्दगुप्त उस समय तरुण नहीं हुए थे। जैसे ही हूणों की सेना एक होने का समाचार मिला, स्कन्दगुप्त अपने पिता के पास दौड़े हुए गये। सम्राट् कुमारगुप्त अपने मन्त्रियों और सेनापतियों के साथ उस समय हूणों से युद्ध करने की सलाह कर रहे थे। स्कन्दगुप्त ने पिता से कहा कि मैं भी युद्ध करने जाऊंगा।'

महाराज कुमारगुप्त ने बहुत समझाया कि 'हूण बहुत पराक्रमी और निर्दय होते हैं। वे अधर्मपूर्वक छिपकर भी लड़ते हैं और उनकी संख्या भी अधिक है। उनसे लड़ना तो मृत्यु से लड़ना है।'

लेकिन युवराज स्कन्दगुप्त ऐसी बातों से डरने वाले नहीं थे। उन्होंने कहा—'पिता जी! देश और धर्म की रक्षा के लिए मर जाना तो वीर क्षत्रिय के लिए बहुत मंगल की बात है। मैं मृत्यु से लड़ूंगा और अपने देश को क्रूर शत्रुओं द्वारा लूटे जाने से बचाऊंगा।'

महाराज कुमारगुप्त ने अपने वीर पुत्र को हृदय से लगा लिया। स्कन्दगुप्त को युद्ध में जाने की आज्ञा मिल गई। उनके साथ मगध के दो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लाख वीर सैनिक चल पड़े। पटना से चल कर पंजाब को पार कर हिमालय की बर्फ से ढकी सफेद चोटियों पर वे सैनिक चढ़ गये। भयानक सर्दी, शीतल शीतल हवा और बर्फ के तूफान भी उन्हें आगे बढने से न रोक सके।

हूणों ने सदा दूसरे देशों पर आक्रमण किया था। कोई आगे बढकर उन पर आक्रमण कर सकता है, यह उन्होंने कभी सोचा ही नहीं था। जब उन्होंने देखा कि हिमालय की चोटी पर से बड़ी भारी सेना उन पर आक्रमण करने उतर रही है तो वे भी लड़ने को तैयार हो गये। उन्हें सबसे अधिक आश्चर्य यह हुआ कि उस पर्वत से उतरती सेना के आगे एक छोटी अवस्था का बालक घोड़े पर बैठा नंगी तलवार लिये शंख बजाता आ रहा है। वे थे युवराज स्कन्दगुप्त।

युद्ध आरम्भ हो गया। युवराज स्कन्दगुप्त जिधर से निकलते थे, शत्रुओं को काट-काटकर ढेर कर कर देते थे। थोड़ी देर के युद्ध में ही हूणों की हिम्मत टूट गई। वे लोग इधर-उधर भागने लगे। पूरी हूण सेना भाग खड़ी हुई। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके जब युवराज स्कन्दगुप्त फिर हिमालय को पार कर अपने देश में उतरे, उनका स्वागत करने के लिए लाखों मनुष्यों की भीड़ वहाँ पहले से खड़ी थी। मगध में तो राजधानी से पांच कोस तक का मार्ग सजाया गया था। उस दिन उनके स्वागत के लिए पूरे देश में उत्सव मनाया गया।

यही युवराज स्कन्दगुप्त आगे जाकर भारत के सम्राट् हुए। आज के ईरान और अफगानिस्तान तक इन्होंने अपने राज्य का विस्तार कर लिया था। इनके-जैसा पराक्रमी वीर भारत का छोड़कर दूसरे देश के इतिहास में मिलना कठिन है। इन्होंने दिग्विजय करके अश्वमेध यज्ञ किया था। वीर होने के साथ ही ये बहुत धर्मात्मा, दयालु और न्यायी सम्राट् थे।

जिये तो जान लड़ाते रहे वतन के लिए,
मरे तो कुर्बान हो गये संगठन के लिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वीर बालक चण्ड

चित्तौड़ के राजसिंहासन पर उस समय राणा लाखा विराजमान थे। अपने पराक्रम से युद्ध में दिल्ली के बादशाह लोदी को उन्होंने पराजित किया था। उनकी कीर्ति चारों ओर फैल रही थी। राणा के पुत्रों में चण्ड सबसे बड़े थे और गुणों में भी ये श्रेष्ठ थे। जोधपुर के राठौर नरेश रणमल्ल जी ने राजकुमार चण्ड के साथ अपनी पुत्री का विवाह करने के लिए चित्तौड़ नारियल भेजा। जिस समय जोधपुर से नारियल लेकर ब्राह्मण राज सभा में पहुँचा, राजकुमार चण्ड वहाँ नहीं थे। ब्राह्मण ने जब कहा कि 'राजकुमार के लिए मैं नारियल ले आया हूँ', तब परिहास में राणा लाखा ने कहा—'मैंने तो समझा था कि आप इस बूढ़े के लिए नारियल लाये हैं और मेरे साथ खेल करना चाहते हैं।' राणा की बात सुनकर सब लोग हँसने लगे।

राजकुमार चण्ड उसी समय राज सभा में आ रहे थे। उन्होंने राणा के शब्द सुन लिये थे बड़ी नम्रता से उन्होंने कहा परिहास के लिए ही सही जिस कन्या का नारियल मेरे पिता ने अपने लिए 'आया' कह दिया, वह तो मेरी माता हो चुकी। मैं उसके साथ विवाह नहीं कर सकता।'

सामवेद का हिन्दी पद्यानुवाद

उदीयमान कवयित्री श्रीमती मृदुल कीर्त्ति द्वारा
प्रस्तुत सामवेद का हिन्दी पद्यानुवाद
अब पुस्तक रूप में उपलब्ध है।
मूल्य 51 रुपये।

वेदों के अथक प्रचारक स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः जी के साठवें जन्म दिवस 13 मार्च 1988 तक आदेश आने पर यह अमूल्य ग्रन्थ केवल चालीस रुपये में लीजिए।

सम्पर्क सूत्र — वेद मन्दिर (महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम)
डाकघर अलीपुर, दिल्ली-36

डाक से मगाने पर बारह रुपये प्रेषण व्यय पृथक होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब तबला बाजे धीन-धीन

बैरगिया नाम का एक नाला है, जो एक बार ठगों के आश्रयस्थल (अड्डे) के रूप में कुख्यात हो गया था। वहां चोर और ठग साधुओं वेश के में रहते थे और इस मार्ग से आने-जाने वाले पथिकों को ठगा या लूटा करते थे। गेरुवे वस्त्र पहनकर मार्ग में बैठा एक चोर किसी भी राहगीर के आते ही परोपकारी साधु का स्वांग करके उससे यात्रा का दुःख-कष्ट पूछता और शीतल जल पीने तथा छाया में बैठकर थकान मिटाने का आग्रह करता। फिर वह बातों ही बातों में यह पता लगाता था कि यात्री के पास धन है या नहीं। धन या "दाम" वाला व्यक्ति फंसने की सूचना कुछ दूर पर बैठे अपने साथी ठग को देने के लिए वह ऊंचे स्वर में भगवन्नाम बोलता था —"दामोदर, दामोदर"। तब दूसरा धूर्त आता और पथिक को छलने के अनेक उपाय करता। जब वे देखते थे कि पथिक छलने में नहीं आता तो चिल्लाते "वासुदेव, वासुदेव" और यह संकेत पाते ही उनका तीसरा साथी बांस का लट्ठ लिये आता और पथिक पर टूट पड़ता था। इस प्रकार कोई भी व्यक्ति बैरगिया नाले से बिना लुटे जा नहीं सकता था।

एक बार नौ नृत्य-कलाकारों की मण्डली उस मार्ग से कहीं जा रही थी। चोरों ने उन्हें भी घेर लिया और जब उनके पास तबले-तम्बूरे के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला तो आदेश दिया कि और कुछ नहीं है तो नाच ही दिखाओ। विवश होकर वे नाचने की तैयारी करने लगे, पर उनमें से एक व्यक्ति को सोच हुआ कि हम नौ लोग हैं और ये तीन चोर हमें नचा रहे हैं। वह उठा और नाचने के बहाने हाव-भाव के साथ समझाते हुए गाने लगा—

"जब तबला बाजे धीन-धीन, तब एक-एक पर तीन-तीन" और जैसे ही तबले पर 'धीन-धीन" हुई, हर चोर पर तीन-तीन लोग झपट पड़े तथा चोरों को ऐसी सीख दी कि वे ठगी और लूट का धन्धा करना भूल गये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ल्ली का भविष्य और हमारा कर्त्तव्य

छले दिनों राजधानी में एक संगोष्ठी हुई। विषय था—"दिल्ली : अनेक महल्लों वाली राजधानी।" इस संगोष्ठी के मुख्य वक्ता विस्कान्सिन र्सिटी के प्रोफेसर रावर्ट फ्रोकेनबर्ग ने प्रश्न किया कि "यदि पृथ्वी पर नाम की कोई चीज है, तो क्या वह यही है?"

दिल्ली को एक शिविर बताते हुए प्रो० फ्रोकेनबर्ग ने कहा कि अपने दार अतीत और व्यापक विस्तार के बावजूद राजधानी में कोई ऐसा न नहीं, जिसे दिल्ली कह कर सम्बोधित किया जा सके।

दिल्ली का इतिहास बताते हुए उन्होंने कहा कि वर्त्तमान दिल्ली आक्रान्ता द्वारा बसाई गई है। आज भी दिल्ली के चारों ओर कोई दीवार । दिल्ली में महल्ले हैं, महल हैं, हवेलियां हैं और गांव हैं।

ब्रिटिश हाई कमीशन के श्री गेनर सार्टन ने कहा कि दिल्ली में फैशनेबल हैं तो गन्दी बस्तियों की भी कमी नहीं। एक ओर वृक्ष हैं, हरित स्थल पार्क हैं, पक्षी हैं, चौराहे हैं, गौएं हैं और ऊंट हैं, तो दूसरी ओर गरीबी प्रदूषण है, गलत ढंग से गाड़ियां चलाते लोग हैं, शाम के समय अखबार ने वाले बच्चे हैं। कुल मिलाकर वातावरण ऐसा है कि राजधानी की दरता नष्ट हो रही है।

वक्ताओं ने कहा कि दिल्ली की आबादी इतनी तेजी से बढ़ रही है कि द इसे न रोका गया तो सन् 2015 तक यह दो करोड़ तक पहुंच जायेगी। ाव दिया गया कि इस बढ़ती आबादी के खतरे को पहचाना जाये और जनाओं की सारी प्रक्रिया में सुधार किया जाये।

इन सब बातों से दिल्ली के भविष्य का पता चलता है। दिल्ली की स भावी अवस्था के अनेक कारण हैं। आबादी बढ़ रही है, शहरों की र पलायन हो रहा है और जमीन के धन्धे में निजी और सरकारी अराकता चल रही है। भारतीय समाज के सोचने का ढंग यह हो गया है क "जो भी, जैसे हाथ लगे ले भागो। इस कारण और अनेक अन्य कारणों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से लोगों को ग्रामों में अपना भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता है।

इस समस्या का समाधान यही है कि हमारी सभ्यता और ग्रामोन्मुख हो। हम भोग-विलास का जीवन न जी कर सादा जीवन उच्च विचार का आदर्श अपनायें।

दयानन्द संस्थान ने अपनी कार्यस्थली गुंजान शहरी क्षेत्र से सुदूर ग्राम में स्थानान्तरित करके एक ऐसा पग उठाया है, जी प्रशंसनीय ही, अनुकरणीय भी है।

—सत्यपाल

आचार्य प्रियव्रत और पं शान्ति प्रकाश पुरस्कृत

बम्बई। आर्यसमाज सान्ताक्रुंज द्वारा प्रवर्तित वेद-वेदांग पुरस्कार के लिए गुरुकुल कांगड़ी के भूतपूर्व आचार्य पं० प्रियव्रत जी का चयन गया। आर्य समाज मंदिर सान्ताक्रुंज में 26 जनवरी को वार्षिक के अवसर पर उन्हें एक अभिनन्दन पत्र, रजत ट्राफी, शाल तथा 2100 रुपये की थैली भेज कर सम्मानित किया गया।

इसके अतिरिक्त पं. शान्ति प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी को 11000 की थैली, रजत ट्राफी, शाल तथा अभिनन्दन पत्र भेंट कर वेदोपदेशक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

दोनों देश में फैले भ्रष्टाचार के कारण दुखी थे। सोच रहे थे कि की आर्थिक स्थिति में किस प्रकार सुधार लाया जाए।

'ऐसा कौन-सा तरीका है जिस से टैक्स भी बढ़ जाएं और जनता भी लाभ हो!" पहले ने कहा।

"मेरे खयाल में, इस देश में हर राजनैतिक भाषण पर टैक्स दिया जाना चाहिए," दूसरे ने काफी संजीदगी से कहा। × ×

उम्मीदवार बहुत ही ईमानदाराना शैली में बोल रहा था। "मैं मे भूमि-सुधार चाहता हूं, शिक्षा-सुधार चाहता हूं, आर्थिक सुधार चाहता हूं, राजनैतिक सुधार..."

इतने में एक श्रोता बीच ही में बोल पड़ा—"मैं पचास रुपया उधार चाहता हूं।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज की अनुपयुक्त शिक्षा न मानव-मानव में घृणा और द्वेष पाया है, नितान्त भौतिकवादी संस्कृति को जन्म दिया है, जो श्चमी ढर्रे की जीवन पद्धति की देन है, जिसमें इस जीवन को गना ही आदर्श है, जीना नहीं।

ांस्कृतिक प्रदूषण भी एक बड़ा खतरा है

—विश्वम्भरप्रसाद "गुप्तबन्धु'

हमारे परिवेश में जल-थल-वायु ही नहीं बल्कि वे सारे घटक महत्त्वपूर्ण हैं, जिनका कुछ भी प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है, जैसे हमारे चार, हमारे आचरण, हमारी संस्कृति आदि। अतः इन सबको षण से बचाना चाहिए। विपरीत बुद्धि यानी सदाचार त्याग कर कदाः र अपनाने से विनाश हो जाता है —"बुद्धिनाशात्प्रणश्यति" (गीता)।

अपने परिवेश के बीच अपने रहने के ढंग को ही हम सभ्यता कहते हैं। ने रहने के ढंग में भी हम बराबर सुधार करते रहते हैं और इसी को र अपनी सभ्यता की उन्नति या प्रगति कहते हैं।

भारत में 75% लोग देहात में रहते हैं और उनका मुख्य धन्धा कृषि। भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार आदिकाल से ही कृषि रहा है। रतीय सभ्यता और वैदिक संस्कृति वनों में और खेतों पर फली-फूली। कृषि ही मुख्य उद्यम होता था, जो आज भी है। अन्य सभी उद्यम इसी पूरक हुआ करते थे। उद्योग भी जो थे, कुटीरोद्योग या ग्रामोद्योग ही बने हैं, यानी उद्यम के ही रूप, जिनसे सभी की, जनसाधारण की समृद्धि होती ी। भारतीय संस्कृति उद्यम-प्रधान तो थी, उद्योग-प्रधान कभी नहीं रही (यानी स्वार्थ या सम्पत्ति पर बल कभी नहीं रहा) और यही कारण है इसके इतने दिन तक बने रहने का। मानव इसका केन्द्र और मानवता इसका धर्म है।

उद्योगीकरण पर आश्रित पाश्चात्य सभ्यता इसके ठीक विपरीत है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से लोगों को ग्रामों में अपना भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता है।

इस समस्या का समाधान यही है कि हमारी सभ्यता और ग्रामोन्मुख हो। हम भोग-विलास का जीवन न जी कर सादा जीवन उच्च विचार का आदर्श अपनायें।

दयानन्द संस्थान ने अपनी कार्यस्थली गुंजान शहरी क्षेत्र से सु ग्राम मे स्थानान्तरित करके एक ऐसा पग उठाया है, जो प्रशंसनीय ही, अनुकरणीय भी है।

—सत्यपाल

आचार्य प्रियव्रत और पं शान्ति प्रकाश पुरस्कृत

बम्बई। आर्यसमाज सान्ताक्रुंज द्वारा प्रवर्तित वेद-वेदांग पुरस्कार के लिए गुरुकुल कांगड़ी के भूतपूर्व आचार्य पं० प्रियव्रत जी का चयन गया। आर्य समाज मंदिर सान्ताक्रुंज में 26 जनवरी को वार्षि के अवसर पर उन्हें एक अभिनन्दन पत्र, रजत ट्राफी, शाल तथा 2100 रुपये की थैली भेज कर सम्मानित किया गया।

इसके अतिरिक्त पं. शान्ति प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी को 1100 की थैली, रजत ट्राफी, शाल तथा अभिनन्दन पत्र भेंट कर वेदोपदेशक पुर से सम्मानित किया गया।

दोनों देश मे फैले भ्रष्टाचार के कारण दुखी थे। सोच रहे थे कि की आर्थिक स्थिति में किस प्रकार सुधार लाया जाए।

'ऐसा कौन-सा तरीका है जिस से टैक्स भी बढ़ जाएं और जनता भी लाभ हो!" पहले ने कहा।

"मेरे खयाल में, इस देश में हर राजनैतिक भाषण पर टैक्स दिया जाना चाहिए," दूसरे ने काफी संजीदगी से कहा।

× ×

उम्मीदवार बहुत ही ईमानदाराना शैली में बोल रहा था। "मैं मे भूमि-सुधार चाहता हूं, शिक्षा-सुधार चाहता हूं, आर्थिक सुधार चा हूं, राजनैतिक सुधार..."

इतने में एक श्रोता बीच ही में बोल पड़ा—"मैं पचास रुपया उ चाहता हूं।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज की अनुपयुक्त शिक्षा न मानव-मानव में घृणा और द्वेष पाया है, नितान्त भौतिकवादी संस्कृति को जन्म दिया है, जो पश्चिमी ढर्रे की जीवन पद्धति की देन है, जिसमें इस जीवन को खाना ही आदर्श है, जीना नहीं।

सांस्कृतिक प्रदूषण भी एक बड़ा खतरा है

—विश्वम्भरप्रसाद "गुप्तबन्धु"

हमारे परिवेश में जल-थल-वायु ही नहीं बल्कि वे सारे घटक महत्त्वपूर्ण हैं, जिनका कुछ भी प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है, जैसे हमारे विचार, हमारे आचरण, हमारी संस्कृति आदि। अतः इन सबको प्रदूषण से बचाना चाहिए। विपरीत बुद्धि यानी सदाचार त्याग कर कदाचार अपनाने से विनाश हो जाता है —"बुद्धिनाशात्प्रणश्यति" (गीता)।

अपने परिवेश के बीच अपने रहने के ढंग को ही हम सभ्यता कहते हैं। अपने रहने के ढंग में भी हम बराबर सुधार करते रहते हैं और इसी को अपनी सभ्यता की उन्नति या प्रगति कहते हैं।

भारत में 75% लोग देहात में रहते हैं और उनका मुख्य धन्धा कृषि है। भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार आदिकाल से ही कृषि रहा है। भारतीय सभ्यता और वैदिक संस्कृति वनों में और खेतों पर फली-फूली है। कृषि ही मुख्य उद्यम होता था, जो आज भी है। अन्य सभी उद्यम इसी के पूरक हुआ करते थे। उद्योग भी जो थे, कुटीरोद्योग या ग्रामोद्योग ही बने रहे, यानी उद्यम के ही रूप, जिनसे सभी की, जनसाधारण की समृद्धि होती थी। भारतीय संस्कृति उद्यम-प्रधान तो थी, उद्योग-प्रधान कभी नहीं रही (यानी स्वार्थ या सम्पत्ति पर बल कभी नहीं रहा) और यही कारण है इसके इतने दिन तक बने रहने का। मानव इसका केन्द्र और मानवता इसका धर्म है।

उद्योगीकरण पर आश्रित पाश्चात्य सभ्यता इसके ठीक विपरीत है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वहां उद्योग के अर्थ में युक्ति, उपाय या प्रकारान्तर से यंत्रों द्वार सम्पत्ति बढ़ाने का प्रयास ही किया गया। इस उद्योग प्रधान स केन्द्र पूंजी है और धर्म स्वार्थ है। तभी तो मालिक-मजदूर के सारा वातावरण विषाक्त होता रहा है।

ग्रामीण संस्कृति बनाम नगरीय संस्कृति : उद्योगीकरण के फ भारत में भी पश्चिम के अनुकरण पर नगरीय संस्कृति फैली और फै रही है। किन्तु भारतीय संस्कृति देश के गांवों में बहुत कुछ सुरक्षि विशेषकर उन गांवों में जहां अभी नगरों की हवा नहीं पहुंच पाई। संस्कृति और नगरीय संस्कृति का अन्तर नीचे लिखी घटना से स जाता है—

एक यात्री कार से कहीं दूर किसी शहर की ओर जा रहा था में उसे कार में पानी डालने की आवश्यकता हुई। एक जगह एक कुएं से सिंचाई के लिए पानी निकाल रहा था। यात्री ने गाड़ी रोक पानी मांगा। किसान बाल्टी भर पानी ले आया। गाड़ी में पानी ड बाल्टी वापस देते हुए यात्री एक रुपया किसान को देने लगा। किन्तु आग्रह करने पर भी किसान ने रुपया नहीं लिया। वह यही कहता र आप यहां हमारे अतिथि हैं। आपकी कुछ सेवा कर सकें यह हमारा भाग्य है। कुछ देर बाद फिर पानी की आवश्यकता हुई। उसने स किनारे पानी मिलने पर गाड़ी रोकी और एक व्यक्ति से पानी मांगा। गाड़ी में डालकर यात्री ने बाल्टी वापिस देते हुए एक रुपया सी जिसे उस व्यक्ति ने धन्यवाद देते हुए ले लिया। शहर की ऊंची इ दिखने लगीं तो यात्री ने सोचा फिर से पानी डालकर ही आगे जाना पानी मिलने पर गाड़ी रोकी और थोड़ा पानी मांगा। "क्या मिलेग प्रश्न हुआ। यात्री ने एक रुपया दिखाया तो उत्तर मिला, 'नहीं, डेढ़ रु यात्री ने डेढ़ रुपया दिया और तब उसे गाड़ी में डालने के लिए पानी मि

यह रहा गांव और शहर की संस्कृति का अन्तर। गांव में अभ भारतीय संस्कृति जीवित है, किन्तु शहरों में पश्चिमी संस्कृति ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अड्डा जमा लिया है और धीरे-धीरे भारत की संस्कृति को हटाती हुई वह गांव की ओर फैल रही है।

निहित उद्देश्य : मानसिक प्रदूषण : उत्पादन बढ़ा कर सबको आवश्यकता की चीजें मुहैया करने के लिए उद्योगीकरण आवश्यक है, किन्तु किस रूप में यह सोचने की बात है। वर्तमान औद्योगिक प्रगति का मूल उद्देश्य कुछ लोगों द्वारा शेष लोगों के शोषण के अतिरिक्त और कुछ नहीं। अधिक से अधिक लाभ कमाने की दृष्टि से उत्पादन बढाया जाता है, फिर उसकी खपत के लिए कृत्रिम मांग पैदा की जाती है और इसके लिए व्यापक प्रचार करके (जो अधिकांश झूठा होता है) जन सामान्य को बहकाया जाता है। इस मनोवृत्ति के उदाहरण बड़े-बड़े भड़कीले, रंगबिरंगे और लम्बे-चौड़े विज्ञापन हैं, जो लोगों को अहितकर वस्तुएं (जैसे शराब, सिगरेट आदि) भी शौक से मोटी-मोटी कीमतें देकर खरीदने को प्रेरित करते रहते हैं। प्रेस, रेडियो, सिनेमा, टेलीविजन आदि इन्हीं उद्योगपतियों आदि के हाथ में हैं और ये जो विष मनुष्य के मन में घोलना चाहते हैं, डाल देते हैं। शुद्ध चिन्तन की शक्ति खोकर व्यक्ति उनके लिए उपभोक्ता बाजार का एक पुर्जा बन कर रह जाता है।

संस्कृति अपहारक शिक्षा : पहली औद्योगिक क्रांति इंगलैण्ड में हुई थी। ढेरों कच्चा माल एशिया और अफ्रीका के देशों से वहां जाता था और पक्का माल बनकर वापस उन्हीं देशों में बिकने जाता था। शोषण की यह मनोवृत्ति 1854 और 1859 के उन खरीतों से साफ झलकती है, जिनके फलस्वरूप कलकत्ता में (तत्कालीन उदारदलीय शासन के शब्दों में) "संस्कृति-अपहारक" अंग्रेजी शिक्षा देने के लिए विश्वविद्यालय स्थापित हुआ था। खरीतों में कहा गया था कि इससे योग्य और सच्चे कर्मचारियों के चुनाव के लिए पर्याप्त क्षेत्र मिलेगा और साथ ही विदेशी सत्ता के प्रति अभिरुचि उत्पन्न होगी, तथा कच्चे माल का उत्पादन बढ़ेगा, ये दोनों ही इंगलैण्ड के निर्माता उद्योग के लिए संजीवन हैं। मैकाले की अभिलाषा थी कि अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से भारत का "सभ्य" समाज रक्त और वर्ण से भारतीय रहते हुए भी रुचि प्रवृत्ति और आचार-विचार में अंग्रेज हो जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस प्रकार पूर्वी देशों की मानसिक शान्ति भंग करके उनमें आचार, विचार और संस्कृति का प्रदूषण आरम्भ किया गया और जोर-शोर से फैलाया जाता रहा। साम्राज्यवाद का अंत होने के बाद भी अंग्रेजी शिक्षा से पैदा हुई मानसिक गुलामी फैलती ही गई। रुचि, विचार और चिंतन प्रदूषित होते ही रहे और शिक्षा जैसे पवित्र और सशक्त माध्यम का उपयोग मानव संस्कार और मानवता विकास के लिए न करके हमारा सांस्कृतिक परिवेश बिगाड़ने के लिए किया जाता रहा। आजकी अनुपयुक्त शिक्षा ने मानव-मानव में घृणा और द्वेष पनपाया है, नितान्त भौतिकतावादी संस्कृति को जन्म दिया है, जो पश्चिमी ढर्रे की जीवन पद्धति की देन है, जिसमें इस जीवन को भोगना ही आदर्श है, जीना नहीं।

पाश्चात्य शिक्षा द्वारा फैलाई हुई आधुनिक संस्कृति (जो संस्कृति नहीं, विकृति ही है) शायद मानव इतिहास में पहली संस्कृति है, जिसने मानवीयता और मानवीय आधार की सब मौलिक समस्याओं की उपेक्षा की है। भारतीय संस्कृति के अनुसार जीविका उपार्जन के तीन स्पष्ट मार्ग हैं—उत्तम समाज को अधिक से अधिक देकर कम से कम लेना, जैसे शिक्षा। मध्यम, समाज की उचित सेवा करके उसका उचित प्रतिदान लेना जैसे व्यापार, और अधम, कम से कम सेवा करके समाज से ज्यादा से ज्यादा ऐंठ लेना, जैसे चोरी-ठगी। "अग्ने नय सुपथा राये" (अर्थात् हे सर्वशक्तिमन्, हमें उत्तम मार्ग से समृद्धि और ऐश्वर्य तक पहुंचाओ) और "मा गृधः कस्य स्विद् धनम्" (अर्थात् किसी की सम्पत्ति हड़प न करो) भारतीय संस्कृति के ही स्वर हैं, जिनकी अवहेलना हो रही है: आजकल दो पैसे में तैयार होने वाली दवा की गोली के लिए उपभोक्ता से तीस-चालीस पैसे वसूल करना व्यवसाय-कुशलता और चतुरता समझी जाती है। मूल्य वस्तु का नहीं, जरूरत का बल्कि विवशता का ही लिया जाता है। जान-बूझकर ही घटिया माल बनाया जाता है ताकि मांग बनी रहे, कारखाने चलते रहें। टिकाऊ माल बनाना पेशे के प्रति गद्दारी समझी जाती है। मरम्मत या

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुर्जे बदलाई नई चीज खरीदने से भी महंगी कर दी जाती है ताकि लोगों को पुरानी चीजें फेंककर नई खरीदनी ही पड़े। यह बरबादी का अर्थशास्त्र ही औद्योगिक प्रगति का मूल मंत्र है ।

उपयुक्त शिक्षा का अभाव

बुराई की ओर आकृष्ट होना मनुष्य की दुर्बलता है, किन्तु अपने को संयत रखना, मन का निग्रह करना और तृष्णा का दमन करना मनुष्य का स्वधर्म है। दुर्बलता और स्वधर्म में टकराव होने पर स्वधर्म की ओर झुकने के लिए प्रयास की आवश्यकता होती है, जिसकी शिक्षा आरम्भ से ही, बचपन से, स्कूलों में ही मिलना चाहिए। क्योंकि बचपन में अपनाए हुए संस्कार और विचार जीवन भर कायम रहते हैं। किन्तु ऐसी उपयुक्त शिक्षा जो सांस्कृतिक प्रदूषण मिटा सके, आजकल दी ही नहीं जाती।

हमें मिल रही है पाश्चात्य शिक्षा जिससे हम भी पश्चिमी रंग में रंग जाएं। किन्तु जिस पश्चिम को लोग आदर्श मान बैठे हैं, जिन पाश्चात्य विलासी प्रवृत्तियों को अपनाने के लिए लोग लालायित रहते हैं। जिन विकसित देशों को लोग अपना स्वर्ग समझते हैं, उनका कच्चा चिट्ठा अब सबके सामने है। संसार के सबसे धनी देश संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रति तीन सेकण्ड पर एक भयकर अपराध होता है यानी प्रतिदिन 28,800 अपराध वहाँ प्रति 31 सेकण्ड पर एक हिंसात्मक अपराध होता है प्रति 33 सेकण्ड पर एक मोटर गाड़ी चोरी जाती है, हर 5 सेकण्ड पर चोरी होती है, प्रति 10 सेकण्ड पर सेंधमारी, हर 78 सेकण्ड पर राहजनी-डकैती, हर आठ मिनट पर स्त्री के साथ बलात्कार तथा हर 27 मिनट पर एक हत्या होती है (कल्याण, "गीता प्रेस" गोरखपुर, सितम्बर 1979) और वहाँ के स्वास्थ्य की क्या कहिए दुनिया भर में सबसे ज्यादा डाक्टर अमेरिका मे हैं। वहाँ चिकित्सा पर सबसे ज्यादा खर्च होता है। लोग खुराक में विटामिन भी सबसे ज्यादा खाते हैं, फिर भी फौज के लिए स्वास्थ्य परीक्षा में 70 उम्मीदवार अयोग्य पाए जाते हैं। वहाँ के विद्यार्थी अल्प पोषित होते हैं कनाडा में 60 प्रतिशत नागरिकों में 80 प्रतिशत कैल्शियम की कमी है विटामिन "बी" 90 प्रतिशत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और प्रोटीन की 72 प्रतिशत की कमी होती है।

तो यह है पश्चिम की ऊंची दूकान का फीका पकवान। वहां से ह
क्या सीख सकते हैं ?

सांस्कृतिक प्रदूषण का मूल कारण

पश्चिमी सभ्यता दो-तीन शताब्दियों में ही पश्चिम को खोखला क
चुकी है और पूर्व में भी फैल रही है। सारी दुनिया का माहौल खराब
रहा है, परिवेश पूरी गहराई तक दूषित हो रहा है और इसका कार
बताया जाता है औद्योगिक या वैज्ञानिक प्रगति किन्तु। मूल कारण तो
दूषित मानसिकता, जो पाश्चात्य शिक्षा से मिल रही है और जिसके तेजी
विश्वव्यापी प्रसार के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय सरीखे सैकड़ों हजा
गगनचुम्बी अंग्रेजी स्कूल, कान्वेन्ट और कालेज दुनिया भर में खुले हैं। इ
प्रासाद पुंजों में से निकले हुए स्नातकों का मूल्यांकन करने से पता चले
कि भवन तो फैल गए हैं, मस्तिष्क सिकुड़ गए हैं। विश्वविख्यात शिक्षा
शास्त्री डा० राधाकृष्णन् के शब्दों में "भौतिक सुख पाने के लिए आ
भीतरी चरित्र की बलि चढ़ा दी गई है। असली शिक्षा वह है, जो सम्पू
मानव तैयार करे। ऐसी शिक्षा की जड़ें भारत की पुरानी परिपाटी में हैं।

एकमात्र इलाज—भारतीय शिक्षा

परिवेश सुधारने के लिए समग्र दर्शन जरूरी है। औद्योगिक प्रग
रोकने की नहीं, बल्कि उसके पीछे काम करने वाली दूषित विचारधारा
बदलने की आवश्यकता है। मानव प्रयासों को उपयुक्त दिशा देनी चाहिए
संस्कृति को विकृत होने से बचाना चाहिए। इसके लिए एकमात्र इला
है भारतीय शिक्षा, जिसमें मानवता के तत्त्व कूट-कूटकर भरे हैं। लो
अपना जीवन ठीक तरीके से बिता सकें—यही उसका उद्देश्य है और "स
भवन्तु सुखिनः" ही उसका आदर्श है। भारतीय संस्कृति सभी विरोधों क
सामना करके भी बनी रहने वाली शाश्वत संस्कृति है, समग्र चिन्तन क
संस्कृति है, और सच्चे अर्थों में मानव संस्कृति है। अति यन्त्रीकरण से दूर
ग्रामोद्योगों से भरपूर और कृषि-प्रधान देश की कृषि-प्रधान विचारधार
ही ग्राम्य संस्कृति का मूल है।

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द के जीवन की कहानी, चित्रों की जुबानी

—अमरनाथ आर्य

महाशिवरात्रि का यह पर्व 365 दिन का चक्कर लगाकर एक बार पुनः हमारे जीवन में आ रहा है, जो हमारे जीवन-झूले को कल्याण-कामना का हिलोरा दे कर पुनः सृष्टि-क्रम में लीन हो जाएगा। आर्य जगत् जिसे परम्परागत रूप के साथ एक विशिष्ट रूप में भी मनाता है और वह रूप है ऋषि बोधोत्सव।

लगभग 152 वर्ष पूर्व इसी अंधेरी रात्रि में भारत-गगन में ज्ञानालोक बिखेरता एक वेद-विधु उदय हुआ, जिसने अपनी सत्य-साधना से हुंकारते अज्ञान-उदधि को शान्त कर दिया था। उसी की अनूठी जीवन-यात्रा का स्मरण कर उस दिन आर्य जगत् उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है। अतः अर्पित है उन्हीं के चरणों में यह श्रद्धांजलि कहानी : चित्रों की जुबानी।

संयोग से, अजमेर जाकर मुझे प्रदर्शनी-भवन देखने का सुअवसर मिला, जहां निपुण चित्रकार ने ऋषि-जीवन-सुषमा को कल्पना-तूलिका से सत्य के रंग में डुबो कर उकेरा है, जिसकी छाप सहृदय मस्तिष्क पर गहरी पड़ती है।

प्रथम भित्तिचित्र में सौभाग्यवती जननी उस अद्भुत शिशु को समोद अंक से लगाए लोरी गाने की मुद्रा में बैठी है और अंकशायी शिशु सोल्लास मां की ओर निहार रहा है। फिर चूड़ाकर्म व वेदारम्भ आदि संस्कारों के भव्य चित्र हैं, जिनकी छाया में वह महान् जीवन-पुष्प विकसित हुआ।

और फिर है ऋषि-बोधोद्गम-शिवालय का वह चित्र, जिसमें बोध प्राप्ति के रूप में संसार को ज्ञानालोकित करती उस अन्धकाराच्छन्न शिवरात्रि का वह दृश्य है, जहां अर्धरात्रि में निष्ठावन् बाल-जिज्ञासु मूलशंकर अपने निद्राभिभूत परिजनों के बीच श्रद्धापूर्वक अडोल दीपशिखा सम, अपलक नयन शिवलिंग की ओर निहार रहा है, जिसकी स्नेहिल चिन्तनशील भाव-

---

विलम्ब से आने के कारण यह रचना पिछले अंक में प्रकाशित न हो सकी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दशा ऐसी लगती है जैसे वह विश्व-रहस्य का अनुसन्धान कर रहा हो ।

इस प्रबोधक घटना चित्र से आगे दो अन्य धार्मिक चित्र अंकित हैं, जिनमे एक उनकी मरणासन्न छटपटाती छोटी बहिन का और दूसरा है उनके कालकवलित चाचा का । जहां बहिन के समीप विरक्त मूलशंकर सहमा-सा, मृत्यु का अर्थ जानने का प्रयत्न करता मलूम होता है, वहां मरणासन्न चाचा के समीप खड़े, उनके लोचनों से अविरल अश्रुधारा ढर रही है । लगता है जैसे मूलशंकर रूपी लघु सजल शैल-शृंग के मर्म पर प्रियजन-मृत्युवज्र ने ऐसी मर्मान्तिक चोट की है कि वह स्नेहिल निर्झर बरबस छलछला कर फूट पड़ा हा ।

और फिर माता-पिता की ममता को तृणवत् तोड कर सच्चे शिव की खोज में घर से भागने व ठगों द्वारा हीरे की अंगूठी आदि लुटवाने का कारुणिक दृश्य । सिद्धपुर के मेले में चिन्ताव्यग्र पिता द्वारा पकड़े जाने का मार्मिक दृश्य, बीहड़ वन में खूंखार भालू से मुठभेड़ का हृदयविदारक दृश्य, भिड़ते हुए दो मदांध सांड़ों को सींगों से पकड़ कर अलग करने का रोमांचकारी दृश्य, अपने विरोधियों द्वारा अपने पर फैंके गये फुफकारते विषधरों को जीवित छोड़ने का भयानक दृश्य और पत्थरों की बौछारों को पुष्पवत् झेलने के लोमहर्षक दृश्य अंकित हैं जिनकी रेखाओं में चित्रकार का हृदय लिपटा-सा जान पड़ता है । पर हर स्थान पर सत्यान्वेषक दयानन्द चट्टान की भान्ति अचल दिखाई देता है ।

अगले चित्र में वही अचल शिला तरल आंसुओं में ढरती दिखाई देती है, जहां सृष्टि-क्रम-प्रतिनिधि मां के रूप में एक अभागी भारतीय देवी अपनी मृत सन्तान को ढकने के लिए अपने अधोवस्त्र से फाड़े गये पल्लू में लपेटे उसे गंगा की गोदी में विसर्जित कर कफन के उस टुकड़े को पुन: अपनी धोती में जोड़ने के लिए सहेजते हुए, जब वापस जाने लगती है, तो दीनबन्धु दयानन्द ने, जो उस अमानवीय दृश्य को ध्यानपूर्वक देख रहे थे, उस हत-भाग्य जननी से इसका रहस्य पूछा । फिर वह भावुक साधु भारत की अतीत समृद्धि का स्मरण करता है—जिसे कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर जो अब विदेशी घोर शोषणस्वरूप कागज की पुड़िया बन कर रह गया था। इसे देखकर देव दयानन्द का दयालु हृदय क्रन्दन कर उठा और देश की उस दारुण दशा पर वह करुणालय रोता है।

अगले चित्र में व्याकरण-सूर्य गुरु विरजानन्द की पावन कुटिया में सच्चे शिष्य दयानन्द का आगमन तथा आदर्श गुरु को आदर्श शिष्य द्वारा, आदर्श गुरु-दक्षिणोपरान्त विश्व कल्याण हित आदर्श कर्म-क्षेत्र की ओर उसके प्रत्यावर्त्तन का अपूर्व दृश्य अंकित है।

अगले भित्तिचित्रों के समग्र अध्ययन से लगता है कि ऋषि-जीवन-संवेग-सरिता अब कुछ अनुकूल, परिस्थिति-परिवेश-समतल पा कर अधिक सुस्थिर, गम्भीरता में प्रविष्ट हो गई है। अतः अगले चित्र में उच्चासन विराजमान महर्षि देशभक्त सर्वश्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, केशवचन्द्र सेन और सर सय्यद अहमद खां के साथ देश-दुर्दशा पर विचाररत दिखाए गए हैं। स्वामी जी के ओजस्वी आनन से व्यग्रता और अन्यों से चिन्ता टपकती है, जिससे मालूम होता है कि ऋषिवर विचार दे रहे हैं और अन्य सुन रहे हैं।

साथ वाले चित्र में दया-सिन्धु दयानन्द को भारतीय अर्थ-मूल गोधन के लाभ बताते हुए कर्नल ब्रुक्स के साथ विचारमान दिखाया गया है। ऋषिवर यहां भाव निमग्न हैं और ब्रुक्स की भाव-भंगिमा से लगता है कि स्वामी जी के विचार-बिन्दु उसकी हृदय-सिकता में समाते हुए उसे सहमत करते जा रहे हैं।

समाज सुधार के एक अन्य चित्र में महर्षि को तत्कालीन वाइसराय लार्ड नार्थब्रुक के साथ साक्षात्कार निरत दिखाया गया है जहां अचल-शिला-सम आसनासीन दयानन्द भारत की स्वाधीनता का सदेश देते हुए चित्रित हैं। वाइसराय के यह पूछने पर कि पण्डित दयानन्द, भारत को ब्रिटिश-प्रदत्त सुव्यवस्था वरदान के सम्बन्ध में अपनी प्रशंसा के कुछ उद्गार प्रकट करेंगे, और अपने उपदेशों में की जाने वाली प्रार्थनाओं में भारत पर ब्रिटिश शासन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बने रहने की प्रार्थना भी करेंगे ?" उस निर्भीक संन्यासी ने निस्संकोच मुंहतोड़ उत्तर देते हुए गुरु गम्भीर वाणी में कहा कि मैं किसी भी स्थिति में ऐसे प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकता। मैं तो चाहता हूं कि मेरे देशवासियों के विकास के लिए और संसार में सम्मानपूर्वक जीने के लिए भारत शीघ्र ही स्वाधीनता प्राप्त करे। मैं तो प्रतिदिन यही प्रार्थना करता हूं कि प्रभु शीघ्र हमारे देश को ब्रिटिश पंगुल से छुटकारा दिलाए, ताकि यह निर्धन देश शोषण से और अधिक दरिद्र न हो जाये। फिर वह क्रान्तिकारी ऋषि-जीवन-पयस्विनी नये मोड़ लेती हुई भारतीय नरेशों की गगनचुम्बी अट्टालिकाओं की ओर अभिमुख होती है, क्योंकि अब महर्षि भांप गये थे कि जब तक भोगनिरत ये शक्तिकेन्द्र भारतीय भू स्वाधीनता-संग्राम में अपना योगदान नहीं देते, तब तक सफलता असम्भव है। अतः अगले चित्र में ऋषि देश की शोचनीय स्थिति पर जोधपुर नरेश से विचार करते दिखाए गये हैं। गम्भीर विचार विनिमयस्वरूप ऋषि के मुखारविन्द से चिन्ता टपकती है और राजा किसी सम्भावित संकट से सहमा-सा है।

फिर इस कलुषनिकन्दनी ऋषि जीवन-धारा को अन्तिम मोड़ देने वाला है वह दुर्भाग्यपूर्ण दृश्य, जिसमें जोधपुर नरेश को नन्ही जान वेश्या की शिविका उठाए देख वह सिंह संन्यासी अपने सबल हाथ में कड़कदार लाठी थामे इस निंदित कृत्य के लिए राजा पर दहाड़ रहे हैं और नतग्रीव नृप भीगी बिल्ली बना जीवनदायिनी फटकार सुन रहा है। वह स्पष्टवादी वीतराग सिंहनाद करते हुए प्रजापालक-राजपुरुषों को सिंह-सदृश बताते हुए उन्हें वेश्यागमन त्याज्य और अनिष्टकारी बता रहे हैं। इस दोहरे दृश्य में पर्दे की ओट से नन्ही जान यह सब कुछ देख-सुनकर अपने आग्नेय नेत्रों से वह हलाहल उगल रही है, जिसकी विषमय आंच में वह परमहंस शीघ्र ही झुलसने वाला है।

और अगला चित्र है पाचक जगन्नाथ द्वारा दयानन्द को सतारहवी और अन्तिम बार जहर देने का, जिस में नत-नयन जगन्नाथ अपनी धिक्कारती आत्मा और कांपते हाथों से कांचमिश्रित विषाक्त दुग्ध-पात्र थमाने के रूप

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
में उस युगपुरुष के अमूल्य जीवन से खिलवाड़ करते हुए एक युग का अन्त करने का घोर अपराध कर रहा है और वह क्रान्तद्रष्टा योगी दुग्ध पात्र थामने के लिए अपने कर-कमल को आगे बढ़ा रहे हैं। अगले चित्र में भव-दुःख-विपपायी, गरल-गलित शरीर, पर तेजोदीप्त मुख-मण्डल दयानन्द अपने जान लेवा अपराधी को भी अभय दान देते हुए उसे धनपोटली थमा रहे हैं ताकि वह वहाँ से सकुशल भाग जाये। इस प्रकार वह अद्भुत दयालु अद्भुत दयादान कर अपना दयानन्द नाम सार्थक कर जाता है।

अगले दृश्य में उस उच्चात्मा को दूरागत गुरुदत्त विद्यार्थी अपलक निहार रहे हैं। लगता है ध्यानमग्न हो वे नजरों से कुछ पी रहे हों। फिर आभा-मण्डल सुधा-स्रोत से उन्हें वह जाम मिला, जिसके पान से गुरुदत्त आजीवन वैदिक गीत गाते अमर हो गये।

अब साथ वाले चित्र में संसार लीला को तृणवत् त्यागते हुए महर्षि अपने प्रभु से अन्तिम प्रार्थना करते हैं—'हे दयामय सर्वशक्तिमन् ईश्वर, तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो। इसके साथ ही उन्होंने आंखें बन्द कर लीं, जो वे फिर न खोल सके, पर वे अपनी आँखें बन्द करके अपने देशवासियों की आंखें खोल गये। आज का आर्यसमाज, जिसकी स्थापना उन्होंने 10 अप्रैल 1875 को बम्बई में की थी, आर्य जाति की इन्हीं खुली आँखों की दास्तान है।

वहाँ चित्रित अन्तिम चित्र है उस महान् जीवन-नाटक के अवसान का, जिसमें उस हुतात्मा के पार्थिव शरीर को सोलह व्यक्ति उठाए अन्तिम संस्कारार्थ लिये जा रहे हैं। दाईं ओर पं. गुरुदत्त और बाईं ओर महात्मा हंसराज ने भी कांधे लगाए हैं।

इस तरह उस देवदूत दयानन्द की जीवन घटनाओं का चित्रावलोकन कर मेरा मन अभिभूत हो उठा और मेरी बुद्धि-अबला, ऋषि-समर्थ-सरिता को अलभ्य जान वर्णन-असमर्था तट पर ठिठकी-सी रह गई और प्रदर्शनी भवन की प्रशंसा करते ऋषि-चरण-चिन्हित अजमेर भूमि को देखने मैं बाहर आ गया।

पर आज शिवरात्रि हम युवकों से प्रश्न-सी करती मालूम होती है कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द के देशवासियों ने ज्ञान की वह लगन, सच्चाई की वह तड़प, उत्सर्ग का वह जज्बा और सर्वकल्याण की वह कामना कहां खो दी है ? आज सर्वत्र स्वार्थ का साम्राज्य क्यों है और सरेआम मानवीय मूल्यों का गला क्यों घोंटा जा रहा है ? ऋषि ने हमें यह तो नहीं सिखाया था ।

मूलशंकर की तरह आज अगर हम इसका जवाब ढूंढ़ सकें तो मैं समझूंगा कि हमारा शिवरात्रि मनाना सार्थक हुआ ।

जन-ज्ञान मासिक के नियम

1. 'जनज्ञान' के पाठक पत्रव्यवहार करते समय अपनी सदस्य संख्या अवश्य लिखें । (सदस्य संख्या 'जन-ज्ञान' के रैपर पर लिखे पते पर अंकित रहती है ।)
2. 'जन-ज्ञान' प्रतिमास तीन या चार तारीख को पाठकों को भेज दिया जाता है ।
3. मास के अन्त तक 'जन-ज्ञान' न मिले तो शिकायत आने पर दोबारा भेज दिया जाता है ।
4. कागज, छपाई और डाक-शुल्क में अत्यधिक वृद्धि के कारण फरवरी सन् 1987 से 'जन-ज्ञान' की एक प्रति का मूल्य तीन रुपये पचास पैसे कर दिया गया है । वार्षिक मूल्य पैंतीस रुपये है ।
5. शुल्क समाप्ति की सूचना प्रत्येक सदस्य को एक मास पहले भेज दी जाती है । पत्र के साथ मनीआर्डर फार्म और पोस्टकार्ड संलग्न रहता है ।
6. कृपया आगामी वर्ष के लिए नया शुल्क मनीआर्डर द्वारा तुरन्त भेज दिया करें । मनीआर्डर न मिलने पर अगला अंक वार्षिक शुल्क के साथ वी. पी. द्वारा भेजा जायेगा । वी. पी. में 7 रु. 50 पैसे का डाक व्यय अतिरिक्त लगता है, जिसका लाभ न तो सदस्यों को होता है और न ही संस्था को ।
7. 'जन-ज्ञान' की वी. पी. वापिस आने पर संस्थान को 7.50 पैसे की हानि उठानी पड़ती है । अतः सदस्यों से निवेदन है कि वे (हमारे भेजे पोस्ट कार्ड पर) उत्तर देने की कृपा अवश्य किया करें ।
8. जनज्ञान का विशेषांक न मिलने पर दोबारा रजिस्ट्री से ही भेजा जायेगा इसके लिए न मिलने की शिकायत के साथ दोबारा भेजने हेतु पांच रुपये अवश्य भेजें ।

—प्रबन्धक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेजी छोड़िये, हिन्दी अपनाइये

—सन्तोष 'कण्व'

तमिलनाडु के लोगों को भय है कि उन पर हिन्दी थोपी जा रही है। ईसाई मिशनरियों के स्कूलों में पढ़े तथा भारत विभाजन के ३९ वर्ष बाद भी जीवित अंग्रेजों के मानस- पुत्रों को डर है कि अंग्रेजी हटाकर उनके विशेषाधिकारों को चुनौती दी जा रही है।

हमारा कहना है—न किसी पर हिन्दी थोपो—न देश से अंग्रेजी हटाओ, क्योंकि न तो हिन्दी का जीवन-मरण किसी की कृपा व कोप पर निर्भर है और न ही खण्डित भारत में अंग्रेजी का भविष्य उसके मुट्ठी-भर चहेतों पर। इस देश में वही भाषा विकसित होगी, जो राष्ट्रीय एकता व अखण्डता की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ एवं सक्षम होगी।

फिर, क्या इस भाषाई उन्माद में हम एक तटस्थ मूकदर्शक हैं? नहीं। हमारा कहना है—अपनी-अपनी भाषा सुधारो; वह भी इस तरह—

'Letter post' करने को 'पत्र प्रेषित' करना कहते हैं। जहां प्रेषण का कार्य होता है, वह 'प्रेषालय (Post office) कहलाता है। ठीक वैसे ही, जैसे—कार्यालय, वाचनालय ।

'पत्रालय' भी चलता है। 'प्रेषालय' अधिक व्यावहारिक है। पुस्तकालय, औषधालय, हिमालय की परम्परा में ही आता है—'पत्रालय'

प्रेषालय का एक अधिकारी होता है 'जिसे Postmaster कहते हैं। क्यों न हम 'प्रेषाधिकारी' कहें। कर्णप्रिय। टर-टर से भी मुक्ति।

Post-master-general—महाप्रेषाधिकारी।

आप प्रेषालय के बिक्री केन्द्र से Post-card लाते हैं। इसे 'प्रेष-पत्र' कहते हैं, जैसे Inland letter को 'अन्तर्देशीय पत्र'।

भारत के बाहर आपका कोई प्रिय है। पत्र भेजना है। Air mail (पवन प्रेष) से जाएगा।

Aerogram—'पवन प्रेष-पत्र'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप पूछते हैं—कितना postage लगेगा। 'प्रेष शुल्क' पूछिए। 'प्रेष' भी चलेगा।

Postage-stamp प्रेष-मुद्रांक।

Post-man का कार्य आपके पास तक पत्रों को पहुंचाना होता है। उसे 'पत्र वाहक' कहिए। सर्वोत्तम तो 'पत्रवाह' ही रहेगा।

आपको कुछ धन भेजना है। प्रेषालय में दो प्रकार हैं—Money order से—Postal order से।

Post order प्रेषादेश। Money order—धनादेश।

Bank से भेजना हो, तो Cheque और Bankdraft।

Bankdraft अर्थात् 'अधिकोष-विकर्ष'। 'विकर्ष' भी चलेगा। अधिकोषण—Banking। अब आप पूछेंगे—Cheque को क्या कहें?

तो भाई! Money order को 'धन-प्रेष' कर लें और Cheque को 'धनादेश'। थोड़ा परिवर्तन है। प्रेषालय से धन ही तो प्रेषित करना है। 'धन-प्रेष' चल जाएगा। सुगम-सुबोध।

Money order form—'धन-प्रेष-पत्र'।

Registered Post से कुछ भेजना हो तो ऊपर लिखें—'पञ्जीकृत प्रेष'। साथ में Acknowledgement letter लगाना हो तो 'अभि-स्वीकृति-पत्र' भी टंकित कर दीजिए। प्रापक के हस्ताक्षर होने के बाद आपके पास वापस आ जाएगा। आपको पत्र प्राप्ति की स्वीकृति ही तो चाहिए।

Under certificate of posting के स्थान पर प्रेष-प्रमाण-पत्रान्तर्गत' प्रयोग कीजिए और U.P.C. के स्थान पर 'प्रे. प्र. प.' अभी खटपटा लगता है। जब चलेगा तो यही चटपटा लगेगा।

Book-post से कुछ भेजना हो तो Envelope पर लिखिए 'पुस्त-प्रेष'। Printed matter के लिए 'मुद्रित सामग्री'। कम संख्या में Prin-ted papers भेजने हों तो चलेगा-'मुद्रित-प्रपत्र।' 'मुद्रित प्रेष' भी चल सकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह जो Envelop शब्द है, इसका अर्थ होता है—आवरण। साहित्य और विज्ञान के क्षेत्र में एक शब्द प्रचलित है—वेष्टन। 'लिफाफा' के स्थान पर 'वेष्टन' चल सकता है। संकल्प और सहयोग चाहिए। चलाएंगे तो चलेगा।

क्षण, हर्ष के हों या शोक के; असामान्य परिस्थितियों में सन्देश शीघ्र ही भेजना होता है। आप Telegram करते हैं। सम्बन्धित कार्यालय से आप को एक Telegraph form मिलता है। ऊपर बाईं ओर आप लिखते हैं—पाने वाले का नाम व पता, बीच में सन्देश, नीचे दाहिनी ओर भजने वाले का नाम और सबसे नीचे होता है, आपका अपना पता जो सम्बन्धित कार्यालय में ही अंकित रहता है। इस पते के ऊपर लिखा होता है—'Not to be telegrphed' अर्थात् 'अदूरलेख्य'

Telegram के लिए 'तार' शब्द प्रचलित है। परन्तु अकेले 'तार' से काम तो नहीं चलता।

'Tele' उपसर्ग है—'दूरार्थक'। शोभा तो एकरूपता में है।

Tele-communication—दूरसंचार, Tele-printer--दूरमुद्रक, Tele-vision—दूरदर्शन, Tele-phone—दूरभाष, Tele-pathy—दूरानुभूति, Tele-gram—दूर लेख, Telegraph—दूर लिख, Telegraph Department—दूरलेख विभाग, Telegraph-operator—दूर लेखक।

कभी-कभी Telegraphic Money Order भेजना पड़ता है। इसको कहिए—'दूर लेख धन-प्रेष'।

आप कहीं आवेदन (apply) करते हैं। आवेदन पत्र में photograph लगाना होता है। यह आपका 'भा-चित्र' होता है। भा-प्रकाश (photo)।

'Photo-grapher' अपने Camera से आपका Photograph लेता है; इसे ऐसे पढ़िये—

'भाचित्रक अपने रूपित्र से आपका भाचित्र लेता है।' Camera—'रूपित्र'। रूप ही तो उतारता है। चित्र खींचने वाला 'चित्रक'।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आजकल Photo Album का बहुत प्रचलन है। इसको कहिए 'भा-चित्र पञ्जी'।

कभी-कभी हमें कुछ पत्रों की Photo stat copy करानी पड़ती थोड़ा प्रयास करें तो 'भा-ऋजुचित्र' चल सकता है। चलने को 'ऋजु' भी चलेगा, और सबसे अच्छा रहेगा।

'मोहन! जाओ, इन पत्रों के कुछ ऋजुचित्र करा लाओ।'

तकनीकी विकास से कार्यालयी शब्द-कोश में एक शब्द आया — Cyc style। संज्ञा भी और क्रिया भी।

क्रियावाचक के लिए—'चक्रलेखन' और संज्ञावाचक के लिए 'चक्रलेखि

'अशोक! इस प्रपत्र (Circular) का चक्रलेखन होना है। करा लाओ।'

बस, थोड़ी देर में आपका Cyclostyled Circular तैयार। लेकिन कहिए—'चक्रलेखित प्रपत्र'।

चक्रलेखन के लिए चाहिये Stencil Paper; अर्थात् 'निकृन्त-पत्र' निकृन्त संज्ञा है। क्रिया है—निकृन्तांकन।

टीन व गत्ते की Stencil Plate कटती है। इसे कहते हैं 'निकृन्त पट्टिका'।

भोज-पत्र, ताड़-पत्र, ताम्र-पत्र की परम्परा में Carbon Paper 'अंगार पत्र' और Tracing paper को 'अनुरेखण-पत्र' कहते हैं।

मेरा परिचित है 'राजीव'। प्यार से कहते हैं—राजू। अत्यन्त मृदुभाषी और व्यवहारकुशल है। निर्धनता के कारण स्कूली शिक्षा नहीं प्राप्त कर सका। पिता चल बसे तो परिवार के पालन-पोषण का भार भी आ पड़ा सो बाल काटने का काम सीख गया। एक दिन आया और बोला—जी! हेयर कटिंग सैलून खोला है। परसों शुभारम्भ है, अवश्य आइएगा।

मैंने पूछा – तुमने दुकान का नाम क्या रखा है? बोला—राजू हेयर कटिंग सैलून। ठीक है न? मैंने कहा—बुरा तो नहीं है; परन्तु अच्छा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं है। बोला – फिर आप ही कोई नाम बताइए। मैंने सुझाया—'राजू केश-कल्पन केन्द्र'।

शुभारम्भ हुआ। दुकान की नाम-पट्टिका देख पहले तो लोग चौंके, फिर हँसे; लेकिन 'केश-कल्पन' ऐसा लोकप्रिय हुआ कि छोटे-छोटे बालक भी अपने पिता से कहने लगे, पिताजी ! केश-कल्पन कराना है।

आपकी राष्ट्रभाषा समृद्ध है। आपमें स्वाभिमान होना चाहिए। 'मुण्डन' की भांति 'कल्पन' भी सम्पूर्ण भारत में ग्राह्य है।

Hair-dresser—केश-प्रसाधक।

अकस्मात् अन्धकार हो जाए तो आप Torch (टार्च) मांगते हैं। ऐसा कहिए—

वेश ! करदीपिका तो लाना। यहाँ तो अन्धाकुप्प है।'

'करदीपिका' जलाइए – अंधेरा भगाइए।

कार्यालयों की तो बात ही क्या, अब तो विद्यार्थी भी calculator से गणना करने लगे हैं। जिससे गणना करें उसे 'गणक' कहिए। computor को 'संगणक'।

आप सिलाई का काम जानते हैं—दुकान पर नाम-पट्ट लगाना है। लगाइए। नाम रखिए—'भारत सीवन केन्द्र'। 'Rama tailors' की क्या आवश्यकता हैं ? 'राम सिलाई केन्द्र' से भी तो काम चल सकता है। चलाइए।

sewing—सीना, sewing-man--सीवक, Sewing-teacher—सीवन शिक्षक, Tailor—सूचिक।

printing press (मुद्रणालय) का एक प्रमुख विभाग होता है—composing section। इसको 'अक्षर-योजन विभाग' कहिए। Reading—proof-reading section को ईक्ष्य-वाचन विभाग' Compositor—अक्षर-योजक। 'वाचन' तो बहुत प्रसिद्ध है।

घर में बिजली है। आप कहते है Light on कर दो। यह दोषपूर्ण है। Siwtch on करने से light (प्रकाश) होती है। अभिप्राय गृह-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विद्युत्-परिपथ में धारा प्रवाहित करने से है। Switch on से धारा ब
लगती है, जबकि switch off करने से बन्द हो जाती है।

Switch on-'संयुतन' (सम्बद्ध करना)। Switch off-'वियु
(विच्छेद करना)।

धारा प्रवाहित कर दो—संयुतन कर दो।

धारा बन्द कर दो—वियुतन कर दो।

Switch board -संवियुत-पटल।

अब तो घरों में गैस के चूल्हे पर भोजन पकाया जाता है। Gas Cylinder को कहते हैं—'वाति-रम्भ'। Gas-वात। Gastric trouble—'वात रोग। 'कुम्भ' (घड़ा) का ही सखा है—'रम्भ'।

Cylinder के ऊपर rugulator होना है। Gas-regulator-'वात-नियामक'। नियमित करने वाला—'नियामक'।

घरों व कार्यालयों में Cooler का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। Cooling—'शीतन'। Cooler—'शीतक'।

Heater और Freez भी आवश्यक वस्तुओं में सम्मिलित हो चुके है। Heater के लिए शब्द है। 'तापक' और Freez के लिए 'श्यानक'। Freezing Machine (श्यान-यन्त्र) को 'श्यानक' कहते है। Freezing point—श्यानांक'। Boiling point—'बुद्बुदांक'। Melting point—'द्रावांक'।

Refrigerator—'प्रशीतक'।

एक बहुप्रचलित पात्र है—Thermos। इसे 'स्थिरतापिका' कहा कीजिए। ताप स्थिर रखता है, इसलिए 'स्थिरतापिका'।

आपको Lighter की आवश्यकता पड़ती है। Lighter को 'ज्वालक' कहने का स्वभाव डालिए। पालने वाले को 'पालक'—जलाने वाले को 'ज्वालक'।

Match-box भी ज्वालक है। माचिस या दियासलाई भी कहते है। आप 'दीपेपिका' कह सकते हैं। दीप जलाने वाली—'दीपेपिका'।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Electric-lamp को 'विद्युत् दीप' कहिए। Electric bulb को 'विद्युत कन्द'। Electric generator—'विद्युत् जनित्र'।

Fuse-wire—'ज्वाल तन्तु'।

नगरों में लोग पूछते हैं—आपके क्षेत्र में अभी तक Sewage system नहीं चालू हुआ।

इसे 'मल-प्रवाह-प्रणाली' बोलिए तो लोग भाव भी समझ जाएंगे। Sewage—'मल प्रवाह'। Sewage drain—'मल प्रवाह'।

'शौचालय के होते हुए भी लोग Latrine के चक्कर में पड़ गए। अच्छा भला 'स्नानागार' है, व्यर्थ ही Bathroom की क्या आवश्यकता ? 'पाकशाला' के होते हुए Kitchen room की आवश्यकता ? 'रसोई घर' से भी तो काम चल रहा था !

तकनीकी शिक्षा (Technieal education) प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी को Apprenticeship करनी पड़ती है। इसे 'प्रशिक्षण' कहते हैं। शिक्षण के पश्चात् 'प्रशिक्षण'

'अरे भाई ! आजकल क्या कर रहे हो ?'

'Apprenticeship चल रही है।'

'कितना stipend मिल रहा है ?

Stipend को 'वृत्तिका' कहिए—salary को 'वेतन'। Fellowship—'अध्येतावृत्ति'। Scholarship छात्रवृत्ति।

आप Train में यात्रा करते हैं। जब भीड़ अधिक होती है, तो सुनते हैं—Traffic बहुत बढ़ गया है।

बहुप्रचलित शब्द है—'यातायात'। Traffic के स्थान पर प्रयोग कीजिए। Traffic Inspector—यातायात निरीक्षक।

Train को लोकभाषा में 'गाड़ी' कहते है। पंजाब में गड्डी कहते है। आप संयान कह सकते है। 'यान' का परिवार बहुत बड़ा है।

Aeroplane—वायुयान, Steamer—वाष्पयान, Ship—जलयान, Train—संयान, Space-Shuttle—अन्तरिक्षयान, Motor-car—वहित्र-यान, Bus—सर्वयान, Taxi—भाटकयान, Goods train—भाण्ड संयान,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Rickshaw (रिक्शा)—नरयान, Tonga (तांगा)—अश्वयान, Bycycle—द्विचक्रयान/द्विचक्री, Truck—भाण्डयान/भाण्डवाही।

अधिकतर यन्त्रों व वाहनों में Diesel इंधन का प्रयोग होता है। यह एक प्रकार का भारी तेल है, जो Compression से जलता है। विज्ञान के विद्यार्थी जानते हैं—Compression 'सम्पीडन'। इसका विलोम है—'विरलन'। पीड्—To press (दाबना)।

सम्पीडन से जो भारी तेल प्रज्वलित होता है, उसे Diesel oil कहते हैं। आप उसे 'पीडज्वाल तेल' कह सकते हैं। जलाने वाला—'ज्वालक' और जलने वाला 'ज्वाल'। जो दाब से जले वह 'पीडज्वाल'। भाव भी समझ में आ गया।

Machine (मशीन) को सामान्यतः 'यन्त्र' कहते हैं। जो मशीन किसी वाहन को लेकर चलती है, उसे Engine कहते हैं। आप इसे 'यन्त्र' कह सकते हैं। लेकर चलने वाला यन्त्र—'गन्त्र'। तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र की परम्परा में ही आता है—'गन्त्र'

Train अर्थात् 'संयान' में कभी-कभी आपको Sleeping berth का reservation कराना पड़ता है। इसको 'शायिका आरक्षण' कहते हैं। शायिका—शयन स्थान।

Sleep—शयन। Sleeper—शायी (सोने वाला)।

मशीन के अंग-उपांगों को ठीक रखने के लिए आपको उनमें तेल डालना पड़ता है। इसे Oiling कहते हैं।

Oiling—तैलन; ठीक वैसे ही, जैसे Reading—वाचन। पठन-पाठन—पढ़ना-पढ़ाना।

ग्रन्थ का वाचन कर दीजिए।'

'यन्त्र का तैलन कर दीजिए।'

सरल प्रयोग हैं। करके देखिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संस्कृत भाषा का पुनरुद्धार : महर्षि दयानन्द का महान् संकल्प

—डा. प्रशान्त वेदालंकार

संस्कृत के विरोध में सबसे बड़ा तर्क यह दिया जाता है कि यह एक अप्रचलित भाषा है, और इसका आज कुछ भी महत्त्व नहीं है। इसी कारण त्रिभाषा सूत्र और नई शिक्षा नीति में संस्कृत की सर्वथा उपेक्षा की गई है। पर यह धारणा संस्कृत के महत्त्व को न समझने के कारण है। दयानन्द का मत था कि संस्कृत का महत्त्व अनेक दृष्टियों से है, विशेष रूप से इसमें विद्यमान आध्यात्मिक विद्या से सुख लाभ लेने के लिए इसका अध्ययन आवश्यक है। स्वामी विरजानन्द जी से शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त दयानन्द सर्वप्रथम आगरा पहुँचे। वहां सुन्दरलाल उनके शिष्य बने। एक आदित्यवार के दिन सुन्दरलाल जी ने स्वामी जी से निवेदन किया कि संस्कृत भाषा तो मृत मानी जाती है, कहीं व्यवहार में नहीं आती तो आपने इस पर इतना परिश्रम क्यों किया ? स्वामी जी ने उत्तर दिया—'इससे अपना परलोक सुधारेंगे।' दयानन्द का संकेत संस्कृत में विद्यमान अध्यात्म-विद्या की ओर था।

किन्तु दयानन्द संस्कृत का महत्त्व केवल उसमें विद्यमान अध्यात्म विद्या के ही कारण नहीं मानते थे। उनके मत में अनेक भौतिक विज्ञानों की दृष्टि से भी संस्कृत का महत्त्व किसी भाषा से कम नहीं है। विशेष रूप से प्राचीन भारत के ज्ञान के किसी भी क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए संस्कृत का अध्ययन करना आवश्यक है। इसके लिए दयानन्द ने दाराशिकोह का उदाहरण दिया है। दाराशिकोह का निश्चय था कि जैसी पूरी विद्या संस्कृत में है, वैसी किसी भाषा में नहीं है। वे उपनिषदों के भाषान्तर में लिखते हैं कि मैंने अरबी आदि बहुत-सी भाषाएं पढ़ीं परन्तु मेरे मन का सन्देह छूटकर आनन्द न हुआ। जब संस्कृत पढ़ी और सुनी तब निःसन्देह मुझको बड़ा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आनन्द हुआ। (सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास)

इसके अतिरिक्त भाषा विज्ञान की दृष्टि से संस्कृत का महत्त्व संसार की प्रत्येक भाषा के लिए है। अलीगढ़ में मुसलमानों से बातचीत के मध्य दयानन्द ने कहा कि संस्कृत भाषा एक स्वाभाविक और ईश्वरप्रदत्त भाषा है। इसके स्वरों को लीजिए, इनकी ध्वनि सब देशों में पाई जाती है। सब प्रचलित भाषाओं में इसी की अक्षरमाला नैसर्गिक है। छोटा-सा बच्चा भी अ, इ, उ का उच्चारण बिना सिखाए करने लग जाता है। क्, ख् आदि व्यंजनों का उच्चारण भी ऐसा ही सुगम और स्वाभाविक है। जो भाषा स्वाभाविक ध्वनि के अक्षरों से बनी है, वही भाषा स्वाभाविक और आदिम होनी चाहिए। ईश्वरीय आदेश उसी भाषा में होने उचित हैं।

6 सितम्बर 1872 को आगरा से आरा के तत्कालीन जिला मजिस्ट्रेट मिस्टर एच. डब्लू. अलैग्जेंडर से स्वामी जी का मिलना हुआ। स्वामी जी ने उनसे संस्कृत में सम्भाषण किया, जिसे रजनी बाबू अनुवाद करके समझाते जाते थे। मजिस्ट्रेट स्वामी जी के कथन को बहुत ध्यान से सुनता था। उसने स्वामी जी से संस्कृत बोलने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि भारतवर्ष में द्राविड़ प्रभृति अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। तब मैं किस भाषा में बोलूं? इसके अतिरिक्त संस्कृत सारे हिन्दुओं की भाषा है, और समस्त भाषाओं का मूल है। अतः संस्कृत बोलना ही अच्छा है।

दयानन्द ने संस्कृत भाषा के उक्त महत्त्व के कारण उसका प्रचार व प्रसार करना अपना एक कर्तव्य निश्चित किया गया था। दयानन्द संस्कृत की कितनी आवश्यकता अनुभव करते थे, यह उनके एक विज्ञापन से पता चलता है। दयानन्द ने लिखा—आर्यावर्त देश का राजा अंगरेज बहादुर से यह मेरा विज्ञापन है कि संस्कृत विद्या की ऋषि-मुनियों की रीति से प्रवृत्ति कराये। इससे राजा और प्रजा को अनन्त सुख-लाभ होगा। और जितने आर्यावर्तवासी सज्जन लोग हैं, उनसे भी मेरा यह कहना है कि इससे इस सनातन संस्कृत विद्या का उद्धार अवश्य करें। व इससे अत्यन्त आनन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होगा। और जो यह संस्कृत विद्या लुप्त हो जाएगी तो सब मनुष्यों की बहुत हानि होगी। इसमें कुछ सन्देह नहीं।

दयानन्द जहां भी जाते वहां संस्कृत का प्रचार करते और स्वयं लोगों को संस्कृत सिखाते। आगरा में दयानन्द ने संस्कृत के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यदि कोई अन्य पुरुष भी स्वकल्याण करना चाहे तो मैं सहायता देने के लिए उद्यत हूं। उन्हीं की प्रेरणा से प. सुन्दरलालजी और बालमुकुन्द जी ने अष्टाध्यायी का अध्ययन आरम्भ किया था। लाहौर में उन्होंने संस्कृत के महत्त्व पर प्रकाश डाला तो प्राय: सभी सभासद् संस्कृत पढ़ने लग गए थे। स्वामी जी के पास भी बहुत-से लोग अध्ययन करने आया करते थे। उनके सारगर्भित उपदेशों को सुनकर अनेक लोगों के हृदय में संस्कृत भाषा सीखने के लिए उत्साह उत्पन्न हुआ। दयानन्द को जब भी अवसर मिला, उन्होंने स्वयं अनेक लोगों को संस्कृत पढ़ानी आरम्भ कर दी।

16 मार्च 1879 को दीनापुर (दानापुर) के आर्यसमाज के मन्त्री को लिखा कि मुझे यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप आर्य संस्कृत पाठशाला खोलने का प्रयत्न कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द के ही प्रयत्नों से फर्रुखाबाद में पाठशाला आरम्भ हुई थी। उसमें भी दयानन्द संस्कृत की शिक्षा पर ही विशेष बल देना चाहते थे। 23 मई 1881 को सेठ निर्भयराम जी को एक पत्र में उन्होंने लिखा—आप लोगों की पाठशाला में आर्य भाषा संस्कृत का प्रचार बहुत कम और अन्य भाषा अंग्रेजी व उर्दू, फारसी अधिक पढ़ाई जाती है। इससे वह अभीष्ट जिसके लिए यह शाखा खोली गई है, सिद्ध होता नहीं दीखता। वरन् आपका यह हजारों मुद्रा का व्यय संस्कृत की ओर से निष्फल होता भासता है। हमने कभी परीक्षा के कागजात वाह आज तक की परीक्षा का फल कुछ नहीं देखा। आप लोग देखते हैं कि बहुत काल से आर्यावर्त में संस्कृत का अभाव हो रहा है। वरन् संस्कृत रूपी मातृभाषा की जगह अंग्रेजी लोगों की मातृभाषा हो चली है। अंग्रेजी का प्रचार तो जगह-जगह सम्राट् की ओर से जिनकी यह मातृभाषा है, भली प्रकार हो रहा है। अब इसकी वृद्धि में हम-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुम को इतनी आवश्यकता नहीं दीखती। और न सम्राट् के समान कुछ कर सकते हैं। हां, हमारी अति प्राचीन मातृभाषा संस्कृत जिसका सहायक वर्तमान में कोई नहीं है। यही व्यवस्था देखकर संस्कृत के प्रचारार्थ आप लोगों ने यह पाठशाला स्थापित की है। तो यह भी उचित कर्तव्य अवश्य है कि सदैव पूर्व दृष्ट की सिद्धि पर दृष्टि रखी जावे।

12 मई 1881 को लाला कालीचरण जी रामचरण जी को लिखा—इस (फर्रुखाबाद की) पाठशाला में अधिक करके संस्कृत की उन्नति पर ध्यान रखना चाहिए। कुछ दिनों के बाद उन्होंने फर्रुखाबाद पाठशाला के लिए दुर्गाप्रसाद जी को फिर लिखा—जहां तक बन सके, पाठशाला के उद्देश्य पर कि संस्कृत की उन्नति होनी चाहिए, सो इस पर अच्छी प्रकार ध्यान रहे। 17 जून 1881 को दुर्गाप्रसाद जी को फिर लिखा—पाठशाला में संस्कृत का काम ठीक-ठाक होना चाहिए। जैसे मिशन स्कूलों में लड़के अपनी अन्य स्वार्थ सिद्धि के लिए बाइबिल सुन लेते हैं, और कुछ ध्यान नहीं देते, वैसे जो संस्कृत सुन लिया तो क्या लाभ होगा? इस पाठशाला में मुख्य संस्कृत जो मातृभाषा है, उसकी ही वृद्धि देनी चाहिए। फारसी का होना कुछ आवश्यक नहीं। केवल संस्कृत ही का पठन-पाठन होना अवश्य है।

दिसम्बर 1882 को बाबू दुर्गाप्रसाद जी को पत्र लिखकर पूछा कि पाठशाला में संस्कृत पढ़ के कितने विद्यार्थी समर्थ हुए, अथवा अंग्रेजी फारसी में ही व्यर्थ धन जाता है, सो लिखो। जो व्यर्थ ही हो तो क्यों पाठशाला रखी जाए। 25 अप्रैल 1883 को लिखा—इससे विदित होता है कि तुम्हारी पाठशाला में अलिफ, बे और कैट, रैट की भरमार है, जो आर्यसमाजों को विधेय कर्तव्य नहीं।

इन सब पत्रों से महर्षि की संस्कृत प्रचार की ललक सूचित होती है।

उन्होंने भारतीयों को ही नहीं वरन् विदेशियों को भी संस्कृत सीखने की प्रेरणा दी। 26 मार्च 879 के एक पत्र में उन्होंने लिखा—अमरीका वालों से अति प्रेम से हमारा नमस्कार कहना और उनसे कुशलता पूछना कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लाहौर आदि के समाज में आप लोगों के लिए तैयारी कर चुके हैं। वहां कब तक आवेंगे और उन्होंने संस्कृत पढ़ना आरम्भ किया है या नहीं? 30 जून 1879 को श्यामजी कृष्ण वर्मा को आक्सफोर्ड में दयानन्द ने पत्र लिखा और पूछा—संस्कृत विद्या का वहां कैसा प्रचार है? और आर्य-समाज की बाबत वे लोग क्या कहते हैं? 8 अक्तूबर 1880 को मैडम एच. पी. ब्लैवट्स्की को उन्होंने लिखा कि प्रथम संस्कृत पढ़ने, शिक्षा लेने, सोसायटी को आर्यसमाज की शाखा करार देने आदि के लिए लिखा था, और वे चिट्ठियां छप के सर्वत्र प्रसिद्ध भी हैं। और जो मैंने वहां पत्र भेजे थे उनकी नकल भी मेरे पास उपस्थित है।

दयानन्द की निश्चित मान्यता थी कि भारत विश्व को संस्कृत और संस्कृत में निहित ज्ञान के रूप में बहुत कुछ दे सकता है। सत्यार्थ प्रकाश में वे लिखते हैं कि जितनी विद्या भूगोल में फैली है वह सब आर्यावर्त्त देश से मिश्र वालों, उनसे यूनानी, उनसे रोम और उनसे यूरोप देश में, उनसे अमेरिका आदि देशों में फैली है। अब तक जितना प्रचार संस्कृत विद्या का आर्यावर्त देश में है, उतना किसी अन्य देश में नहीं। जो लोग कहते हैं कि जर्मनी देश में संस्कृत विद्या का बहुत प्रचार है और जितनी संस्कृत मोक्षमूलर साहब पढ़े हैं उतनी कोई नहीं पढ़ा। यह बात मात्र कहने को है, क्योंकि यस्मिन् देशे द्रुमो नास्ति तत्रैरण्डोऽपि द्रुमायते अर्थात् जिस देश में कोई वृक्ष नहीं होता उस देश मे एरण्ड ही को बड़ा वृक्ष मान लेते हैं वैसे ही यूरोप देश में संस्कृत विद्या का प्रचार न होने से जर्मन लोगों और मोक्षमूलर साहब ने थोड़ा सा पढ़ा, वही उस देश के लिए अधिक है। आर्यावर्त देश की ओर देखें तो उनकी बहुत न्यून गणना है, क्योंकि मैं जर्मनी देश निवासी एक प्रिन्सिपल के पत्र से जाना कि जर्मनी देश में संस्कृत चिट्ठी का अर्थ करने वाले भी बहुत कम हैं (सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास आदि लिखकर दयानन्द ने वस्तुतः उन लोगों को सावधान करने की कोशिश की जिन्होंने सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान का ठेकेदार पश्चिम को मान लिया था

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और यहां तक कि संस्कृत में भी अपने को जर्मनी से पिछड़ा हुआ मानने लगे थे। आज भी यह दुर्भाग्य की बात है कि किसी विदेशी विश्वविद्यालय से प्राप्त संस्कृत उपाधि को भारतीय विश्वविद्यालय की तुलना में अधिक महत्त्व दिया जाता है। किसी विदेशी विद्वान् द्वारा संस्कृत विषय पर विदेशी भाषा में लिखी पुस्तक को अधिक महत्त्व दिया जाता है। दयानन्द ने इस कुवृत्ति से बचने के लिए आज से सौ वर्ष पूर्व ही सावधान किया था। वे लिखते हैं कि मोक्षमूलर साहब के संस्कृत साहित्य और थोड़ी-सी वेद की व्याख्या देकर मुझको विदित होता है कि मोक्षमूलर साहब ने इधर-उधर आर्यावर्तीय लोगों द्वारा की हुई टीका देखकर कुछ-कुछ यथा-तथा लिखा है। जैसा कि युंजन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परितस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि इस मन्त्र का अर्थ घोड़ा किया है। इससे तो सायणाचार्य ने सूर्य अर्थ किया है सो अच्छा है। परन्तु इसका ठीक अर्थ परमात्मा है, सो मेरी बनाई ऋग्वेद आदि भाष्य भूमिका में देख लीजिए। उसमें इस मन्त्र का अर्थ यथार्थ किया है, इतने से जान लीजिए कि जर्मनी देश और मोक्षमूलर साहब में संस्कृत विद्या का कितना पाण्डित्य है। (सत्यार्थप्रकाश, एकादश समुल्लास) वस्तुतः पश्चिमी ज्ञान की ओर अंधभक्ति यहां तक कि संस्कृत व वैदिक ज्ञान के विषय में भी उन्हीं को प्रमाण मानने की गलत प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए दयानन्द को ये सब स्पष्ट बातें लिखनी पड़ी थीं।

दयानन्द का मत था कि प्रयोग में अत्यन्त सरल संस्कृत आनी चाहिए। संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित होते हुए भी जन-सामान्य तक अपने विचार पहुंचाने के लिए वे स्वयं अत्यन्त सरल संस्कृत का प्रयोग किया करते थे। यह उल्लेखनीय है कि सन् 1872 से पहले वे संस्कृत में ही भाषण दिया करते थे। पर उनकी संस्कृत समझने में किसी को कठिनाई नहीं होती थी।

सन् 1874 में भड़ौच में वकील जेठालाल जी ने दयानन्द से कहा—आपकी संस्कृत अति सुगम होती है। पण्डित जैसी जटिल भाषा मैंने आप से नहीं सुनी। दूसरे, जब आप पण्डितों से शास्त्रार्थ करते हैं, तब भी उनका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुख आप केवल युक्तियों और प्रकाणों से ही बन्द करते हैं। पण्डित लोग तो एक-एक शब्द पर ही सारा-सारा दिन बिता देते हैं। वैसा आप भी क्यों नहीं करते ? दयानन्द ने उत्तर दिया—मैं सुगम संस्कृत इसलिए बोलता हूं कि सुनने वालों को समझने में सुगमता हो। मेरा उद्देश्य जनता को समझाना है. न कि अपना पांडित्य छांटना, परन्तु यह भी निश्चय रखिए कि सुगम भाषा बोलने की रीति किसी भाषा के अल्पज्ञान से नहीं प्राप्त हुआ करती। सच तो यह है कि भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लेने पर ही व्यक्ति सरल भाषा बोल सकता है।

15 दिसम्बर 1873 को दयानन्द कलकत्ता गये। उनकी संस्कृत के सम्बन्ध में पताका पत्रिका के सम्पादक ने लिखा था—हमने जब पहले पहल स्वामी जी की वक्तृता सुनी तो हमने एक नवीन् बात देखी कि सस्कृत भाषा में ऐसी सरल और मधुर वक्तृता हो सकती हैं। वह ऐसी सरलतम संस्कृत में व्याख्यान देने लगे कि जो संस्कृत में महामूर्ख है, वह भी उनके व्याख्यान को समझने लगा। इसी प्रकार धर्मतत्त्व ने मार्च के अंक में दयानन्द सरस्वती शीर्षक देकर इस प्रकार लिखा था—ये एक दिग्गज पण्डित हैं। ये हिन्दू शास्त्र विशारद हैं। संस्कृत भाषा इनके आयात्ताधीन हैं। विशेषकर इनकी संस्कृत भाषा इतनी प्रांजल, श्रुतिमधुर और सरल है कि संस्कृत से अनभिज्ञ पुरुष भी उसे अनायास बहुत कुछ समझ सकते हैं।

दयानन्द ने 20 अगस्त 1876 को वेदभाष्य लिखना आरम्भ किया। तब उनके एक विज्ञापन से भी यह प्रकट होता है कि वे सरल भाषा के पक्ष में थे। उस विज्ञापन में उन्होंने लिखा—यह भाष्य संस्कृत और आर्य भाषा, जो काशी प्रयाग आदि मध्यदेश की है, इन दोनों भाषाओं में बनाया जाता है। इसमें संस्कृत भाषा सुगम रीति की लिखी जाती है। और वैसी आर्यभाषा भी सुगम लिखी जाती है। संस्कृत ऐसी सरल है कि साधारण संस्कृत को पढ़ने वाला भी वेदों का अर्थ समझ ले। तथा भाषा को पढ़ने वाला भी सहज में समझ लेगा। इससे दयानन्द का सरल भाषा रखने का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उद्देश्य और अधिक प्रकट हो जाता है।

स्वामी जी ने अपने परमशिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा को संस्कृत में एक पत्र लिखा। श्याम जी कृष्ण वर्मा ने वह चिट्ठी प्रो. मोनियर विलियम्स को दिखाई जिसकी सरल, सुबोध और ललित संस्कृत को देखकर वे इतने मोहित हुए कि उन्होंने उसका अंग्रेजी अनुवाद एथिनियम नाम के पत्र के 23 अक्तूबर सन् 1880 के अंक में प्रकाशित कराया और उस चिट्ठी को आदर्श मानते हुए लिखा कि संस्कृत भाषा अभी तक आर्यावर्त के पत्र व्यवहार और दैनिक बोलचाल की भाषा है। आर्यावर्त भर के शिक्षित मनुष्यों के बीच में यही भाषा विचार-विनिमय का माध्यम है। आर्यावर्त में लगभग 200 भाषाएं बोली जाती हैं। यदि यह माध्यम न होता तो एक प्रान्त के मनुष्य से बात-चीत करने में अत्यन्त कठिनता होती। ऐसी दशा में जो लोग यह कहते है कि संस्कृत भाषा अप्रयुक्त और अवनत दशा में है, वे भूल करते हैं।

महर्षि दयानन्द के संस्कृत संबंधी विचारों को जानने के बाद हम यह कह सकते है कि हमें (विशेषतः उनके अनुयायियों को) राष्ट्र में संस्कृत भाषा के प्रचार और प्रसार को अपना एक मुख्य कार्य समझना चाहिए। आर्यसमाज को इसके लिए अनेक रचनात्मक आन्दोलन चलाने होंगे। इस समय देश में जितने भी संस्कृत की उच्च उपाधि प्राप्त नवयुवक और नव-युवतियां हैं, उनके लिए कार्य की एक सशक्त योजना बनानी होगी। साथ ही भारत सरकार की नई शिक्षा नीति में सस्कृत को स्थान दिलाने के लिए हमें कुछ आन्दोलन भी चलाने होंगे। बोध पर्व मनाना तभी सार्थक होगा, जब हम महर्षि दयानन्द की भावनाओं के अनुरूप अपने को संस्कृत के प्रति अपने को समर्पित कर दें।

वह हिज्जे कर-कर के कुछ लिख रहा था, दोस्त से रहा नहीं गया, पूछा – ",भाई, इतना सोच-सोच कर क्या लिख रहे हो ?"

"कुछ नहीं, तुम्हारी भाभी को चिट्ठी लिख रहा हूं।"

"लेकिन हुजूर, आप इस कदर धीरे-धीरे क्यों लिख रहे हैं ?"

"यार, उसे जल्दी-जल्दी पढ़ने का अभ्यास ही नहीं है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्मवीर आर्य पथिक पं० लेखराम

—स्वर्गीय दीनानाथ जी सिद्धान्तालंकार

संसार के महापुरुषों के जीवन में परिस्थिति और पृष्ठभूमि के अनुसार जहां विभिन्नता पाई जाती है, वहाँ कुछ ऐसी विशेषताएं भी हैं, जो सबमें सामान्य रूप से उपलब्ध होती हैं। यह भी इतिहास का सत्य है कि ये विशेषताएं जितनी उग्र और तीक्ष्ण मात्रा में किसी व्यक्ति में होंगी, उतना ही अधिक वह महापुरुष कहलाने का अधिकारी बनेगा। इन विशिष्टताओं में सबसे प्रथम, सबसे मुख्य और मूर्धन्य दृढ़ संकल्प का होना है। व्यक्ति के संकल्पों में जितनी दृढ़ता और स्थिरता होगी, उतना ही शीघ्र वह सफलता की ओर अग्रसर हो सकेगा। इस दृढ़ता और स्थिरता को कभी-कभी पागलपन समझ लिया जाता है। वस्तुतः किसी लक्ष्य के प्रति यह पागलपन ही उसकी सिद्धि में सर्वोत्कृष्ट साधन है।

जन्म, बचपन, शिक्षा और पुलिस में नौकरी

आर्यसमाज के उज्ज्वल नक्षत्रों में धर्मवीर आर्य पथिक पं. लेखराम इसी श्रेणी के व्यक्ति थे। उनकी जीवन-कथा, वस्तुतः, अत्यन्त प्रेरणाप्रद है। इनका जन्म पश्चिम पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) के जेहलम जिले के ग्राम सैदपुर-स्थित एक ब्राह्मण परिवार में 8 चैत्र संवत 1915 विक्रमी को हुआ था। इनके पितामह महता नारायण सिंह एक वीर योद्धा थे। इनके पिता तारा सिंह महता भी सैनिक वृत्ति के थे। लेखराम ने कुल-परम्परा से एक सैनिक सदृश निर्भयता, साहस और दृढ़ शारीरिक गठन प्राप्त किया था। बाल्यकाल से ही धार्मिक और भावुक प्रवृत्ति के थे और एकादशी इत्यादि व्रतों का पालन करते थे। उर्दू-फारसी में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर वे अपने चाचा गंडाराम पुलिस इन्सपेक्टर की सहायता से पेशावर में पुलिस में भर्ती हो गये। एक सिख सिपाही की संगति से उनमें धार्मिक संस्कार जाग गये और वे पक्के कृष्ण-भक्त बन कर नियमित रूप से पूजा-पाठ करने लगे। लेखराम की धर्म-जिज्ञासा लगातार बढ़ती गई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज में प्रवेश

इन्हीं दिनों लुधियाना के मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी की पुस्तकें पढ़ने से उन्हें स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज का परिचय मिला। यहां से प्रेरणा प्राप्त कर लेखराम ने स्वामी जी के ग्रन्थ पढ़ने शुरू किये। परिणामतः विचारों में एकदम क्रान्ति आ गई। अब वे पक्के आर्यसमाजी बन गये। उन्होंने मुस्लिम-बहुल नगर पेशावर में आर्यसमाज की स्थापना की और उत्साह के साथ उसे चलाया। उस समय इसके सदस्य चार-पांच व्यक्ति ही थे।

ऋषि दर्शन के लिए अजमेर यात्रा

'ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के अध्ययन के पश्चात् लेखराम जी के मन में ब्रह्म-जीव की एकता के सम्बन्ध में कई शंकाएं पैदा हुईं। उस समय वे कट्टर नवीन वेदान्ती थे। उन्होंने अजमेर जाकर ऋषि-दर्शन कर अपनी शंकाओं के निवारण का निश्चय किया। वे एक मास का अवकाश ले मार्ग में लाहौर, अमृतसर, मेरठ की आर्यसमाजों में ठहरते हुए 17 मई 1880 को अजमेर पहुंच गये। यहीं ऋषि के प्रथम और अन्तिम दर्शनों ने लेखराम के सब संशय निवृत्त कर दिये। उन्होंने स्वामी जी से 10 प्रश्न किये, जिनमें ब्रह्म-जीव की एकता का प्रश्न भी शामिल था। पंडित जी ने इस साक्षात्कार का वर्णन करते हुए लिखा है कि "इससे मेरी शान्ति हो गई। अन्त में मुझे ऋषि ने आदेश दिया कि 25 वर्ष से पूर्व विवाह न करना।" अब वैदिक धर्म पर लेखराम की आस्था चट्टान के सदृश दृढ़ हो गई। अजमेर से ज्योति प्राप्त कर वे धर्म प्रचार में जुट गये। उन्होंने पेशावर से 'धर्मोपदेश' नामक मासिक उर्दू पत्र निकालना प्रारम्भ किया।

पुलिस की नौकरी से त्यागपत्र

अब पंडित जी की स्वतन्त्र आत्मा नौकरी के बन्धनों से खिन्न रहने लगी। पुलिस में मुसलमानों की अधिकता थी। उनसे पंडित जी की बहस प्रायः चलती रहती। एक दिन एक मुस्लिम पुलिस इन्सपेक्टर से उनकी झड़प हो गई। पंडित जी ने निर्भीकता से उसके प्रश्नों का उत्तर दिया। इससे चिढ़कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उसने इनका तबादला एक दूर स्थान में कर दिया और छह मास के लिए वेतन-स्तर में भी कमी कर दी। इस परिस्थिति ने उन्हें अपनी जीवन दिशा बदलने के लिए विशेषतः बाध्य किया। दो मास का नोटिस देकर आपने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। इस प्रकार 30 सितम्बर 1884 को उन्होंने सदा के लिए इस दासता से मुक्ति प्राप्त की। अब सार्जेण्ट लेखराम वैदिक धर्म के दीवाने प्रचारक पंडित लेखराम आर्य पथिक के रूप में कार्य क्षेत्र में अवतरित हुए।

कादियां के मिर्जा से प्रबल टक्कर

पेशावर में रहते हुए पंडित जी को मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी की एक पुस्तक 'बुराहीने अहमदिया' मिली, जिसमें मिर्जा ने अपनी पैगम्बरी का दावा किया था। इस अहमदिया समुदाय का उद्गम स्थान पंजाब के जिला गुरुदासपुर के अन्तर्गत कादियां कस्बा था। मिर्जा चतुर व्यक्ति था। उसने ब्रिटिश सरकार के समर्थन की नीति अपना ली थी। इसलिए वह सदा अंग्रेजों का कृपापात्र बना रहा। इसके विपरीत आर्यसमाज प्रारम्भ से ही विदेशी शासन के विरुद्ध और कट्टर देशभक्त संस्था थी। अंग्रेज की नीति सदा ही आर्यसमाज के दमन की रही। धार्मिक दृष्टि से आर्य-समाज मिर्जा के पैगम्बर होने का प्रबल विरोधी था। दोनों में टक्कर होना स्वाभाविक था। मिर्जा ने एक विज्ञापन द्वारा घोषणा की कि यदि कोई उनके चमत्कारों को मिथ्या सिद्ध कर दे और कोई गैर-मुस्लिम कादियां में एक वर्ष रहकर उसके चमत्कारों का कायल न हो तो वह उस हिन्दू को 2400 रुपये जुर्माने के तौर पर देने को तैयार है। पंडित जी ने मिर्जा को पत्र लिखा कि "मैं एक साल तक तुम्हारे पास रहकर तुम्हारे चमत्कारों की परीक्षा लेने को तैयार हूं।" मिर्जा पं. लेखराम की तर्क शक्ति और निर्भयता की ख्याति सुन चुका था। वह पंडित जी को टालने के लिए पत्र लिखता रहा। पर पंडित जी तो बुरे के घर तक पहुंचने वाले थे। वे स्वयं कादियां पहुंच गए और उन्होंने मिर्जा को ललकारा। तब भी वह चमत्कार दिखाने को तैयार न हुआ। पण्डित जी कई दिन तक कादियां में रहकर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे। परिणामस्वरूप वहां आर्यसमाज की स्थापना हो गई। पंडित जी ने अहमदिया मत के खंडन में कई पुस्तकें लिखीं। 1887 ई. में वे आर्यगजट के सम्पादक बने। इस प्रकार पण्डित जी वाणी और लेखनी द्वारा दिन-रात आर्यसमाज की सेवा में लगे रहते थे। वे कितने त्यागी थे, इसका प्रमाण यही है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक के रूप में उनका मासिक वेतन उस समय केवल 25 रु. था।

ऋषि-जीवन लिखने का दायित्व लिया

सभा ने निश्चय किया कि महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र लिखा जाए और यह काम किसी सुयोग्य व्यक्ति को सौंपा जाए। सभा की दृष्टि तत्काल पंडित जी पर पड़ी। वे अविलम्ब इस महान् कार्य के लिए कमर कसकर देश भर का दौरा करने को उद्यत हो गए। इसी समय आपके नाम के साथ 'आर्य पथिक' विशेषण जुड़ा। पड़ित जी ने दो वर्ष तक ऋषि से सम्बद्ध सब स्थानों पर जाकर खूब छानबीन कर प्रचुर सामग्री तैयार की और ऋषि जीवन पर जितने ग्रन्थ निकले हैं, लगभग सब पण्डित जी द्वारा लिखित ऋषि जीवन पर आधारित हैं। इन विस्तृत यात्राओं के बावजूद उन्होंने विभिन्न स्थानों पर व्याख्यान और शास्त्रार्थ करने में तनिक भी विराम नहीं किया। अपनी अल्प आयु में आर्य पथिक ने जितने व्याख्यान दिये और शास्त्रार्थ किए तथा जितनी पुस्तकें और लेख लिखे, उन्हें देखकर बरबस यही कहना पड़ता कि है उनके जीवन का प्रत्येक क्षण आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के चरणों में अर्पित था। पण्डित जी उर्दू-फारसी के तो विद्वान् थे ही, अपनी अनथक लगन और विद्या-प्रेम से उन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी पर भी अच्छा अधिकार कर लिया था।

व्यक्तित्व और स्वभाव

आर्य पथिक का व्यक्तित्व प्रभावजनक था। पेशावरी साफा, बन्द गले का कोट और नीचे पंजाबी ढंग का पाजामा। यह उनकी सादा पोशाक थी पर उनके स्वस्थ, कद्दावर, व्यायाम और ब्रह्मचर्य-पालन से गठे शरीर, कांतिमान् मुख, देदीप्यमान नेत्रयुगल, सिंह सदृश ओजस्वी और गम्भीर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाणी—ये सब उनके असाधारण और विशिष्ट व्यक्तित्व का अनयास ही परिचय देते थे। स्वभाव से पण्डित जी सरल, निश्छल और स्पष्ट वक्ता थे। चापलूसी, खुशामद और आजकल का आडम्बरपूर्ण शिष्टाचार उन्हें छू तक नहीं गया था। उनके निष्कपट और निर्भय स्वभाव के कई मनोरंजक उदाहरण हैं। एक बार उन्होंने सभा के प्रधान महात्मा मुंशीराम को निडर हो उनकी त्रुटि बतलाने में रंचमात्र भी संकोच नहीं किया था। पर उनका हृदय नवनीत की तरह कोमल था। ऐसे ही महापुरुषों के लिए संस्कृत के महाकवि भवभूति ने ठीक ही कहा है—

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति।

(लोकोत्तर पुरुषों के हृदय वज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल होते हैं। उनके चित्त की थाह भला कौन पा सकता है?)

मुस्लिम घातक शुद्धि के बहाने पंडित जी के घर में

पंडित जी को कई स्थानों से उनके शुभचिन्तक सचेत कर रहे थे कि मुसलमान उनकी हत्या की कोशिश कर रहे हैं, पर दृढ़ ईश्वरविश्वासी आर्य पथिक ने कभी इस चेतावनी को गम्भीरता से नहीं लिया। फरवरी 1897 के मध्य एक गठे बदन का, नाटा, काले रंग, भयानक आकृति का व्यक्ति पंडित जी का पता पूछता-पूछता उनके पास आया और बोला कि वह पहले हिन्दू था, दो वर्ष हुए मुसलमान हो गया है। अब वह पुनः हिन्दू होना चाहता है। उसने अपने को बंगाली बताया, पर वस्तुतः वह पटना का फूहड़ था। सरलचित्त पंडित जी ने कहा कि वे अवश्य उसे शुद्ध करेंगे। वह पण्डित जी के साथ छायावत् रहने लगा। कई आर्य भाइयों ने पंडित जी को सावधान भी किया कि यह व्यक्ति संदिग्ध प्रतीत होता है, पर वे उसे शुद्ध करने पर तुले हुए थे और अपने साथ घर पर ही रखते थे।

पहली मार्च तक पंडित जी मुलतान आर्यसमाज में व्याख्यान देकर दोपहर को लाहौर पहुंचे। सभा के कार्यालय में गये। यह व्यक्ति पूरे शरीर पर कम्बल ओढ़े वहाँ पहुंचा। कुछ कांप रहा था। पण्डितजी के पूछने पर उसने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहा, "ज्वर है और सिर-दर्द भी है।" इलाज के लिए पण्डित जी उसे डाक्टर के पास ले गए और दवाई ली। वस्तुत: यह घातक कम्बल ओढ़े भीतर छुरा छिपाए था, पर पंडित जी ने उसका कम्बल उतारने की कभी इच्छा ही नहीं की। डाक्टर की दुकान से वे एक बजाज की दुकान पर गए और वहां से माता जी के लिए कपड़े का एक थान ले घर वापस आए। खुले बरामदे में चारपाई पर बैठकर ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र लेखन का काम करने लगे। बाईं ओर कुर्सी पर वह प्रच्छन्न हत्यारा बैठ गया।

शाम के छह बज गए। माताजी ने रसोई घर से कहा "पुत्र लेखराम, तेल नहीं आया।" आर्य पथिक उस समय ऋषि दयानन्द की मृत्यु का अंतिम दृश्य लिख रहे थे। लिखना बन्द कर दिया। चारपाई से नीचे उतरे। अंगड़ाई लेते हुए बोले, 'ओफ, भूल गया।" घातक तो कई दिन से इसी मौके की प्रतीक्षा में था। अंगड़ाई लेते हुए सारा सीना सामने आ गया था। घातक ने सधे हुए हाथ से छुरा आर्य पथिक के पेट में घुसेड़ दिया, खून की धाराएं बहने लगीं और अंतड़ियां बाहर आ गईं। पंडित जी ने उसका हाथ पकड़ा। छुरे का वार कर वह सीढ़ियों की ओर भागा। उन्होंने घातक के हाथ से छुरा छीन लिया, पर उसके दो हाथ और पंडित जी का एक हाथ और रक्त धाराएं। माता और पत्नी दोनों बाहर आ गईं और घातक को पकड़ लिया। उसने पास ही पड़े एक बेलन से माता जी के सिर पर दो-तीन वार किए, जिससे वे तत्काल बेहोश हो भूमि पर गिर पड़ीं। घातक सीढ़ियों से नीचे उतर कहीं गुम हो गया।

अचानक कुछ क्षण बाद ही वयोवृद्ध आर्य लाला जीवनदास जी पंडित जी से मिलने आये तो यह दृश्य देख हक्काबक्का रह गए। शोर मच गया और लोग इक्ट्ठे हो गए। पर इस आर्य केसरी के मुख पर कोई मलिनता न थी। पूछने पर वीर स्वर में बोले, "वही दुष्ट जो शुद्ध होने आया था, मार गया।" डाक्टर को बुलाने के लिए कहा गया। तत्काल धर्मवीर को चारपाई पर लिटा अस्पताल की ओर ले चले। डाक्टर पैरी सिविल सर्जन करीब दो घंटे बाद आये। छुरे के हमलों से सब आंतें क्षत-विक्षत हो गई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वीं और अजस्र रक्त-धारा बह रही थी। सिविल सर्जन हैरान था कि ऐसा व्यक्ति कैसे जीवित रह सकता है। यह कोई अद्भुत व्यक्ति है।

अन्तिम क्षण : अन्तिम शब्द

उधर आर्य पथिक रात के 1-30 बजे तक सर्वथा सचेत थे। केवल प्रभु का नाम और वेद-मंत्र जिह्वा पर थे, न घर की, न पत्नी की चिन्ता, न घातक पर आक्रोश और न मृत्यु का भय। यदि चिन्ता थी तो आर्यसमाज की और ध्यान था तो महर्षि दयानन्द के उपकारों का। लगभग दो बजे रात आर्य पथिक का जीवन-दीप टिमटिमाने लगा। उनके अन्तिम शब्द थे—

"आर्यसमाज से लेख का काम बन्द नहीं होना चाहिए।"

दो बार सबको नमस्ते करने के लिए हाथ हिलाने का प्रयास किया और पांच मिनट में ही अमर निद्रा में सो गए।

पौ फटते ही आर्य पथिक की वीर गति का दुःखद समाचार बिजली की तरह सारे लाहौर नगर में फैल गया। हिन्दू, सिख, जैन, ईसाई और समझदार मुसलमान भी—सभी को सुन गहरा धक्का लगा। हजारों की संख्या में नागरिक—बिना धर्म, जाति और बिरादरी के भेदभाव के अस्पताल के सामने इस आर्य वीर के अन्तिम दर्शन के लिए एकत्रित होने लगे। 10 बजे प्रातः अर्थी उठाई गई और सीधी लाहौर के मुख्य बाजार अनारकली में जा पहुंची। 20 हजार से अधिक शोकाकुल जनता साथ थी। माता और पत्नी के विलाप से समस्त नर-नारियों के नेत्रों से अश्रुधाराएं प्रवाहित हो रही थीं। प्रत्येक व्यक्ति यह समझता था जैसे उसका कोई अपना प्रियजन आज विदा हो रहा है। श्मशान भूमि तक पहुंचते-पहुंचते जनता की संख्या 30 हजार तक हो गई थी।

चिता पर इस वीर नर-पुंगव का मृत देह रखते ही चारों ओर से जनता अन्तिम दर्शनों के लिए उमड़ पड़ी। वेद मंत्र-उच्चारण सहित प्रचुर घृत-सामग्री-चन्दन इत्यादि की आहुतियों से कुछ समय में ही धर्म पर बलिदान होने वाला यह शरीर भस्म में परिवर्तित हो गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

द्वाविमौ पुरुषौ लोके सूर्यं मण्डलभेदिनौ ।
परिव्राड् योगयुक्तश्च रणे चाभिमुखो हतः ।।

अर्थात् "दो प्रकार के पुरुष ही सूर्य मंडल को भेद कर उससे भी आगे पहुँच जाते हैं—एक परिव्राट् योगी और दूसरा रणभूमि में सीने पर आक्रमण सह शरीर छोड़ने वाला वीर ।" धर्मवीर आर्य पथिक लेखराम दोनों गुणों के मूर्तिमान् रूप थे ।

किसी ने रंगों बू ऐसा न देखा, चमन में गुल बहुत गुजरे नजर से ।

सच तो यह है कि हर वह व्यक्ति जो महात्मा वेदभिक्षुः जी के सम्पर्क में आता था, वह उनसे आत्मीयता अनुभव करता था । सबसे पक्षपातर हित और समान भाव से बरताव करना उनकी विशेषता थी ।

उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षण को 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' की उक्ति को चरितार्थ करने वाले अपने जीवन वृत्त से मूल्यवान् बना दिया था । मृत्यु की छाया में भी वे राष्ट्र के निर्माण का स्वप्न देखते रहें । हिन्दू राष्ट्र का सबल और सुदृढ़ स्वरूप ही उनके जीवन का एक मात्र स्वप्न बन गया था। इस संसार में अपना घर बसाने के लिए तो सब हाथ-पाव मारते हैं, किन्तु उन्होंने तो घर फूंक तमाशा देखा था । उन्होंने न कभी अपने लिए सोचा और न कभी परिवार की चिन्ता की जिस जाति के लिए उन्होंने अपने जीवन हर क्षण और रक्त की हर बूंद समर्पित कर दो, उसी ने उनकी न सुनी। सम्भवतः वे वेद मन्त्र 'जीवेम शरदः शतम्' को भी चरितार्थ कर जाते, यदि समाज में उन्हें कुछ भी ऐसे लोग मिल जाते, जो उनके पथ पर चलते उनके सहयोगी बनते ।

राकेश रानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्मान्तरण से राष्ट्रांतरण का मिशनरी षड्यंत्र

— दशरथ उपाध्याय

धर्मपरिवर्तन करने से केवल ईश्वरीय उपासना का ढंग ही नहीं बदलता बल्कि व्यक्ति की देश के प्रति राष्ट्रीय भावना में भी अंतर पड़ जाता है। भारत का विभाजन इस ऐतिहासिक तथ्य का साक्षी है कि धर्मान्तरण की प्रक्रिया राष्ट्रांतरण को जन्म देती है।

पाकिस्तान क्यों और कैसे बना ?

मुस्लिम धर्म के मानने वालों ने यह घोषणा कर दी कि उनका धर्म हिन्दू से पृथक् है। इसकी संस्कृति, सभ्यता व मान्यताएं सब हिन्दुओं से भिन्न होने के कारण दोनों का एक साथ रहना संभव नहीं। आखिर उनकी माँग पूरी हुई और जिन क्षेत्रों में मुस्लिम आबादी अधिक थी, उन्हें काटकर पाकिस्तान बना दिया गया।

अब ईसाई भी ऐसा ही कर रहे हैं

वैसे तो अंग्रेजों ने सन् 1947 से पूर्व यह कोशिश की कि भारत के एक ओर पाकिस्तान खड़ा किया जाये और दूसरी ओर की पूर्वी सीमा पर 'न्यू-इंग्लैंड' नाम का एक ईसाई क्षेत्र बना दिया जाये। इस तरह भारत की एक सीमा पर मुस्लिम पाकिस्तान हो जायेगा और दूसरी सीमा पर 'न्यू इंग्लैंड' होगा और समय पाकर भारत को कुचल दिया जायेगा। भारत का सौभाग्य था कि उस समय केवल पाकिस्तान ही बना, 'न्यू इंग्लैंड' न बन सका। इस कोशिश में अंग्रेजों ने ईसाई मिशनरियों को सक्रिय कर धर्मान्तरण का कार्य तेज किया। फलस्वरूप सन् 1947 से पूर्व जिस क्षेत्र को आज नागालैंड कहा जाता है (वैसे लैंड शब्द ही अपने आपमें पाश्चात्यता का परिचायक है, भारतीय संस्कृति व साहित्य में 'लैंड' नाम का कोई शब्द नहीं है) वहां हिंदुओं की बहुसंख्या थी लेकिन उसके बाद वहां के हिंदू निवासियों को जो अधिकतर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वनवासी थे, रुपयों का लोभ-लालच देकर पतित किया जाने लगा और ज्योंही हिंदू अल्पमत में बदल गये, 'नगालैंड' में विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी। भारतीय सेना को इसे दबाने में 10 वर्ष लगे और अब भी यदा-कदा गड़बड़ हो जाती है।

राष्ट्रगगन पर मंडराते मिशनरी मेघ और विदेशी धन की बाढ़

इस धर्मान्तरण की प्रक्रिया में विदेशी मिशनरी योजनाबद्ध तरीके से सक्रिय रहते हैं। इसका अंदाज हम विली फ्रैंक ग्राहम के अमरीकी रेडियो से किये गये प्रसारण से भलीभांति लगा सकते हैं। सन् 1954 में मिशनरी विली फ्रैंक ग्राहम ने रेडियो पर अमरीकी जनता से अपील करते हुए कहा था कि यदि अमरीका साम्यवाद का सामना करना चाहता है तो उसे संसार में लगभग एक अरब (सौ करोड़) ईसाई बनाने होंगे। इसके लिए एशिया में भी भारत में सबसे पहिले इस कार्य को करना होगा। वहां मुख्यत: यह नारा लेकर चलना होगा कि बूढ़ा हिंदू धर्म समाप्त कर ईसाई धर्म की स्थापना हो 1954 की इस घोषणा के पश्चात् भारत में अमरीकी मिशनरियों का तूफान और विदेशी धन की बाढ़ आने लगी।

लोकसभा में पुष्टि

1958 में भारत के तत्कालीन उप गृहमंत्री श्री बी. एन. दातार ने लोक सभा में बताया कि केवल ढाई वर्षों में विदेशी ईसाई मिशनरियों को विदेशों से 39.27 करोड़ रुपया प्राप्त हुआ। अमरीका का पी. एल. 480 का लगभग 11 खरब रुपया भारत में जमा है, जिसका उपयोग भी धर्म प्रचार में करते हैं। 1958 से आज तक यह कार्य निर्बाध गति से चालू है। 3 मार्च 1986 को वर्तमान केन्द्रीय गृह राज्य मन्त्री श्री पी. चिदम्बरम् ने बताया कि आजकल विदेशी धन का दौर बढ़ रहा है। 1984 के दौरान जर्मन गणराज्य, अमरीका, फ्रांस, बेल्जियम और यूनाइटेड किंगडम ने कुल मिलाकर भारत में सक्रिय संस्थानों को 1 अरब 41 करोड़ 38 लाख 11 हजार 286 रुपये की धन राशि दी। भारतीय स्वयंसेवी संगठनों को मुख्यतया इन पांचों देशों की ओर से धन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मिलता है। इन देशों में अनेक संस्थाएं (सभी चर्च या ईसाई प्रतिष्ठानों से जुड़ी हैं) इस धंधे में हैं। इनकी मार्फत देश की 19 संस्थाओं को 1981 से 1984 तक 4 करोड़ 57 लाख 38 हजार 3 सौ 37 रुपये मिले। अपने अतारांकित प्रश्न के उत्तर में श्री चिदम्बरम् ने राज्य सभा में संस्थाओं को मिली राशि और वर्षानुसार उनके दानदाता देश संगठनों का संपूर्ण विवरण दिया है, जो कोई भी देख सकता है। इसके अलावा गुप्त रूप से आने वाली धनराशि का कोई हिसाब-किताब नहीं।

विदेशी पादरियों का क्षेत्र और प्रभाव

विदेशी पादरियों ने देश को 63 भागों में बांट रखा है। हर एक भाग को एक विदेशी राष्ट्र चला रहा है तथा भारत का 26,000 वर्ग मील क्षेत्र विदेशी ईसाई पादरियों के प्रभाव में है। सन् 1947 में विदेशी पादरियों की संख्या 2071 थी। यह सन् 1956 में बढ़कर 6887 हो गई व इस समय 9726 से अधिक है। इसके अतिरिक्त 54,000 महिला पादरी इस कार्य में लगे हुए हैं।

ईसाई गतिविधियों के केन्द्रों की भरमार

भारत में गिरजाघरों की कुल संख्या 24494 है और 10433 स्कूल देश में चल रहे हैं। 102 कालेज और 652 छात्रवास हैं जिनमें रात और दिन मिशन के संस्कार भरे जाते हैं। 1196 अस्पताल और 688 अनाथालय तथा अरबों की चल व अचल संपत्ति के सहारे से धर्मान्तरण रूपी धार्मिक शोषण आज भी धड़ल्ले से चल रहा है।

राष्ट्रांतरण का राजनैतिक मंशा

इस प्रकार धर्मपरिवर्तन की एक भीषण समस्या बन गई है। इस समस्या की भीषणता कितनी उग्र है। इसकी कल्पना तब और भी स्पष्ट हो जाती है, जब हम देखते हैं कि इस धर्मपरिवर्तन का आधार धार्मिक न होकर शुद्ध राजनैतिक है। लोगों को ईसाई धर्म में दीक्षित कर लेने से ही उन विदेशी मिशनरियों का कार्य समाप्त नहीं हो जाता; उनके हृदय को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रद्धा को अपनी मातृभूमि, संस्कृति, देश और राष्ट्र से हटाकर अन्यत्र स्थापित करने का सुनियोजित और सफलतापूर्वक प्रयत्न किया जाता है। मिजोरम, मेघालय, नगालैंड व झारखंड के पृथक्तावादी आंदोलन इसके प्रत्यक्ष प्रमाण है। चर्च राजनैतिक गतिविधियों के केन्द्र बने हुए हैं।

बेनकाब चेहरे

महात्मा गांधी के शिष्य, प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डा. जे. सी. कुमारप्पा लिखते हैं कि अफ्रीका के पास भूमि थी पर बाइबिल नहीं था, अब उनके पास बाइबिल है पर भूमि नहीं है। इससे पूर्वी देश यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पश्चिम का राजनैतिक तरीका है पहले मिशनरी भेजना, फिर व्यापारी भेजना और फिर सेना और शस्त्र भेजकर असहाय लोगों की भूमि तथा उनकी प्राकृतिक संपत्तियों को हड़प लेना।

उपरोक्त विचारों के बाद भारत में धर्मपरिवर्तन की भयंकरता का अन्दाज डा. वारियर एल्विन की बात पढ़कर लगाया जा सकता है, जो उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखी है। उनके अनुसार 'छोटा नागपुर में लाखों आदिवासियों का धर्मपरिवर्तन किया जा चुका है। सौन्दर्य से पूर्ण संथाल परगना शीघ्रतापूर्वक ईसाई देश बन रहा है। गंगापुर स्टेट के आदिवासियों में से प्रत्येक का धर्मपरिवर्तन किया जा चुका हैं। करेन लोगों की पूरी जाति को ही धर्म की दीक्षा दी जा चुकी है और लुशाई जाति का भी यही हाल है। पश्चिम भारत में भील और अन्य जातियों का धर्मपरिवर्तन जोर-शोर से किया गया है। अभी जैसी प्रगति हो रही है, उससे आदिवासियों की समूची जनसख्या का धर्मपरिवर्तन हो जायेगा।

यह एक झगड़ालू राष्ट्र विरोधी आक्रामक अल्पसख्यक समाज में बदल जायेगा, जिससे पुराने सद्गुण नगण्य ही रहेंगे और जो भारत में शासन के लिये कांटा साबित होगा।

धर्मान्तरण राष्ट्रांतरण को जन्म देता है

इस लिए ईसाई स्वाधीनता सेनानी मंच के अध्यक्ष डा. रोजसियानो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मोरेस ने धर्म स्वातंत्र्य विधेयक (जो जनता शासन में लाया जाना था) का समर्थन करते हुए लिखा है कि यदि धर्मान्तरण नहीं रोका गया तो भारत का पुनः विभाजन हो जायेगा और सत्ता विदेशी प्रभावों के अधीनस्थ वर्चों में केन्द्रित हो जायेगी।

डा. आम्बेडकर

भारतीय संविधान के निर्माता डा. आम्बेडकर मिशनरियों के धर्म परिवर्तन कार्य को भारतीय संस्कृति का विरोधी मानते थे। इसलिए 1959 में बौद्ध धर्म अंगीकार करते समय उन्होंने कहा था कि बौद्ध धर्म भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। मैंने इस बात का पूर्ण ध्यान रखा है कि मेरा धर्मान्तरण भारत के इतिहास और संस्कृति की परम्पराओं को नुकसान न पहुंचाये।

गांधी जी द्वारा विरोध

धर्मान्तरण से राष्ट्रांतरण के खतरे को मद्देनजर रखते हुए ही शायद गांधी जी ने सदैव ईसाई मिशनरियों द्वारा संचालित धर्मपरिवर्तन का विरोध किया था। 12 जून 1937 के हरिजन में उन्होने लिखा कि ईसाई मिशनरियों द्वारा कहीं भी करवाया जाने वाला धर्मान्तरण किसी भी अर्थ में आध्यात्मिक कार्य नहीं है। यह केवल सुविधा के लिए है।' 11 मई 1935 को गांधी जी ने हरिजन में लिखा 'यदि मेरे पास अधिकार होते और मैं उन्हें कानून का रूप दे सकता तो मैं निश्चय ही धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध लगा देता।' 24 अप्रैल 1931 के यंग इंडिया में गांधी जी ने लिखा 'मेरे विचार से मानवता की आड़ में धर्मांतरण अस्वस्थता का द्योतक है। अन्य व्यापारों की तरह धर्मान्तरण भी आजकल एक व्यापार बन गया है। मुझे ध्यान है कि मैंने एक ऐसी रिपोर्ट पढ़ी थी, जिसमें कहा गया कि प्रति व्यक्ति धर्म परिवर्तन पर कितना खर्च हुआ और बाद में अगली फसल के लिए बजट प्रस्तुत किया गया था।

धर्मान्तरण से देश तथा राष्ट्र के प्रति भक्ति नष्ट होती है

मध्य प्रदेश की सरकार द्वारा 1956 में ईसाई मिशनरियों की गति-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विधियों की जांच हेतु न्यायधीश वी. एस. नियोगी की अध्यक्षता में गठित समिति ने अपने प्रतिवेदन (नियोगी रिपोर्ट) में लिखा है कि अनेक स्थानों पर मिशन ऐसे कार्य करते हैं कि जिनका धर्मपरिवर्तन हो जाता है उनकी आस्था अपने समाज के प्रति नहीं रहती और इस कारण उनकी देश तथा राष्ट्र के प्रति भक्ति भी नष्ट हो जाती है। बहुमत के धर्म के विरुद्ध योजनाबद्ध तथा जानबूझकर प्रचार किया जाता है, जिसका उद्देश्य समाज की शांति को भंग करना है। संभवत: उपरोक्त सभी प्रकार के तथ्यों को ध्यान में रखकर ही कांग्रेस के शासनकाल में मध्य प्रदेश और उड़ीसा में धर्म-स्वातंत्र्य अधिनियम पारित किये गये और जनता शासन में केन्द्र प्रशासित क्षेत्र अरुणाचल में भी ऐसा विधेयक पारित किया गया। पर आज आवश्यकता है सारे देश में ऐसे कानून बनाने की, जिनसे राष्ट्रविरोधी गतिविधियों पर अंकुश लग सके। गांधी जी ने कहा था मेरे पास शक्ति हो तो धर्मपरिवर्तन पर प्रतिबंध लगा दूं। आज सत्ता पक्ष में बैठे लोग गांधी जी के बताये मार्ग पर चलने की दुहाई देते नहीं अघाते पर क्या वे गांधी जी के संकल्प को पूरा करने में तत्पर हैं ? खेदपूर्ण बात तो यह है कि मध्य प्रदेश सरकार ने डेढ़ दर्जन विदेशी पादरियों को देश विरोधी गतिविधियों के कारण देश से निकाल दिये जाने का आदेश दिया था पर राजनैतिक दबाव या स्वार्थपरता के कारण उन देश द्रोहियों को देश से बाहर नहीं किया गया।

राष्ट्रवादी शक्तियां एक मंच पर आकर सामना करें

ईसाई मिशनरियों का राष्ट्रविरोधी प्रचार आज इतना व्यापक हो चुका है कि हर विचारवान् व्यक्ति राष्ट्र गगन पर उठने वाले इन काले बादलों की ओर भय व चिंता की दृष्टि से देखने लगा है, जिसके द्वारा झारखंड, नगालैंड, मिजोरम, मेघालय आदि को देश से पृथक् करने के आंदोलन चलाये जाते हैं। इन सब पृथक्तावादी तत्वों के मनसूबे असफल करने के लिए राष्ट्रवादी शक्तियों विशेषकर युवा वर्ग को खुलकर एक मंच पर आना चाहिए तथा इस राष्ट्रीय समस्या से निपटने के लिए व्यापक कार्यक्रम बनाने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चाहिए जिनके तहत जहां-जहां मिशनरी सक्रिय हैं वहां-वहां राष्ट्रवादियों को भी समाज सेवा के अनेकानेक कार्यक्रम चलाने चाहिए तथा इन गरीब भोले-भाले वनवासियों को स्वावलंबी बनाने के लिए शिक्षा के माध्यम से ऐसे कुटीर उद्योग सिखाने चाहिए, जिनसे वे अपने पैरों पर खड़े हो सके तथा अपनी आवश्यकता की वस्तुओं को आसानी से प्राप्त कर सकें, जिनके अभाव में उन्हें अपना धर्म छोड़ना पड़ता है। इसके साथ ही देशद्रोहियों को देश से निकलवाने के लिए जन जागरण करें ताकि सरकार बाध्य होकर देश-द्रोहियों को देश निकाला दे सके।

सैनेटर मार्क हन्ना अपनी कोठी के लान में टहल रहे थे कि उन्होंने एक छोटे से लड़के के ये शब्द सुने—

'मेरी कामना है कि मेरे पास हन्ना उस टूटे-फूटे मकान में रहें, जिस में आजकल मुझे रहना पड़ रहा है।"

हन्ना शीघ्र ही अपने कमरे में आए। उन्हों ने चपरासी द्वारा उस लड़के को बुलवाया और कहा—"तो तुम्हारी इच्छा है कि मेरा सारा धन तुम्हारे पास हो और मैं उस मकान में रहूं। मान लो, तुम्हारी यह इच्छा पूरी हो जाए तब तुम क्या करोगे ?"

लड़के ने स्थिति का जायजा लेते हुए प्रसन्नता व्यक्त की और बोला—"सब से पहले मैं आप को उस पुराने मकान से निकाल कर रहने के लिए अच्छा-सा बंगला दूंगा।"

× × ×

नेता जी अपनी याददाश्त को ले कर चिन्तित थे। याद रखने की चीजें भूल जाते और भूल जाने की बातें याद रखते। इसी कारण वे एक बार अपना भाषण भी भूल गए थे। अपनी इसी परेशानी का रोना रोते हुए उन्हों ने कहा—"भविष्य में मैं प्रयत्न करूंगा कि मेरी याददाश्त ठीक रहे और मैं कुछ भूलूं नहीं।"

"आखिर आप कौन-कौन-सी बातें विशेष रूप से याद रखना चाहते हैं ?"

"मैं इन्टरव्यू देते समय यह याद रखना चाहता हूं कि मुझे क्या-क्या भूल जाना है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैरो एन. डम टैक्सास ए. ऐण्ड आई यूनिवर्सिटी के भूतपूर्व अध्यक्ष और पत्रकारिता के अवकाशप्राप्त अध्यापक हैं।

हिन्दू उपेक्षावृत्ति को समाप्त करने की आवश्यकता

—हैरो एन. डैक्ष

भारत में धर्मनिरपेक्षता शब्द बासा और बंजर हो गया है, क्योंकि हमारे शासकों की नई नस्ल ने इस शब्द को बार-बार दोहराया है। अब इसकी स्थिति बैसाखी की-सी हो गई है। एक क्रियात्मक अवधारणा के रूप में अमरीका में धर्मनिरपेक्षता इसलिए विकसित हुई कि राजकीय धर्म की स्थापना को रोका जाये और राज्य व धर्म के बीच पृथक्ता की अभेद्य दीवार खड़ी की जाये।

यदि धर्मनिरपेक्षता का अर्थ यह है कि राज्य किसी धार्मिक अल्पसंख्यक से भेदभाव न करे, तो न्यायशील लोकतन्त्रीय सिद्धान्तों से प्रतिबद्ध कोई व्यक्ति उसपर विवाद खड़ा न करेगा। लेकिन यदि धर्मनिरपेक्षता का अर्थ परमात्मा की सत्ता से इनकार करना है और इसी को लोकतन्त्रीय राजनीति का केन्द्रबिन्दु मानना है और यदि इसका अर्थ नास्तिकता है, तो अब समय आ गया है कि इस अत्यन्त खतरनाक सिद्धान्त के विरुद्ध लड़ा जाये। इस प्रकार का सिद्धान्त नास्तिकों की तानाशाही का प्रारम्भ है। भगवान् की सत्ता चुरा लेने वाले अधिनायकवादी तानाशाह आज के युग के परम पापिष्ठ लोग हैं।

अमरीका के धर्मनिरपेक्ष समाज में यह मान लिया जाता है कि राष्ट्रपति को एक शुद्ध-पवित्र व्यक्ति होना ही चाहिए। वह न केवल धार्मिक सिद्धान्तों में विश्वास करता है, अपितु उनपर आचरण भी करता है। उसकी छवि ऐसी होती है कि वह कर्मठ ईसाई है और उसका सार्वजनिक जीवन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस छवि पर ही निर्भर करता है । लेकिन भारत का कुछ और ही हाल है । स्वर्गीय डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद एक ईमानदार धर्मभीरु और कर्मकाण्ड हिन्दू थे । लेकिन क्योंकि वे ऐसे थे, इसलिए अनैतिक, अधार्मिक और पतित हिन्दू बुद्धिजीवियों का एक वर्ग उनका मजाक उड़ाया करता था । वे धर्मनिरपेक्ष भारत के ढांचे में फिट नहीं बैठते थे ।

क्योंकि जवाहरलाल नेहरू के, जो वामपन्थी विचारधारा वालों के प्रिय थे, और सब परिस्थितियों मे फिट बैठते थे, बारे में ऐसा समझा जाता था कि वे नास्तिक हैं, इसलिए यह फैशन ही हो गया कि हिन्दुत्व को "देहाती मूर्खता" कहकर उसका उपहास किया जाये । वैसे नेहरूजी इतने चतुर थे कि वे परमात्मा की अवधारणा के सम्बन्ध में साफ-साफ कुछ नहीं कहते थे । अपनी वसीयत में नेहरू जी ने लिखा था कि मेरी भस्मी गंगा नदी में विसर्जित की जाये । उनकी इस वसीयत से उनके वामपन्थी समर्थकों को काफी परेशानी हुई ।

अबतक भारत में धर्मनिरपेक्षता का गलत इस्तेमाल यह कहकर दक्षिण पंथी राजनैतिक दलों को बदनाम करने के लिए किया गया है कि वे भारत के धर्मनिरपेक्ष आदर्शों के लिए शक्तिशाली खतरा है । इतना ही नहीं, इसका इस्तेमाल अत्यन्त प्रतिगामी अल्पसंख्यक कट्टरता वादियों को प्रसन्न करने के लिए भी किया गया है । यहां यह लिख देना उपयुक्त होगा कि दक्षिणपंथी दल भारत की बहुदलीय राजनीति में एकदलीय शासन की निष्क्रियता और वामपंथी विचारधारावालों की परमात्मा से विमुख तानाशाही को तोड़ते हैं ।

भारत के राजनैतिक दृश्य के किसी भी निष्पक्ष प्रेक्षक को यह देखकर दुःख होना चाहिए कि जहां एक ओर पृथकतावादियों से नर्मी बरती जाती है वहां दूसरी ओर हिन्दू राजनैतिक दलों को बदनाम किया जाता है—यद्यपि उनकी देशभक्ति पर कोई उंगली नहीं उठा सकता ।

आइये जरा हम पिछले इतिहास पर दृष्टिपात करें । सन् 1973 में केरल के मुस्लिम लीगी इस बात के विरुद्ध थे कि नेहरू जी के लेखों का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संग्रह स्कूलों में पाठ्य पुस्तकों रूप में पढ़ाया जाये, क्योंकि उसमें स्वाधीनता से पूर्व के मुस्लिम लीगी रुख पर कुछ उचित आक्षेप किये गये थे। प्रत्येक समझदार नागरिक को यह दुराग्रह देखकर दु:ख हुआ, लेकिन केन्द्रीय सरकार मौन रही। यदि किसी हिन्दू राजनैतिक दल ने इस आधार पर ऐसा ही रुख अपनाया होता कि नेहरू जी ने दर्जनों बार उनके सदस्यों को प्रतिगामी कहा, तो शोर मचा दिया जाता, जबकि केरल की घटना का कोई नोटिस न लिया गया।

आम विश्वास है कि केन्द्रीय सरकार इसलिए चुप रही, क्योंकि यदि वह केरल सरकार के रुख की तीव्र निन्दा करती तो उसके दल को उत्तर प्रदेश में वोट न मिलते, जहां मध्यावधि चुनाव होने वाले थे। तुष्टीकरण की यह नीति पुरानी है। इससे न तो स्वाधीनता से पूर्व कोई लाभ पहुंचा और न अब पहुंच रहा है। हां, इससे मजहबी उन्माद और दुराग्रह अवश्य बढ़ता है।

दुराग्रहियों की चापलूसी करने का एक और उदाहरण हाल ही में सामने आया, जब शाहबानो के मामले के बाद मुस्लिम महिला (तलाक संबंधी अधिकारों की रक्षा) का बिल पास हुआ वैसे तो यह बिल है ही दोषपूर्ण, लेकिन इतने पर भी मुस्लिम सम्प्रदाय के धर्मोन्मादी वर्ग ने इसके विरुद्ध जेहाद छेड़ दिया।

सच्चे धर्मिक लोकतन्त्र का तकाजा है कि सारे भारत में एक जैसी नागरिक संहिता हो, लेकिन मुस्लिम महिला बिल लक्ष्य ओर से विमुख है।

क्योंकि जनता की स्मृति कमजोर होती है, इसलिए "कुरबान थ्योरी" की याद दिलाना उचित होगा उनके राजनैतिक नेता कहते थे कि भारत के मुसलमान हिन्दू भारत में एक अल्पसंख्यक के रूप में अपना भाग्य प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करें ताकि पाकिस्तान में इस्लाम अपने पूर्ववर्ती गौरव को प्राप्त कर सके। भारत के मुसलमान इस प्रचार से प्रभावित हो गये और उन्होंने मुस्लिम लीग को बढ़चढ़कर समर्थन दिया। परिणाम यह हुआ कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षु: क्या थे ?

वे न केवल क्रान्तिपूत थे, अपितु क्रान्तिदूत भी थे। उनकी रुचि केवल शोध में न थी, अपितु बोध में भी थी। उन्होंने सृष्टि को तो बदलने की चिन्ता की ही, उससे अधिक चिन्ता दृष्टि को बदलने की। वे शाखा न थे अपितु पूर्ण वृक्ष थे।

मुस्लिम सम्प्रदाय के प्रगतिशील और समझौतापसन्द तत्त्व पीछे जा पड़े।
यह देखकर चिंता होती है कि उत्तर प्रदेश फिर प्रतिगामी पुरातन-
पन्थियों का केन्द्र-बिन्दु बन गया है और केरल में पुनः मुस्लिम लीग की
दुरभिसन्धियां हो रही हैं।

भारतीय पृथक्तावादियों ने स्वाधीनता से पूर्व जो कुछ किया, उसके
बाद उनसे भारत में अन्य किसी भी देश की अपेक्षा अधिक अच्छा बरताव
हुआ। स्वाधीनता के बाद भारत में भेड़ों को भेड़ियों से अलग न किया
गया—न ही देशभक्तों को षड्यन्त्रकारियों से अलग किया गया। अब भी
कुछ कट्टरतावादियों ने शोर से आसमान सिर पर उठा रखा है। आखिर वे
चाहते क्या हैं ? क्या वे भारत का एक और विभाजन चाहते हैं ?

अब समय आ गया है कि मुस्लिम कट्टरतावादी, चाहे वे कितने भी
नेक इरादे वाले क्यों न हों, अपने आपको भारत की वास्तविकता के अनुरूप
ढालें।

प्रत्येक देश के अल्पसंख्यक संख्यकों के आचार शास्त्र से निभाव करते हैं।
भारत के मुस्लिम कट्टरतावादियों को भी बहुसंख्यकों के आचारशास्त्र और
जीवनशैली का ध्यान रखना चाहिये। कट्टरतावादियों के तुष्टीकरण की
आवश्यकता नहीं। उन्हें मनीषियों के परामर्श और सही दिशानिर्देश की
आवश्यकता है।

धर्मनिरपेक्षता का मतलब यह है कि किसी विशेष मजहब अथवा
सम्प्रदाय के साथ तरजीही सलूक न किया जाये। धर्मनिरपेक्षता राजकीय
धर्म की स्थापना का भी निषेध करती है। धर्म के बिना किसी स्थायी अच्छे
समाज का निर्माण नहीं हो सकता। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानन्द की जय

—पंडिता राकेशरानी

सारी धरती मिलकर बोले, जय दयानन्द ऋषिराज की।
अवनी-अम्बर में गूंजे, जय दयानन्द महाराज की॥
उठो आर्यजन, उठो वीरवर, वेद-ज्ञान फैलाओ रे।
त्रस्त मनुज के अन्तस्तल में, वेद-सुधा छितराओ रे॥
वेदामृत का पान करेंगे, दयानन्द का गान करेंगे।
समय आयेगा सत्य ज्ञान पर, सारे ही अभिमान करेंगे॥
तब बोलेंगे उच्च स्वरों में, ऋषिवर दयानन्द की जय।
मुनिवर दयानन्द की जय, ऋषिश्वर दयानन्द की जय॥
दयानन्द-सा नहीं हुआ है, मानव का उपकारी।
मनुज-मात्र का जीवन रक्षक, सत्यव्रती ब्रह्मचारी॥
उसके गीत गूंजाओ रे, धरती नई बनाओ रे।
तम-अज्ञान हटाओ रे, स्वर्ग यहां पर लाओ रे॥
आर्यवीर जागो अब तो तुम, जय बोलो ऋषिराज की।
जन-मन तक पहुंचा दो गाथा, मानवता अधिराज की॥
कर लो उसको कोटि प्रणाम, जो था युग का भाग्य ललाम।
सबसे ऊंचा और महान्, दिये सभी को शुभ वरदान॥
बलिदानी की जय-जयकार, वीर व्रती की जय-जयकार।
गूंजेगी जिस दिन अम्बर में, दयानन्द की जय-जयकार॥
(उस दिन) दनुज नहीं रह पायेगा, मनुज नहीं रो पायेगा।
कष्ट-क्लेश कट जायेगा, स्वर्ग धरा पर आयेगा॥
मिलकर बोलो, उठकर बोलो
बढ़कर बोलो, जमकर बोलो।
ऋषिवर दयानन्द की जय,
मुनिवर दयानन्द की जय॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानन्द और युगान्तर

—स्व. श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

उन्नीसवीं सदी का परार्द्ध भारत के इतिहास का अपर स्वर्ण प्रभात है। कई पावन-चरित्र महापुरुष अलग-अलग उत्तरदायित्व लेकर इस समय इस पुण्य भूमि में अवतीर्ण होते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती भी इन्हीं में एक महाप्रतिभामंडित महापुरुष हैं।

हम देखते हैं, हमें इतिहास भी बतलाता है, समय की एक आवश्यकता होती है। उसी के अनुसार धर्म अपना स्वरूप ग्रहण करता है। हम अच्छी तरह जानते हैं, ज्ञान सदा एकरस है, वह काल के बन्धन से बाहर है; और चूंकि वेदों में मनुष्य-जाति की प्रथम तथा चिरंतन ज्ञान-ज्योति स्थित है, इसलिए उसके परिवर्तन की आवश्यकता सिद्ध नहीं होती, बल्कि परिवर्तन भ्रमजन्य भी कहा जा सकता है। पर साथ-साथ इसी प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि उच्चतम ज्ञान किसी भी भाषा में हो, वह अपौरुषेय वेद ही है। परिवर्तन उसके व्यवहार कौशल, कर्म-काण्ड आदि में होता है, हुआ भी है। इसे ही हम समय की आवश्यकता कहते हैं। भाषा जिस प्रकार अर्थ-साम्य रखने पर भी स्वरूपतः बदलती गई है, अथवा, भिन्न देशों में, भिन्न परिस्थितियों के कारण अपर देशों की भाषा से बिलकुल भिन्न प्रतीत होती है, इसी प्रकार धर्म भी समयानुसार जुदा-जुदा रूप ग्रहण करता गया है। भारत के लिए यह विशेष रूप से कहा जा सकता है। बुद्ध, शंकर, रामानुज आदि के धर्ममत-प्रवर्तन सामयिक प्रभाव को ही पुष्ट करते हैं। पुराण इसी विशेषता के सूचक हैं। पौराणिक विशेषता और मूर्ति-पूजन आदि से मालूम होता है, देश के लोगों की रुचि अरूप से रूप की ओर ज्यादा झुकी थी। इसीलिए वैदिक अखंड ज्ञान-राशि को छोड़कर ऐश्वर्यगुणपूर्ण एक-एक प्रतीक लोगों ने ग्रहण किया। इस-तरह देश की तरक्की नहीं हुई, यह बात नहीं। पर इस तरह देश ज्ञान भूमि से गिर गया, यह बात भी है। जो भोजन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

शरीर को पुष्ट करता है, वही रोग का भी कारण होता है। मूर्ति-पूजन में इसी प्रकार दोषों का प्रवेश हुआ। ज्ञान जाता रहा। मस्तिष्क से दुर्बल हुई जाति औद्धत्य के कारण छोटी-छोटी स्वतंत्र सत्ताओं में छंटकर एक दिन शताब्दियों के लिए पराधीन हो गई। उसका वह मूर्ति-पूजन-संस्कार बढ़ता गया, धीरे-धीरे वह ज्ञान से बिलकुल ही रहित हो गई। शासन बदला, अंग्रेज आए। संसार की सभ्यता एक नये प्रवाह से वही। बड़े बड़े पंडित विश्व-साहित्य, विश्व-ज्ञान, विश्व-मैत्री की आवाज उठाने लगे, पर भारत उसी प्रकार पौराणिक रूप के माया-जाल में भूला रहा। इस समय ज्ञान स्पर्धा के लिए समय को फिर आवश्यकता हुई, और महर्षि दयानन्द का यही अपराजित प्रकाश है। वह अपार वैदिक-ज्ञान-राशि के आधार-स्तम्भ-स्वरूप अकेले बड़े-बड़े पंडितों का सामना करते हैं। एक ही आधार से इतनी बड़ी शक्ति का स्फुरण होता है कि आज भारत के युगान्तर साहित्य में इसी की सत्ता प्रथम है, यही जनसंख्या में बढ़ी हुई है।

चरित्र, स्वास्थ्य, त्याग, ज्ञान और शिष्टता आदि में जो आदर्श महर्षि दयानन्द जी महाराज में प्राप्त होते हैं, उनका लेशमात्र भी अभारतीय पश्चिमी शिक्षा-संभूत नहीं, पुन: ऐसे आर्य में ज्ञान तथा कर्म का कितना प्रसार रह सकता है, वह स्वयं इसके उदाहरण हैं मतलब यह है कि जो लोग कहते हैं कि वैदिक अथवा प्राचीन शिक्षा द्वारा मनुष्य उतना उन्नतमना नहीं हो सकता, जितना अंग्रेजी शिक्षा द्वारा होता है, महर्षि दयानन्द सरस्वती इसके प्रत्यक्ष खंडन हैं। महर्षि दयानन्द जी से बढ़कर भी मनुष्य होता है, इसका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता। यही वैदिक ज्ञान की मनुष्य के उत्कर्ष में प्रत्यक्ष उपलब्धि होती है यहीं आदर्श आर्य हमें देखने को मिलता है।

यहां से भारत के धार्मिक इतिहास का एक नया अध्याय शुरू होता है, यद्यपि वह बहुत ही प्राचीन है। हमें अपने सुधार के लिए क्या-क्या करना चाहिए, हमारे सामाजिक उन्नयन में कहां-कहां और क्या-क्या रुकावटें हैं, हमें मुक्ति के लिए कौन-सा मार्ग ग्रहण करना चाहिए, यह महर्षि दयानन्द

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सरस्वती ने बहुत अच्छी तरह समझाया है। आर्यसमाज की प्रतिष्ठा भारतीयों में एक नये जीवन की प्रतिष्ठा हैं, उसकी प्रगति एक दिव्य शक्ति की स्फूर्ति है। देश में महिलाओं, पतितों तथा जाति-पाति के भेद-भाव मिटाने के लिए महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज से बढ़कर इस नवीन विचारों के युग में किसी भी समाज ने कार्य नहीं किया। आज जो जागरण भारत में दीख पड़ता है, उसका प्राय: सम्पूर्ण श्रेय आर्यसामज को है। स्वधर्म में दीक्षित करने का यहां इसी समाज में श्रीगणेश हुआ था। भिन्न जाति वाले बन्धुओं को उठाने तथा ब्राह्मण-क्षत्रियों के प्रहारों से बचाने का उद्यम आर्यसमाज ही करता रहा है। शहर-शहर, जिले-जिले, कस्बे-कस्बे में इसी उदारता के कारण, आर्यसमाज की स्थापना हो गई। राष्ट्रभाषा हिन्दी के भी स्वामी जी एक प्रवर्त्तक हैं, और आर्यसमाज के प्रचार कीं तो यह भाषा ही रही है। अनेक गीत खिचड़ी शैली के तैयार किये और गाए गए। शिक्षण के लिए 'गुरुकुल' जैसी संस्थाएं निर्मित हो गईं। एक नया ही जीवन देश में लहराने लगा।

स्वामी जी से प्रचार के कुछ पहले ब्राह्मसमाज की कलकत्ता में स्थापना हुई थी। राजा राममोहनराय द्वारा प्रवर्तित ब्राह्मधर्म की प्रतिष्ठा, वैदान्तिक बुनियाद पर, महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर कर चुके थे। वहां इसकी आवश्यकता इसलिए हुई थी कि अंग्रेज सभ्यता को दीप-ज्योति की ओर शिक्षित नवयुवकों का समूह पतंगों को तरह बढ़ रहा था, पुन: शिक्षा तथा उत्कर्ष के लिए विदेश की यात्रा अनिवार्य थी, पर वे शिक्षित युवक वहां ब्राह्मणों द्वारा धर्म-भ्रष्ट कहकर समाज से निकाल दिये जाते थे, इसलिए वे ईसाई हो जाते थे, उन्हें देश के ही धर्म में रखने की जरूरत थी। इसी भावना पर ब्राह्मधर्म को प्रतिष्ठा तथा प्रसार हुआ। विलायत में प्रसिद्धि प्राप्त कर लौटने वाले प्रथम भारतीय वक्ता श्रीयुत केशवचन्द्र सेन भी ब्राह्मधर्म के प्रवर्त्तकों में एक हैं। इन्हीं से मिलने के लिए स्वामी जी कलकत्ता गए थे। यह जितने अच्छे विद्वान् अंग्रेजी के थे, अच्छे संस्कृत के न थे। इनसे बातचीत में स्वामी जी सहमत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं हो सके। कलकत्ता में आज ब्राह्मसमाज-मन्दिर के सामने, कार्नवालिस स्ट्रीट पर विशाल आर्यसमाज-मन्दिर भी स्थित है।

किसी दूसरे प्रतिभाशाली पुरुष से और जो कुछ उपकार देश तथा जाति का हुआ हो, सबसे पहले वेदों को स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने ही हमारे सामने रखा : हम आर्य हों, हिन्दू हों, ब्राह्मसमाज वाले हों, यदि हमें ऋषियों की सन्तान होने का सौभाग्य प्राप्त है और इसके लिए हम गर्व करते है, तो कहना होगा कि ऋषि दयानन्द से बढ़कर हमारा उपकार इधर किसी भी दूसरे महापुरुष ने नहीं किया, जिन्होंने स्वयं कुछ भी न लेकर हमें अपार ज्ञान-राशि वेदों से परिचित कर दिया।

देश में विभिन्न मतों का प्रचलन उसके पतन का कारण है, स्वामी दयानन्द जी की यह निर्भ्रांत धारणा थी। उन्होंने इन मत-मतान्तरों पर सप्रमाण प्रबल आक्षेप भी किये हैं। उनकी इच्छा थी कि इस मतवाद के अज्ञान-पंक से देश को निकालकर वैदिक शुद्ध शिक्षा द्वारा निष्कलंक कर दें।

वाममार्ग वाले तांत्रिकों की मन्द वृत्तियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा है कि मद्य, मांस, मीन, मुद्रा, मैथुन आदि वेद-विरुद्ध महा अधर्म कार्यों को वाममार्गियों ने श्रेष्ठ माना है। जो वाममार्गी कलार के घर बोतल-पर-बोतल शराब चढ़ावे और रात्रि को वारांगना से दुष्कर्म करके उसी के घर सोवे वह वाममार्गियों में सर्वश्रेष्ठ चक्रवर्ती राजा के समान है। स्त्रियों के प्रति विशद कोई भी विचार उनमें नहीं। स्वामी जी देशवासियों को विशुद्ध वैदिक धर्म में दीक्षित हो आत्मज्ञान ही-सा उज्ज्वल और पवित्र कर देना चाहते थे। स्वामी विवेकानन्द ने भी वामाचार-ग्रस्त देश के लिए विशुद्ध भाव वाले वैदांतिक धर्म का उपदेश दिया है।

आपने गुरु-परम्परा को भी आड़े हाथों लिया है। योगसूत्र के 'स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्' के अनुसार, आप केवल ब्रह्म को ही गुरु स्वीकार करते हैं। रामानुज-जैसे धर्माचार्य का भी मत आपको मान्य नहीं, और बहुत-कुछ युक्तिपूर्ण भी जान पड़ता है। आपका कहना है कि लक्ष्मी-युक्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाबाग्रण की शरण जाने का मन्त्र धनाढ्यों और माननीयों के लिया बनाया गया—यह भी एक दुकान ठहरी।

मूर्ति-पूजन के लिए आपका कथन है कि जैनियों की मूर्खता से इसका प्रचलन हुआ। तांत्रिकों तथा वैष्णवों ने भिन्न मूर्तियों तथा पूजनोपचारों से अपनी एक विशेषता प्रतिष्ठित की है। जैनी वाद्य नहीं बजाते थे, ये लोग शंख, घटा, घड़ियाल आदि बजाने लगे। अवतार आदि पर भी स्वामी जी विश्वास नहीं करते। 'न तस्य प्रतिमा अस्ति' आदि-आदि प्रमाणों से ब्रह्म का विग्रह नहीं सिद्ध होता, उनका कहना है।

ब्राह्मणों की ठग विद्या के सम्बन्ध में भी स्वामीजी ने लिखा है। आज ब्राह्मणों की हठपूर्ण मूर्खता से अपरापर जातियों को क्षति पहुंच रही है। पहले पढ़े-लिखे होने के कारण ब्राह्मणों ने श्लोकों की रचना कर-करके अपने लिए बहुत काफी गुञ्जाइश कर ली थी। उसी के परिणामस्वरूप वे आज तक पुजाते चले आ रहे हैं। स्वामीजी एक मन्त्र का उल्लेख करते हैं—

दैवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः।
ते मन्त्रा ब्राह्मणाधीनास्तस्माद्ब्राह्मणदैवतम्॥'

अर्थात् सारा संसार देवताओं के अधीन है, देवता मन्त्रों के अधीन हैं, वे मन्त्र ब्राह्मणों के अधीन हैं, इसलिए ब्राह्मण ही देवता है। लोगों से पुजाने का यह पाखण्ड बड़ी ही नीच मनोवृत्ति का परिचय है।

स्वामी जी ने शैव, शाक्त और वैष्णव आदि मतों की खबर तो ली ही है, हिन्दी-साहित्य के महाकवि कबीर तथा दादू आदि को भी बहुत बुरी तरह फटकारा है। आपका कहना है—'पाषाणादि को छोड़ पलंग, गद्दी, तकिए, खड़ाऊं, ज्योति अर्थात् दीप आदि का पूजना पाषाण-मूर्ति से न्यून नहीं। क्या कबीर साहब भुनगा था, वा कली था, जो फूल हो गया? जुलाहे का काम करता था, किसी पंडित के पास संस्कृत पढ़ने के लिए गया, उसने उसका अपमान किया। कहा, हम जुलाहे को नहीं पढ़ाते। इसी प्रकार कई पंडितों के पास फिरा, परन्तु किसी ने न पढ़ाया, तब ऊट-पटांग भाषा बनाकर जुलाहे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदि लोगों को समझाने लगा। तंबूरे लेकर गाता था, भजन बनाता था, विशेष पंडित, शास्त्र, वेदों की निन्दा किया करता था। कुछ मूर्ख लोग उसके जाल में फंस गए। जब मर गए, तब सिद्ध बना लिया। जो-जो उसने जीते-जी बनाया था, उसको उसके चेले पढ़ते रहे। कान को मूंदकर जो शब्द सुना जाता है, उसको अनहद शब्द-सिद्धान्त ठहराया। मन की वृत्ति को सुरति करते हैं, उसको उस शब्द के सुनने में लगाया, उसी को संत और परमेश्वर का ध्यान बतलाते हैं, वहां काल नहीं पहुंचता। बर्छी के समान तिलक और चंदनादि लकड़ी की कंठी बांधते हैं। भला विचार के देखो, इसमें आत्मा की उन्नति और ज्ञान क्या बढ़ सकता है?"

इसी प्रकार नानक जी के सम्बन्ध में भी आपने कहा है कि उन्हें संस्कृत का ज्ञान न था, उन्होंने वेद पढ़ने वालों को तो मौत के मुंह में डाल दिया है, और अपना नाम लेकर कहा कि नानक अमर हो गए—वह आप परमेश्वर है। जो वेदों को कहानी कहता है, उसकी कुल बातें कहानियां हैं। मूर्ख साधु वेदों की महिमा नहीं जान सकते। यदि नानक जी वेदों का मान करते, तो उनका अपना सम्प्रदाय न चलता, न वह गुरु बन सकते थे, क्योंकि संस्कृत नहीं पढ़ी थी, फिर दूसरों को पढ़ाकार शिष्य कैसे बनाते, आदि-आदि। दादू पंथ को भी आप इसी प्रकार फटकारते है। शिक्षा मार्जन तथा अपौरुषेय ज्ञान-राशि वेदों का आपका पक्ष है। मत-मतान्तरों के स्वल्प जल में वे आत्मतर्पण नहीं करते। वहाँ उन्हें महत्ता नहीं दीख पड़ती। पुनः भाषा में अधूरी कविता करके ज्ञान का परिचय देने वाले अल्पाधार साधुओं से पंडित-श्रेष्ठ स्वामी जी तृप्त भी कैसे हो सकते थे? इन अशिक्षित या अल्पशिक्षित साधुओं ने जिस प्रकार वेदों की निन्दा कर-कर मूढ़ जनों में वेदों के प्रतिकूल विश्वास पैदा कर दिया था, उसी प्रकार नव्य युग के तपस्वी महर्षि ने भी उन सबको सत्ता बताया, और विज्ञों को ज्ञानमय कोष वेदों की शिक्षा के लिए आमंत्रित किया। स्वामी नारायण के मत के विषय पर आप कहते है—'यादृशी शीतलादेवी तादृशो वाहनः खरः' जैसी गुसाई जी की धन-हरणादि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में विचित्र लीला है वैसी ही स्वामी नारायण की भी है।" माध्व मत के सम्बन्ध में आप का कथन है—"जैसे अन्यमतावलम्बी हैं वैसा ही माध्व भी है, क्योंकि ये भी चक्रांकित होते है। इनमें चक्रांकितों से इतना विशेष है कि रामानुजीय एक बार चक्रांकित होते हैं, और ये वर्ष-वर्ष फिर-फिर चक्रांकित कपाल में पीली रेखा और माध्व काली रेखा करते है। एक माध्व पंडित से किसी एक महात्मा का शास्त्रार्थ हुआ था। (महात्मा) तुमने यह काली रेखा और चांदला (तिलक) क्यों लगाया ? (शास्त्री) इसके लगाने से हम वैकुण्ठ को जायेंगे और श्रीकृष्ण का भी शरीर श्याम रंग का था, इसलिए हम काला तिलक करते हैं। (महात्मा) जो काली रेखा और चांदला लगाने से वैकुण्ठ में जाते हो तो सब मुख काला कर लेओ तो कहां जाओगे ?

स्वामी जी के व्यंग बड़े उपदेशपूर्ण है। आर्य-संस्कृति के लिए आपने नि:सहाय होकर भी दिग्विजय किया, और उसकी समुचित प्रतिष्ठा की। स्वामी जी का सबसे बड़ा महत्त्व यह है कि उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा की ओर नहीं देखा, वेदों की प्रतिष्ठा की है। ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाज के सम्बन्ध में आप का कहना है—"ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज के नियम सर्वांश में अच्छे नही, क्योंकि वेदविद्याहीन लोगों की कल्पना सर्वथा सत्य क्योंकर हो सकती है ? जो कुछ ब्राह्म समाज और प्रार्थना-समाजियों ने ईसाई मत में मिलने से थोथे मनुष्यों को बचाया और कुछ कुछ पाषाण आदि मूर्ति-पूजा से हटाया, अन्य जाल ग्रन्थों के फन्दे से भी कुछ बचाया इत्यादि अच्छी बातें हैं। परन्तु इन लोगों में स्वदेश-भक्ति बहुत न्यून है, ईसाइयों के आचरण बहुत से लिए हैं। खान-पान-विवाहादि के नियम भी बदल गए हैं। अपने देश की प्रशंसा व पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रही, उसके स्थान में पेट-भर निन्दा करते है, व्याख्यानों में ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भर-पेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियों का नाम भी नहीं लेते प्रत्युत ऐसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजों के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई भी विद्वान् नहीं हुआ, आर्यावर्ती लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं उनकी उन्नति कभी नहीं हुई। वेदादिकों की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रतिष्ठा तो दूर रही, परन्तु निन्दा करने से भी पृथक् नहीं रहते, ब्राह्मसमाज के उद्देश्य की पुस्तक में साधुओं की संख्या में 'ईसा', 'मूसा', मुहम्मद', 'नानक' और 'चैतन्य' लिखे हैं, किसी ऋषि-महर्षि का नाम भी नहीं लिखा।

आज शिक्षित सभी मनुष्य जानते हैं, भारत के अधःपतन का मुख्य कारण नारी जाति का पीछे रह जाना है, वह जीवन-संग्राम में पुरुष का साथ नहीं दे सकती, पहले से ऐसी निरावलंब कर दी जाती है कि उसमें कोई क्रियाशीलता नहीं रह जाती, पुरुष के न रहने पर सहारे के बिना तरह-तरह की तकलीफें झेलती हुई वह कभी-कभी दूसरे धर्म को स्वीकार कर लेती है, आदि-आदि। प. लक्ष्मण शास्त्री द्रविड़ जैसे पुराने और नए पंडित अनुकूल तर्क-योजना करते हुए, प्रमाण देते हुए यह नहीं मानते कि भारत की स्त्रियां उसके पराधीन-काल में भी किसी तरह दूसरे देशों की स्त्रियों से उचित शिक्षा, आत्मोन्नति, गार्हस्थ्य सुख-विज्ञान, संस्कृति आदि में घटकर हैं। इसी तरह धर्म और जाति के सम्बन्ध में उनकी वाक्यशैली, आज के अंग्रेजी शिक्षित युवकों अधूरी जचने पर भी, निरपेक्ष समीक्षकों के विचार में मान्य ठहरती है। फिर भी, हमें देखना है कि आजकल के नवयुवक-समुदाय से महर्षि दयानन्द, अपनी वैदिक प्राचीनता लिए हुए भी नवीन सहयोग कर सकते है या नहीं। इससे हमें मालूम होगा हमारे देश के ऋषि जो हजारों शताब्दिओं पहले सत्य-साक्षात्कार कर चुके हैं, आज की नवीनता से भी नवीन हैं। क्योंकि सत्य वह है जो जितना ही पीछे है, उतना ही आगे भी, जो सबसे पहले दृष्टि के सामने है वही सबसे ज्यादा नवीन है।

ज्ञान की ही हद में सृष्टि की सारी बातें हैं। सृष्टि की अव्यक्त अवस्था भी ज्ञान है। स्वामी जी वेदाध्ययन में अधिकारी भेद नहीं रखते। वे सभी जातियों की बालिकाओं-विद्यार्थिनिओं को वेदाध्ययन का अधिकार देते हैं। यहां यह स्पष्ट है कि ज्ञानमय कोष चाहे वह जड़-विज्ञान से सम्बन्ध रखता हो, धर्म-विज्ञान से नारियों के लिए युक्त है, वे सब प्रकार से आत्मोन्नति करने की अधिकारिणी हैं। इस विषय पर आप 'सत्यार्थ-प्रकाश' में एक मंत्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उद्धृत करते हैं—

"यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य: ।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय ।" यजु. अ. 26।2

'परमेश्वर कहता है कि (यथा) जैसे मैं (जनेभ्य) सब मनुष्यों के लिए (इमम्) इस (कल्याणीम्) कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देने हारी (वाचम्) ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का (आवदानि) उपदेश करता हूं, वैसे तुम भी किया करो। यहां कोई ऐसा प्रश्न करे कि जन-शब्दों से द्विजों का ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि स्मृत्यादि ग्रन्थों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ही को वेदों के पढ़ने का अधिकार लिखा है, स्त्री और शूद्रादि वर्णों को नहीं (उत्तर) ब्रह्मराजन्याभ्याम् इत्यादि देखो, परमेश्वर स्वयं कहता है कि हमने ब्राह्मण, क्षत्रिय, (आर्याय) वैश्य, (शूद्राय) शूद्र और (स्वाय) अपने भृत्य वा स्त्रियादि (अरणाय) और अति शूद्रादि के लिए वेदों का प्रकाश किया है, अर्थात् सब मनुष्य वेदों को पढ़-पढ़ा और सुन-सुनाकर विज्ञान को बढ़ा के अच्छी बातों को ग्रहण और बुरी बातों को त्याग करके दुःखों से छूटकर आनन्द को प्राप्त हों। कहिए, अब तुम्हारी बात मानें वा परमेश्वर की बात अवश्य माननीय है। इतने पर भी जो इसको न मानेगा, वह नास्तिक कहावेगा, क्योंकि 'नास्तिकों वेदनिन्दक:' वेदों का निन्दक और न मानने वाला नास्तिक कहाता है।"

स्वामी जी ने वेद के उद्धरणों द्वारा सिद्ध किया है कि स्त्रियों की शिक्षा, अध्ययन आदि वेद-विहित है। उनके लिए ब्रह्मचर्य के पालन का भी विधान है। स्वामी जी की इस महत्ता को देखकर मालूम हो जाता है कि स्त्री समाज को रखने वाले पश्चिमी शिक्षा-प्राप्त पुरुषों से वे बहुत आगे बढ़े हुए हैं। वे संसार और मुक्ति दोनों प्रसंगों में पुरुष के ही बराबर नारियों को अधिकार देते हैं। इस एक ही वाक्य से साबित होता है कि किसी भी दृष्टि से वे नारी-जाति को पुरुष-जाति से घटकर नहीं मानते।

आपका ही प्रवर्त्तन आर्यावर्त के अधिकांश भागों में, महिलाओं को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अध्यापन के सम्बन्ध में प्रचलित है। यहाँ स्त्री-शिक्षा-विस्तार का अधिकांश श्रेय आर्यसमाज को दिया जा सकता है। यहाँ की शिक्षा की एक विशेषता भी है। महिलाएं यहाँ जितने अंशों में देशी सभ्यता की ज्योति-स्वरूपा होकर निकलती हैं, उतने अंशों में दूसरी जगह नहीं। संस्कृति के भीतर से स्त्री के रूप में प्राचीन संस्कृति को ही स्वामी जी ने सामने खड़ा कर दिया है। ★

प्रकाशनादि विवरण फार्म-4

1. प्रकाशन स्थान	वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम अलीपुर, दिल्ली-36
2. प्रकाशक अवधि	मासिक
4. मुद्रक का नाम	राकेशरानी
क्या भारत का नागरिक है ?	हाँ
पता—	वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम अलीपुर, दिल्ली-36
5. सम्पादक का नाम	राकेशरानी
क्या भारत का नागरिक है ?	हाँ
पता—	वेद, मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम अलीपुर, दिल्ली-36

6. उन व्यक्तियों के नाम व पते, जो समाचारपत्र स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।

जनज्ञान मासिक, नई दिल्ली

मैं राकेशरानी, एतद् द्वारा घोषित करती हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी व विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य है।

ता. 1-3-988

—राकेशरानी, प्रकाशक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंजाब : अब पटाक्षेप होना चाहिये

—सुरेन्द्र सिंह कादियाण

राष्ट्र का प्रत्येक संवेदनशील, स्वदेशानुरागी, प्रबुद्ध एवं जागरूक घटक पंजाब समस्या से विचलित और क्षुब्ध है, क्योंकि स्वतंत्र भारत की यह सबसे बड़ी त्रासदी है, दर्दनाक हादसा है। इस समस्या का सबसे घृणित एवं खतरनाक पहलू यह रहा है कि जिन सिखों की देश-भक्ति और वीरता पर राष्ट्र को सदैव गर्व रहा है, वे ही भारत विरोधी विदेशी शक्तियों के हाथ का खिलौना बनकर परम्पराओं के ठीक विपरीत जाने-अनजाने राष्ट्र-द्रोह के मार्ग पर अग्रसर हो रहे हैं। पंथिक सत्ता ने इन राष्ट्रद्रोहियों को शरण देकर खुद अपने को प्रश्न चिह्नों से आवृत कर लिया है, जिससे उसकी विश्वसनीयता ह्रासोन्मुख हो चली है।

पंजाब भारत का सर्वाधिक समृद्ध और सम्पन्न राज्य है लेकिन एक मुर्दा शिर अर्थात् अकाली दल में जान फूंकने के लिए जानबूझकर आनन्दपुर साहब में मांगों का वितण्डा खड़ा किया गया। हाथ उठाकर इन मांगों का समर्थन करने वालों को शायद यह सुध भी नहीं रही कि देश के दूसरे हिस्सों पर दृष्टिपात किया जाता कि इसी देश में ऐसे लोग भी हैं, जिन्हें एक वक्त की रोटी भी मुश्किल से मयस्सर होती है, ऐसे लोग हैं जो अभिजात वर्ग के गुसलखानों से निकले पानी से अपनी प्यास बुझाते हैं, ऐसे भी लोग हैं जो अपनी गरीबी को ढकने के लिए अपनी जमीर को, अपनी आस्था को अपने धर्म को दूसरों के हाथ बेच देते हैं और ऐसे भी लोग हैं जिन्हें रहने को छत नसीब नहीं है, हवा और रोशनी के लिए भी वे आस लगाए बैठे हैं। यदि कोई भूखा रोटी के लिए चिल्लाए यदि कोई प्यासा पानी की फरियाद करे तो उसकी भूख और प्यास को समझा जा सकता है लेकिन जो अन्न के भण्डार की छत पर बैठ कर रोटी चाहे, दरिया में खडे होकर पानी मांगे या

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

या पावर हाउस के कंगूरे से रोशनी की गुहार लगाए तो उसकी बुद्धि पर तरस ही खाया जा सकता है। यही कारण था कि आनन्दपुर साहब प्रस्ताव को समचे राष्ट्र ने ठुकरा दिया और सहानुभुति की एक भी आवाज अकालियों के हक में नहीं उठी।

अकालियों को यह उपेक्षा असहनीय हो उठी और अपनी मांगों को मनवाने के लिए दबाव डालने की नीति अपनाई गई। इसी नीति का परिणाम है आतंकवाद और खालिस्तान का नारा। लेकिन स्वयं अकालियों को इस बात का अहसास नहीं हुआ कि किसी घर को फूंकने के लिए जब आग लगाई जाती है तो उसका धुआ उस घर में नहीं रहता बल्कि चारों ओर फैलता है और उसमें अपना भी दम घुटने लगता है। आतंकवाद और खालिस्तान आज अपने में इतने धारदार हथियार सिद्ध हो रहे हैं कि अकाली दल, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, पंथ तथा सिख नेतृत्व का अस्तित्व भी खतरे में जा पड़ा है। सिख समाज की मौजूदा हालत यह है कि पारस्परिक अविश्वास, प्रतिद्वन्द्विता, वैमनस्य और स्वार्थ ने उसे विनाश की दहलीज पर ला खड़ा किया है। जिस के हस्ताक्षर से आनन्दपुर साहब प्रस्ताव प्रसारित एवं प्रचारित हुआ उस संत हरचंद सिंह लोंगोवाल को बौखलाई हिंसा ने भून दिया। इस प्रस्ताव की नियामक शक्तियाँ भटकाव और अलगाव का शिकार होकर एक-दूसरे की जानी दुश्मन बन गई हैं। अकाली सरकार का गिरना, अकाली दल का दो हिस्सों में बट जाना, गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के चुनाव, अमृतसर की बजाय आनन्दपुर साहब में होने तथा दो अध्यक्षों का चुना जाना ऐसी ही प्रत्यक्ष घटनाएं हैं, जो भावी विनाश का संकेत दे रही हैं।

आतंकवाद को जितनी सफलता मिली, सिख समाज ने देश वासियों की उतनी ही सहानुभूति खोई है। आतंकवाद ने निरंकारियों, सनातनधर्मियों और आर्यसमाजियों को गोली का शिकार बनाया, उनकी शिक्षा संस्थाओं तथा उपासना स्थलों को भ्रष्ट किया, उसने कम्युनिस्टों, कांग्रेसियों राष्ट्रवादी सिखों भारतीय जनता पार्टी के नेताओं व कार्यकर्ताओं को मौत के घाट

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उतारा उनके पत्रकारों, शिक्षाविदों, वकीलों, संतों और पुलिस कर्मियों पर गोली दागने में संकोच नहीं किया, उनसे राह चलते, बसों में यात्रा करते, दुकानों से सौदा खरीदते निरपराध लोगों को भी नहीं बख्शा, उनके बैंक लूटे, सरकारी खजाने लूटे, पैट्रोल लूटे, हथियार लूटे वाहन लूटे, उसने प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी, संत हरचन्द सिंह लोंगोवाल और अवकाश प्राप्त सेनाध्यक्ष जनरल वैद्य जैसी विशिष्ट विभूतियों की जीवन-लीला समाप्त की। मुक्तसर और अन्य भागों में हिन्दुओं को इतना भयभीत किया गया कि हिन्दू पंजाब से पलायन करने लगे। इस समूचे तन्त्र को खड़ा करने के लिए आतंकवादियों ने विदेशी शक्तियों की सहायता ली, पुलिस प्रशासन और सरकार के साम्प्रदायिक तत्वों का सहयोग प्राप्त किया, तस्करों, विदेशी माफिया एजेंसियों, व्यापारियों, उद्योगपतियों तथा पंथिक शक्तियों से सहायता ली। स्पष्टतः पंजाब का प्रत्येक वर्ग आतंकवाद से उत्पीड़ित, शोषित और आतंकित हुआ है, जिसके फलस्वरूप गैर-सिख पंजाबियों तथा शेष भारतीयों के दिल-दिमाग में सिखों के प्रति असहानुभूति पैदा हुई, जिसकी प्रखर अभिव्यक्ति इन्दिरा हत्याकांड के बाद समूचे देश में तब देखने में आई, जब कतिपय राज्यों में सिखों की हत्याएं हुई, उनके मकान या दुकानें लूटी गईं। यद्यपि यह कांड एक दल विशेष, एक सरकार विशेष एक प्रशासन विशेष की साजिश का नतीजा था, लेकिन आम भारतीय ने सिखों की सहानुभूति में उफ नहीं की। वस्तुतः यह स्थिति राष्ट्रहित मे नहीं थी, लेकिन पंजाब समस्या का यह एक ऐसा पहलू था जिस पर सार्थक चिन्तन की शुरुआत हो सकती थी, लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा हुआ नहीं और आतंकवाद को प्रश्रय दी जाती रही तथा खालिस्तानी नारे पंजाब के आकाश में गूंजते रहे।

लगभग एक दशक तक इन पंक्तियों के लेखक ने पंजाब का पानी पिया है। उसकी सौंधी माटी में धूलिस्नान किया है, उसकी हरियाली और समृद्धि से अभिभूत हुआ है, उसकी परम्पराओं को जाना है, पंजाबियों की दिलेरी, मुहब्बत, स्वाभिमान, राष्ट्रभक्ति और शान्ति प्रियता को समझा है। लेकिन इस हंसते-खिलते चमन को पैशाचिकता और नृशंसता ने श्मशान बना दिया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। कतिपय दिशाहीन लोगों को इस दयनिय स्थिति पर गर्व का अहसास हो सकता है, लेकिन यह अहसास न तो समूचे पंजाब का अहसास रहा है और न कभी हो सकता है। जिसने हरे-भरे और हंसते-खिलते पंजाब को देखा है, वह आज के पंजाब को देखकर खून के आंसू बहाता है। क्योंकि वहां अब विदेशी राइफलें तथा स्टेनगनें गूंजती हैं, वहाँ के दरियाओं में अब नीला, निर्मल, शीतल नीर नहीं, इन्सान का खून बह रहा है, वहां की धरती पर अब शैतान का ताण्डव नृत्य होता है, पंजाब के खेतों में अब पीली सरसों नहीं, गन्दी राजनीति के जहरीले टेसू खिलते हैं। पंजाब को सर्वनाश की इस कगार पर जिसने पहुंचाया, यह जानने का हक हर उस इन्सान को है, जो कहीं न कहीं अपने को पंजाब से जुड़ा पाता है।

सच्चाई क्या है, वास्तविक अपराधी कौन है, और इस महारोग का उपचार क्या है, इस लीक पर चिन्तन-मथन करते हुए सम्भव है कि किसी दोराहे या चौराहे पर हम भटक गए हों, किसी अतिरेक, किसी भ्रांति किसी पूर्वग्रह के शिकार होकर गलत आकलन पर बैठे हों, लेकिन हमारा सतत प्रयास यही रहा है कि तथ्यों से खिलवाड़ न किया जाए, सच्चाई से बलात्कार न किया जाए, लेखकीय ईमानदारी का जनाजा न निकाला जाए क्योंकि ऐसा होने पर कोई भी रचना अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकती पंजाब में यादवी संहार की पौराणिक घटना दोहराई जा रही है, जिसके चलते किसी का भला नहीं हो सकता। इस बदनसीबी ने सामाजिक, धार्मिक नैतिक तथा राष्ट्रीय मूल्यों का अवमूल्यन किया है। उन्हें अधोगति में पहुंचा दिया है, अतः आत्म-विनाश के इस खेल का अब पटाक्षेप होना चाहिए।

किसी की चार दिन की जिन्दगी सौ काम आती है,
किसी की सौ बरस की जिन्दगी से कुछ नहीं बनता।

दफन हो जाये न खुशबू भी कही प्यार के साथ,
यही खुशबू तो है इस बज्म की हासिल साकी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज का मौलिक आधार

—स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

परमात्मा, जीवात्मा, प्रकृति, सृष्टि, मानव, समाज और विज्ञान के सम्बन्ध में आर्यसमाज का जो दृष्टिकोण है, वही उसका मौलिक आधार है। विद्वद्वरेण्य, प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्वामी सत्य प्रकाश जी ने संक्षेप में आर्यसमाज के उसी मौलिक आधार का विवेचन किया है और अन्त में धर्म के वैज्ञानिकीकरण और विज्ञान के अध्यात्मीकरण पर बल दिया है, क्योंकि मानव और विश्व का भविष्य तभी सुरक्षित रह सकता है।

सर्वश्रेष्ठ अध्येताओं के अनुसार हिमालय के आस-पास ही मनुष्य का अवतरण हुआ है। वहीं से उसकी संस्कृति का और मानवजाति की यात्रा का प्रारंभ होता है। वेद के दिव्य वाक्य मानव जाति के जीवन के आधार बने। कुछ काल प्रेम और आनन्द के साथ रहने के बाद यहीं से मनुष्य समस्त संसार में बिखर गये। नई परिस्थितियों ने मनुष्य जाति को नई भाषा, नये रीति-रिवाज और नये मानदंडों से सम्पन्न कर दिया। इसीलिए आज हम विविधताओं के संसार में निवास कर रहे हैं।

वेद समस्त मानव जाति की अटूट और अमूल्य निधि है। वैदिक ज्ञान के आलोक से समस्त संसार आलोकित हो उठा। कालोपरान्त ज्ञान के इस अप्रतिहत प्रवाह में अनेक विषाक्त धाराओं का सम्मिश्रण हो गया और ज्ञान विज्ञान की पावन वैदिक धारा ऐसी बदली कि उसे पहचानना भी कठिन हो गया। वैदिक ज्ञान के पुनरुद्धार की आवश्यकता अनुभव होने लगी। ऐसी संकटमय युग में स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने वैदिक ज्ञान की ज्योतिर्मय परम्परा को पुनर्जीवित किया। सन् 875 में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना कर धार्मिक और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। कतिपय दिशाहीन लोगों को इस दयनिय स्थिति पर गर्व का अहसास हो सकता है, लेकिन यह अहसास न तो समूचे पंजाब का अहसास रहा है और न कभी हो सकता है। जिसने हरे-भरे और हंसते-खिलते पंजाब को देखा है, वह आज के पंजाब को देखकर खून के आंसू बहाता है। क्योंकि वहाँ अब विदेशी राइफलें तथा स्टेनगनें गूंजती हैं, वहाँ के दरियाओं में अब नीला, निर्मल, शीतल नीर नहीं, इन्सान का खून बह रहा है, वहां की धरती पर अब शैतान का ताण्डव नृत्य होता है, पंजाब के खेतों में अब पीली सरसों नहीं, गन्दी राजनीति के जहरीले टेसू खिलते हैं। पंजाब को सर्वनाश की इस कगार पर जिसने पहुंचाया, यह जानने का हक हर उस इन्सान को है, जो कहीं न कहीं अपने को पंजाब से जुड़ा पाता है।

सच्चाई क्या है, वास्तविक अपराधी कौन है, और इस महारोग का उपचार क्या है, इस लोक पर चिन्तन-मथन करते हुए सम्भव है कि किसी दोराहे या चौराहे पर हम भटक गए हों, किसी अतिरेक, किसी भ्रांति किसी पूर्वग्रह के शिकार होकर गलत आकलन पर बैठे हों, लेकिन हमारा सतत प्रयास यही रहा है कि तथ्यों से खिलवाड़ न किया जाए, सच्चाई से बलात्कार न किया जाए, लेखकीय ईमानदारी का जनाजा न निकाला जाए क्योंकि ऐसा होने पर कोई भी रचना अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकती। पंजाब में यादवी संहार की पौराणिक घटना दोहराई जा रही है, जिसके चलते किसी का भला नहीं हो सकता। इस बदनसीबी ने सामाजिक, धार्मिक नैतिक तथा राष्ट्रीय मूल्यों का अवमूल्यन किया है। उन्हें अधोगति में पहुंचा दिया है. अतः आत्म-विनाश के इस खेल का अब पटाक्षेप होना चाहिए।

किसी की चार दिन की जिन्दगी सौ काम आती है,
किसी की सौ बरस की जिन्दगी से कुछ नहीं बनता।

दफन हो जाये न खुशबू भी कही प्यार के साथ,
यही खुशबू तो है इस बज्म की हासिल साकी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज का मौलिक आधार

—स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

परमात्मा, जीवात्मा, प्रकृति, सृष्टि, मानव, समाज और विज्ञान के सम्बन्ध में आर्यसमाज का जो दृष्टिकोण है, वही उसका मौलिक आधार है। विद्वद्वरेण्य, प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्वामी सत्य प्रकाश जी ने संक्षेप में आर्यसमाज के उसी मौलिक आधार का विवेचन किया है और अन्त में धर्म के वैज्ञानिकीकरण और विज्ञान के अध्यात्मीकरण पर बल दिया है, क्योंकि मानव और विश्व का भविष्य तभी सुरक्षित रह सकता है।

सर्वश्रेष्ठ अध्येताओं के अनुसार हिमालय के आस-पास ही मनुष्य का अवतरण हुआ है। वहीं से उसकी संस्कृति का और मानवजाति की यात्रा का प्रारंभ होता है। वेद के दिव्य वाक्य मानव जाति के जीवन के आधार बने। कुछ काल प्रेम और आनन्द के साथ रहने के बाद यहीं से मनुष्य समस्त संसार में बिखर गये। नई परिस्थितियों ने मनुष्य जाति को नई भाषा, नये रीति-रिवाज और नये मानदंडों से सम्पन्न कर दिया। इसीलिए आज हम विविधताओं के संसार में निवास कर रहे हैं।

वेद समस्त मानव जाति की अटूट और अमूल्य निधि है। वैदिक ज्ञान के आलोक से समस्त संसार आलोकित हो उठा। कालोपरान्त ज्ञान के इस अप्रतिहत प्रवाह में अनेक विषाक्त धाराओं का सम्मिश्रण हो गया और ज्ञान विज्ञान की पावन वैदिक धारा ऐसी बदली कि उसे पहचानना भी कठिन हो गया। वैदिक ज्ञान के पुनरुद्धार की आवश्यकता अनुभव होने लगी। ऐसी संकटमय युग में स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने वैदिक ज्ञान की ज्योतिर्मय परम्परा को पुनर्जीवित किया। सन् 875 में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना कर धार्मिक और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामाजिक क्रान्ति का शंख फूंक कर नवयुग का सूत्रपात किया। स्वामी दयानन्द ने वेद के पठन-पाठन का अधिकार सबको प्रदान किया। वेद की शिक्षाओं को समान रूप से सबके लिए उपादेय बताया। सन्निहित स्वार्थों के कारण भारत ही नहीं, अनेक देशों में नये धार्मिक सम्प्रदाय बन गए। अनेकानेक मतमतान्तरों ने जन्म लिया। उनके अन्धविश्वासों पर स्वामी दयानन्द ने निर्ममतापूर्वक प्रहार किया। स्वामी जी ने धर्म के स्वाभाविक, सहज, सार्वभौम स्वरूप का परिचय कराया। मानव जाति की एकता एवं अखण्डता पर बल देते हुए उन्होंने मानवता के मंगलमय मार्ग को प्रशस्त कर दिया।

परमात्मा

वेद का धर्म एकेश्वरवादी है। वेदानुसार परमेश्वर एक है, अनेक नहीं। वह सनातन है और ज्ञान का शाश्वत स्रोत है। वही अनन्त आनन्द का भण्डार है। वही परमेश्वर हमारा आश्रय और सृष्टि का कर्त्ता है। वह दयालु तथा न्यायकारी है। परमेश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापक तथा सर्वशक्तिमान् है। वह निराकार तथा अजन्मा है। वह सत्, चित एवं आनन्द है। ऐसा ही परमेश्वर मानने और पूजने योग्य है। परमेश्वर सम्बन्धी नाना अनर्गल धारणाओं से स्वामी दयानन्द ने हमें मुक्त किया। सत्यज्ञान से, सत्यनिष्ठ कार्य से, सेवाभाव से और योगाभ्यास से ही परमेश्वर प्राप्ति संभव है, ऐसी उन्होंने उद्घोषणा की।

जीवात्मा

वैदिक धर्मानुसार जीवात्मायें असंख्य हैं। प्रत्येक जीवात्मा अपने कर्मों के लिए उत्तरदायी है। पशु-पक्षी भी जीवात्मायुक्त हैं। पशु-पक्षी भोग योनियाँ हैं। मनुष्य ही एकमात्र उभय-योनि है। पशु-पक्षी सहज वृत्ति से अपना जीवन यापन करते हैं। मनुष्य बुद्धि और विवेक से काम लेता है। जन्म-मरण का चक्र शाश्वत काल से चल रहा है। धूपछांह की तरह सुख-दुख जीवन के साथ हैं। परन्तु मनुष्य परमेश्वर की भक्ति, परोपकार,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सदाचार आदि द्वारा मुक्ति की अवस्था को प्राप्त कर सकता है। मुक्तावस्था शाश्वत नहीं है, क्योंकि सान्त कर्मों का अनन्त फल कदापि नहीं हो सकता।

परमात्मा और जीवात्मायें पृथक्-पृथक् सत्तायें हैं। परमात्मा एक है और जीवात्मायें अनेक हैं। परमात्मा ज्ञान और आनन्द का स्रोत है परन्तु जीवात्मायें ज्ञान और आनन्द के लिए परमात्मा पर निर्भर है। परमात्मा सृष्टि का कर्त्ता और जीवात्मा भोक्ता है। परमात्मा अशरीरी और अजन्मा और जीवात्मा शरीर के माध्यम से जन्म-मरण के चक्र में आता-जाता रहता है। परमात्मा कर्माध्यक्ष है और जीवात्मा शुभ-अशुभ कर्मों का कर्त्ता और उनके फलों का भोक्ता है। परमात्मा सदा मुक्त है और जीवात्मा मुक्ति और बन्धन को प्राप्त होता रहता है।

प्रकृति

वैदिक सिद्धांतानुसार परमात्मा तथा जीवात्मा के सदृश प्रकृति भी अनादि है। ये तीनों तत्व सदा से हैं और सदा रहेंगे। आद्य प्रकृति का कोई उपरंग नहीं आद्य प्रकृति के सम्बन्ध में कुछ भी कहना अत्यन्त कठिन है। परमात्मा की शक्ति प्रकृति को नाना रूपों और रंगों में परिवर्तित कर सकती है। परमात्मा के तप से प्रकृति सृष्टि की संरचना करती है। अभाव से भाव की उत्पत्ति संभव नहीं है। बिना प्रकृति के सृष्टि बन ही नहीं सकती।

परमात्मा सृजन द्वारा ही अपने आपको अभिव्यक्त करता है। सृष्टि अटल शाश्वत नियमों पर आश्रित है। वैदिक सिद्धांतानुसार सृष्टि सत् एवं उद्देश्यपूर्ण है। सृष्टि में नियम, व्यवस्था तथा उद्देश्य से परमात्मा की महिमा का दर्शन होता है। सृष्टि का सृजन-संहार निरन्तर चलता रहता है इस दृष्टि से परमात्मा अहर्निश कर्म में लगा रहता है।

जीवन

परमात्मा सर्वोच्च नैतिक आदर्शों एवं मूल्यों का साकार रूप है। वैदिक परमात्मा एक अर्थ में नैतिक परमात्मा है। सत्य और दया का मूर्तिमान रूप है। नैतिक आदर्श नाना रूपों में अभिव्यक्त होते हैं। परमात्मा की रची

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सृष्टि का ज्ञान प्राप्त करो, उस ज्ञान से मानवजाति को सम्पन्न करो। यह हमारे जीवन का उद्देश्य है। अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि नैतिक मूल्यों के अभाव में जीवन का वैभव निस्तेज और निष्प्राण हो जाता है। साधना, सत्पुरुषों का संग, उपासना आदि द्वारा नैतिक आदर्शों को जीवन में उतारना सम्भव है, अन्यथा नहीं।

वेदानुसार सर्वोच्च नैतिक सत्ता है परमात्मा। गतदर्थ परमात्मा की प्रार्थना वैदिक उपासना पद्धति का अविभाज्य अंग है। परमात्मा को स्तुति-प्रार्थना उपासना की किंचित भी आवश्यकता नहीं है। स्तुति-प्रार्थना-उपासना से जीवात्मा परम शुद्धता को प्राप्त होकर सत्कर्मों को करने की सामर्थ्य से संलग्न हो जाता है स्तुति में हम परमात्मा के गुणों की परिगणना करते हैं जैसे दयालुता, न्यायकारिता आदि। प्रार्थना में हम परमात्मा से विनम्र मांग करते हैं कि ये समस्त गुण हमारे जीवन में आजायें। उपासना द्वारा परमात्मा की समीपता से नया तेज, नया ओज और नया जीवन उपलब्ध होता है। जीवात्मा स्व-पुरुषार्थ से ही परमात्मा की ओर अग्रसर हो सकता है। जीवात्मा और परमात्मा के मध्य किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं।

समाज

मनुष्य समाज में रहता है। समाज में ही जन्मता और बढ़ता है। समाज से ही वह भाषा और संस्कृति भी पाता है। इस नाते समाज के प्रति उसका जो दायित्व है, उससे वह मुंह नहीं मोड़ सकता। परमात्मा प्रेम का एक अर्थ समाज की निष्काम सेवा करना भी है। वर्णाश्रम व्यवस्था भी मनुष्य के अधिकारों के स्थान पर कर्त्तव्यों पर अधिक बल देती है। जब समाज कर्त्तव्यों की उपेक्षा कर अधिकारासक्त होता है, तब अव्यवस्था का साम्राज्य स्थापित हो जाता है। किसी भी समाजोपयोगी कार्य को हीन या अधम नहीं मानना चाहिए। कार्यों की गुरुता तथा प्रकृति भिन्न होते हुए भी उनका आध्यात्मिक मूल्य एक समान है। निष्ठा एवं सत्यता-सम्पन्न प्रत्येक कर्म मनुष्य को मुक्ति की ओर ले जाता है। कमजोर वर्ग की सहायता करना और उनके लिए उन्नति के अवसर प्रदान करना, समाज में शान्ति एवं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यवस्था के लिए अत्यन्त आवश्यक है। केवल शक्तिशाली को ही जीने का अधिकार है —ऐसा मानना सामाजिक सामंजस्य के सिद्धान्त पर निर्मम प्रहार है। स्वामी दयानन्द स्वतन्त्रता के साथ-साथ "सर्वहितकारी" शब्द का पुनः-पुनः प्रयोग करते हैं, क्योंकि स्वच्छन्दता सर्वनाश की जननी है।

सभी समाजों में कर्मकाण्डों का प्रचलन होना आवश्यक है। वैदिक धर्म में जीवन निर्माणकारी सोलह संस्कारों का विधान है। नामकरण, विवाह आदि सभी संस्कार जीवन की सत्ता एवं महत्ता वैदिक आदर्श के अनुसार जीवन का अन्तिम उद्देश्य प्राप्त करवाने में परम सहायक हैं।

आर्यसमाज की मान्यताओं और आस्थाओं के बारे में सार रूप में यह कह दिया है। जीवन के ये आधारभूत सिद्धान्त अखिल मानव जाति के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। हम सभी "अमृत-पुत्र" "पृथिवी पुत्र" हैं। मानव जाति का मंगल करने वाले सभी विचारक, आचार्य, चिंतक समान रूप से हमारे लिए आराध्य हैं।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना द्वारा मानव-महिमा का महादान कर मानव को दिव्य गरिमायुक्त करने का महान् प्रयत्न किया। पीड़ित-प्रताड़ित मानवता का आह्वान किया और अपने प्रबल उद्बोधन से मानवता को प्रगति पथ पर अग्रसर किया।

विज्ञान :

मैं आजीवन एक ही सार सूत्र का प्रचार करता चला आ रहा हूं। वह 'Rationalize your religion Spiritualize your science धर्म को बौद्धिकता और विज्ञान को आध्यात्मिकता का आधार दो। आर्य-समाज का यही मौलिक आधार है। इसी में मनुष्य जाति का मंगल है। विज्ञान ने हमें दैत्याकार शक्तियों का स्वामी बना दिया है। यदि हमने भीतरी अध्यात्मिक शक्तियों का विकास नहीं किया तो विज्ञान हमें महा विनाश की ओर ले जायेगा। इसमें सन्देह नहीं कि विज्ञान ने अनेक तथ्यों को समझने में हमारी सहायता की, और अन्धविश्वासों से छुड़ाया है। नयी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पन्नताय थी दीं। विज्ञान नये सृजन का भी कारण हो सकता है और संहार का भी। विज्ञान संसार को स्वर्ग भी बना सकता है और नरक भी। धर्माधारित विज्ञान से मनुष्य का कल्याण होगा।

अज्ञान और अन्धविश्वास-परिपूरित धर्म अधर्म ही है। ऐसा धर्म को दुःख प्रदान करता है। हमें आज के बुद्धिवादी युग में धर्म को तर्क-संगत आधार देने होंगे। बुद्धि का दीपक लेकर हमें धर्म क्षेत्र में भी उतरना होगा यदि मनुष्य को जीवित रहना है तो विज्ञान को अध्यात्म पर अधिष्ठित करना होगा और धर्म को तर्कसंगत आधार देना होगा।

परम मंगलम शक्ति के सम्मुख विनम्रता का भाव अपना कर निरन्तर सत्यान्वेषण में लगे रहकर मनुष्य जाति के कल्याण के लिए निष्काम भाव से कार्यरत रहें—यही वैदिक धर्म का आदर्श और उद्देश्य है, और इसी उद्देश्य की पूर्ति के हेतु दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। ☸

श्री भगवती प्रसाद खेतान दिवंगत

बम्बई सम्बन्धित क्षेत्रों में यह समाचार अत्यन्त दुःख के साथ सुना जायेगा कि खेतान ग्रुप आफ कन्सनर्स के संचालक श्री भगवतीप्रसाद खेतान का 3 फरवरी को यहां निधन हो गया। 12 फरवरी को उनका द्वादशा सम्पन्न हुआ।

दयानन्द संस्थान के प्रत्येक अच्छे कार्य में उनका सहयोग निरन्तर मिलता रहा संस्थान के संचालक उनकी पुण्य स्मृति में नतमस्तक हैं।

प्रभु से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

आर्य समाज रामपुरा कोटा का 89वां वार्षिकोत्सव 13-2-88 से 16-2-88 तक मनाया गया समारोह में मथुरा से प्रेम भिक्षु, प्रो. धर्मवीर जी अजमेर, सतपाल जी भजनोपदेशक दिल्ली तथा अन्ये स्थानीय उपदेशको ने भजन एवं उपदेश दिये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

माँ के आँसू

—श्यामसुन्दर

जीवन के अन्तिम क्षणों में जब रामप्रसाद बिस्मिल जेल में थे तो उन्होंने अपनी मां को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने लिखा— संसार में मेरी किसी भी भोग-विलास या ऐश्वर्य की इच्छा नहीं। केवल एक ही इच्छा है कि एक बार तुम्हारे चरणों की सेवा करके अपने जीवन को सफल कर लूं। किन्तु यह इच्छा पूर्ण होती दिखाई नहीं देती, क्योंकि मेरी मृत्यु का दुःखद समाचार बहुत जल्दी ही तुम्हें सुनाया जाएगा। मां, मुझे विश्वास है कि तुम यह समझकर धैर्य धारण कर लोगी कि तुम्हारा पुत्र माताओं की माता-भारत माता की सेवा में अपने जीवन को भेंट कर गया। उसने तुम्हारी कोख को कलंकित नहीं किया। जब स्वाधीन भारत का इतिहास लिखा जाएगा तो उसके किसी पृष्ठ पर उज्ज्वल, अक्षरों में तुम्हारा भी नाम लिखा जाएगा।'

बिस्मिल को फांसी का दण्ड सुनाए जाने के बाद एक दिन वे बिस्मिल से मिलने गोरखपुर जेल में गई। बिस्मिल मां को देखकर रो पड़े तो मां ने दृढ़ स्वर में कहा— मैं तो समझती थी कि मेरा बेटा बहादुर है, जिसके डर से अंग्रेज सरकार भी कांपती है। मुझे पता नहीं था कि वह मौत से डरता है। यदि तुम्हें रोकर ही मरना था तो व्यर्थ ही इस काम में आए।' बिस्मिल ने कहा—'मां, मुझे मृत्यु से जरा भी भय नहीं है। मैं तो तुम्हारी श्रद्धा के वशीभूत होकर प्रेम के आंसुओं से तुम्हारे चरणों को धोना चाहता हूं। मां, तुम विश्वास करो, मातृभूमि के लिए बलि होने में मुझे जो प्रसन्नता है, उसका वर्णन असम्भव है। ये आंसू तो श्रद्धा और प्रेम के आँसू है।

मां अन्तिम दिन भी अपने पुत्र से मिलने जेल गई। उस दिन जब मां पहुँचीं तो वे खुद फूट-फूट कर रोने लगी। माँ को इस प्रकार रोता देख बिस्मिल हक्का-बक्का रह गए। सोचने लगे कि क्या यह वही मां हैं, जो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उस दिन रोने पर मुझे डांट रही थीं। आज वे खुद रो रही हैं। माँ का रोना जब समाप्त हुआ तो बिस्मिल ने गम्भीर भाव से पूछा—मां, क्या तू मुझे पचाने के लिए क्षमा माँगने को कहने आई है? तू ने मुझे बताया था कि 'बुरे से बुरा स्वदेशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से बेहतर होता है। अगर तुम कहोगी तो मैं क्षमा मांग लूंगा। परन्तु मां की आँखों में आंसू आए यह मुझसे देखा जाता।

बेटे के वाक्य सुन मां बोली—'बेटे मैं इसलिए थोड़े ही रो रही थी कि आज तुझे फांसी लग जाने वाली है। यह तो वह दिन होगा, जिस दिन मेरे दूध की शान बढ़गी। मेरा आंचल धन्य हो जायेगा। मुझे तो यह सोचकर रोना आ गया था कि तुम्हें फांसी हो जाने के बाद जब भविष्य में दूसरी माताएं अपने पुत्रों को देश के लिए न्यौछावर कर रही होंगी, तब मेरे पास दूसरा पुत्र नहीं होगा, जिसे मैं देश के लिए न्यौछावर कर सकूंगी।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सान्ताक्रुज का 43 वां वार्षिकोत्सव 20 से 26 जनवरी तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ डा. सोमदेव जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञ की पुर्णाहुति 26 जन. को प्रातः हुई। वार्षिकोत्सव में स्वामी सत्य प्रकाश जी सरस्वती, पं. शान्ती प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी, श्री पन्नालाल जी पीयूष, श्री सतीश भुटानी, श्री सत्य पाल जी पथिक, पं. सत्यकाम जी विद्यालंकार, श्री प्रभुदास जी यादव आदि अनेक वक्तओं के प्रवचन तथा भजनोपदेशों से आर्य जनता लाभान्वित हुई।

26 जनवरी को प्रातः यज्ञ के उपरान्त आर्य युवा सम्मेलन का आयोजन श्री विश्वभूषण जी आर्य ने किया, आर्य युवकों ने व्यायाम, लाठी, जिमनास्टिक आदि के खेल गीत भजन नाटक आदि प्रस्तुत किये।

25 जनवरी को यज्ञ के साथ महिला सम्मेलन हुआ महिला देवियों ने महिलाओं में फैले अन्ध विश्वास एवं कुरीतियों को दूर करने के लिए घर-घर जाकर प्रचार कार्य करने का संकल्प लिया।

26 जनवरी को प्रातः श्री मधु देव लेकर विधान परिषद के सदस्य ने राष्ट्रीय ध्वजारोहण किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आखिर हमारी युवा पीढ़ी नशे के नरक में कैसे गिर जाती है ? इसके जिस कारण का सबसे अधिक उल्लेख किया जाता है, वह है मानसिक तनाव से मुक्ति पाने की कामना और मौजमस्ती की आकांक्षा ।

नशे में डूब रही है विश्वविद्यालय संस्कृति

—पृथ्वीनाथ पाण्डेय
—निशानाथ पाण्डेय

भारतीय विश्वविद्यालयों में नरक की जिन्दगी जीने वाले युवक-युवतियों की बढ़ती संख्या पर इन दिनों राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चिन्ता प्रकट की जा रही है । इण्डियन कौंसिल आफ रिसर्च इन्स्टीट्यूट के सर्वेक्षण के अनुसार नशे की आदत के सर्वाधिक शिकार विश्वविद्यालय के परिसर हैं, जहां सिगरेट और शराब का प्रचलन तो सामान्य हो गया है । इसके बाद हशीश, गांजा और एल. एस. डी. का नम्बर आता है ।

पांचवें दशक के अन्त में और छठे दशक की शुरूआत तक पश्चिम के विद्यालयों में नशीले द्रव्यों की पहुंच अपनी चरम सीमा पर थी । विश्व-विद्यालय ही क्या, सेना नौकरशाही और स्वास्थ्य सेवाओं, सभी क्षेत्रों में नशा करने वालों की संख्या बढ़ने लगी । इस नये पथ के अनुगामियों ने तो उस समय इसे सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक क्रान्तिकारी तक कह डाला था और इस सबके साथ कई बुद्धिजीवियों ने भी अपने आप को इससे जोड़ लिया था । महायुद्ध के बाद की युवा पीढ़ी अनास्था और कुण्ठा के दौर से गुजर रही थी अतः दुनिया के इतिहास में पहली बार सामूहिक रूप से हशीश और गांजे का अनुभव प्राप्त किया गया । पश्चिम में कविता तक में मुहावरे तलाशे गये और वर्तमान सामाजिक वर्जनाओं को ध्वस्त कर देने वाले तर्क भी सीखे और सिखला दिये गये ।

एल. एस. डी. की खोज स्वीडन के रसायन शास्त्री होफमैन ने ही की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

थी। सन 1930 में इसकी खोज की गई थी। उसे फिर से तलाश कर नई विभूति देने वाले तत्व के रूप में स्थापित किया गया? संगीत का क्षेत्र क्यों बचे? इसलिए एक संगीत चन्द महीनों में ही अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर ऐसा जम गया कि उसे उखाड़ फेंकना व्यावसायियों के लिए भारी पड़ गया। फिर "बीटल्स क्यों पीछे रहें। पश्चिम की इस चौकड़ी ने चाजट पेपर के एल. पी रेकार्डस द्वारा दुनिया को ही मानो एक कर दिया। यह संगीत का स्वर लोहे की दीवार के पार पहुंच गया; रूस भी इससे न बच सका।

यह तो थी पश्चिम की बात, थोड़े ही समय में यह हवा पूर्व की ओर बढ़ने लगी। इस दौरान एक नई सभ्यता ने जन्म ले लिया। यह सभ्यता काफी ख्याति प्राप्त कर चुकी थी इस सभ्यता को "हिप्पी सभ्यता" का नाम दिया। बड़ी-बड़ी जटाएं, गन्दे कपड़े और मदहोश से बने परदेशी आध्यात्मिक शान्ति के लिए भांग, गांजा चरस की तलाश में दर-दर भटकने लगे। वाराणसी, इलाहाबाद, जयपुर, दिल्ली, बम्बई और गोआ इन्हें रास आ गए। भारत में ये हिप्पी लोग जहाँ-जहां बसेरा बनाते रहे, वहीं भांग-गांजा और चरस की संस्कृति फैलती रही और एक समय ऐसा आ पहुंचा, जब हमारे देश का युवा वर्ग इन तथाकथित हिप्पियों का दीवाना बन गया।

यहां कुछ उन विश्वविद्यालयों का उल्लेख करना प्रासंगीक होगा, जहाँ के छात्र-छात्राएं भयंकर रूप से नशे का सेवन करते हैं। सबसे पहले सौन्दर्य नगरी बम्बाई को ही लें। बम्बई विश्वविद्यालय में ऐसे अनेक छात्र-छात्राएं हैं, जिनमें चरस, गांजे से लेकर मार्फीन और एल. एस. डी. के बारे में न तो कोई अपराध भाव है और न ही कोई शिकवा शिकायत। इन सबका सेवन वे अपने विद्यार्थी जीवन का अंग मानते हैं।

उनका जीवन-दर्शन एवं समाज के प्रति विचार जानने के बाद यह भी जान लें कि वे पढ़ाई-लिखाई के मामले में अच्छे हैं। कुछ तो वाद-विवाद प्रतियोगिताओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी अन्य विद्यार्थियों की अपेक्षा बहुत अधिक आगे रहते हैं। एक सामान्य विद्यार्थी, जो इन चीजों में पड़ जाता है, वह जरूरी है कि इन चीजों को केवल फैशन के लिए अपनाता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हो। धीरे-धीरे अपने आसपास की चीजों के प्रति जागरूक होता है। जागरूकता उसे विद्रोही भावना एवं उयनी मान्यताओं के परिवर्तन की ओर ले जाती है।

दिल्ली विश्वविद्यालय में कुल 57 प्रतिशत छात्र-छात्राएं किसी न किसी रूप में नशे का सेवन करते है। इसमें तम्बकू, शराब, भांग, मेन्डेक्स स्टिमुलेंट वगैरह आते हैं। ज्यादातर लोगों ने तम्बाकू पिया है। और इसके बाद शराब का नम्बर आता है। छात्राओं का अधिकांश भाग यानी 78 प्रतिशत वर्ग इसके सेवन से अभी मुक्त हैं। यहां तक कि यह वर्ग एन. पी. सी. जैसी गोलियां भी नहीं लेता है। शेष 22 प्रतिशत लड़कियें में से अधिकतर दर्द निवारक (पेनकिलर) गोलियां लेती हैं और सिगरेट, शराब आदि को "सामाजिक स्वीकृति" भी देती हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय में नशाखोरी पिछले 15 वर्षों में 20 प्रतिशत बढ़त है। वैसे विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले 43 प्रतिशत विद्यार्थी किसी भी नशीली दवा या नशे के शिकार नहीं हैं, जबकि विदेशों में पढ़ने वाले 98 प्रतिशत विद्यार्थी नशा सेवन करते हैं।

मजा लेने के उद्देश्य से अधिकतर लड़के-लड़कियां नशे का सेवन करती हैं और बाद में छोड़ देती हैं। संभवतः उम्र के इस सर्वथा नए और अछूते मोड़ पर वे अपने भीतर के "दुस्साहस" को द्रव्यों के माध्यम से अभिव्यक्ति देना चाहते हैं।

भांग और गांजा वाराणसी की सांस्कृतिक परम्परा से जुड़े हैं। छात्र छात्राएं भी इनसे अछूते नहीं रहे है। पिछले कुछ वर्षों से तो इस नगर पर हिप्पियों की विशेष कृपा रही हैं काशी की "फक्कड़" जिन्दगी" में वे सहजता से घुलमिल गये। उसके साथ एल. एस. डी. आदि अनेक मादक नशे भी आए।

पता चला है कि जिन छात्र-छात्राओं की प्रारम्भिक शिक्षा कान्वेन्ट, सैनिक अथवा पब्लिक स्कूलों में हुई, उनमें से अधिकतर हाईस्कूल से ही नशे की आदत पाल ली थी। छात्रावास में रहने वाले छात्र-छात्राओं में मेडिकल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तथा इंजीनियरिंग के छात्र-छात्राओं मे पश्चिम का अनुकरण कर "डैटिंग" करने वालों में सर्वाधिक नशे की प्रवृत्ति पाई गई। ये समाज के उच्च वर्ग से आते है और इनके परिवारों में ही धूम्रपान, शराब तथा अन्य मादक पदार्थों का सेवन होता आया है।

गांजा, भाँग, चरस, हेरोइन, स्मैक आदि का सेवन हिन्दी भाषी क्षेत्रों में ग्रामीण अंचल से आए हुए छात्र-छात्राओं में अधिक पाया गया है, जबकि शराब, एल.एस. डी. को शपर में रहने वाले छात्र-छात्राओं ने अपनाया है।

विश्वविद्यालय के 35 प्रतिशत छात्र और 15.35 प्रतिशत छात्राए एक से अधिक बार इनका स्वाद ले चुके हैं इनमें शराब, चरस, गाँजा, भाँग एल. एस, डी. अफीम, कोकीन, हेरोइन, पैथैड्रिन, पार्फीन तथा दूसरी नशीली दवाए शामिल है। छात्रों में दर्द निवारक दवाओं का भरपूर इस्तेमाल होता है।

हिन्दुस्तान की सांस्कृतिक राजधानी इलाहाबाद में स्थित विश्वविद्यालय में 50 प्रतिशत से भी अधिक छात्र नशे का सेवन करते है। यहां के छात्र भयंकर नशों को लेने से भी नहीं चूकते। गाँजा, चरस, शराब, हेरोइन, आदि तो आम बात हो गई है। यहां के छात्रावास में पूर्वांचल से आए हुए अधिकतर लड़कों में नशे की आदत है। छात्राए भयंकर नशा तो नहीं लेती लेकिन आनन्द लेने के उद्देश्य से सिगरेट, शराब, गांजे आदि का अवश्य सेवन करती है। छात्रावास की छात्राए नशे का सेवन अधिक मात्रा मे करती है।

आजकल जब पूरी पीढ़ी में में मादक द्रव्यों का सेवन करने का फैशन हो गया है तो भला राजस्थान विश्वविद्यालय क्यों पीछे रहे। यहां बहुत से ऐसे छात्र-छात्राए मिल जायेंगे, जो किसी न किसी रूप में इस नशीलें संसार में डूबे रहते हैं।

नशा करने वाले अनेक छात्रों का कहना है कि वे मानसिक तनाव से मुक्ति पाने तथा निरुत्साह और शक्तिहीन को दूर करने के लिए नशा करते हैं। अनेक छात्रों का कहना है कि उन्होंने तो सिर्फ तजुर्बा हासिल करने के लिए नशे को अपनाया हैं। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा समिति की मांगें

1. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नियम और अधिकार बनाए जाएं।

2. मजहब के आधार पर पुलिस और अन्य सरकारी विभागों में आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

3. कश्मीर, असम व देश के सभी भागों में पाकिस्तानी घुसपैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यन्त्रों में लगे सभी विदेशी पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

4. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए।

5. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति न दी जाए और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाए।

6. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीकरण की नीति समाप्त की जाए।

7. कश्मीर सम्बन्धी धारा 370 तुरन्त हटाई जाए और वहां भारत के नागरिकों के बसने की व्यवस्था हो।

8. मजहब के नाम पर अधिकार माँगने व दंगा करने वालों को पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए।

9. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उन्हें वोट का अधिकार न दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथपत्र भरने का नियम बनाया जाए जिसमें वह स्वीकार करे कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत के प्रति रहेगी।

10. गोहत्या का कलंक तुरन्त मिटाया जाए।

11. बिहार व उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का आदेश तुरन्त रद्द किया जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज के कैसेट

- नवीनतम

१. वैदिक भजन सिन्धु — २५ रूपये
गायक - श्री सत्यपाल "सरल"

२. प्रकाश भजन सिन्धु — २५ रूपये
गीतकार - स्व. प्रकाशचन्दजी कविरत्न, गायक - श्री महेशचन्द संगीतरत्न

३-४. विवाह गीत (दो कैसेट) — ५० रूपये
(कन्या-पक्ष एवं वर पक्ष) गीत एवं गायन-माता लज्जारानी गोयल एवं श्रीमती सरोज गोयल। विवाह के अवसर पर प्रत्येक परिवार में बजाने योग्य शानदार गीत एवं संगीत से युक्त नये कॅसेट।

५-६. वैदिक नित्यकर्म विधि (दो कॅसेट) — ५० रूपये
मन्त्रोच्चारण - स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रत्येक गृहस्थ के लिये निर्दिष्ट नित्यकर्मों की विधि व्याख्या सहित।

७. वेद भारती — ३० रूपये
शास्त्रीय रागबद्ध मन्त्र। व्याख्या सहित। सम्पादन - श्री सत्यकाम विद्यालंकार.वेदपाठ एवं संगीत - अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त श्री सत्यशील देशपाण्डे।

- हमारे अन्य अति लोकप्रिय कैसेट — प्रत्येक ३० रूपये

८. पथिक भजनसिन्धु ९. मुसाफिर भजन सिन्धु १०.श्रद्धा
११. आर्य भजनावली १२. वेदगीताञ्जलि १३. भजनसुधा।

- हमारे शेष संग्रह करने योग्य कैसेट — प्रत्येक २५ रूपये

१४. वैदिक सन्ध्याहवन १५. गायत्री महिमा १६. भक्तिभजनावलि
१७. महर्षि दयानन्द सरस्वती १८. आर्यभजनमाला १९. आर्यसंगीतिका
२०. योगासन प्राणायाम स्वयं शिक्षक २१-२२. महात्मा आनन्द स्वामी उपदेशामृत (दो कॅसेट) स्व. महात्माजी की ही अमृतमयी वाणी में दो महत्वपूर्ण प्रवचन।

डाक से मंगाने के लिये

- कृपया पूरा मूल्य आदेश के साथ भेजिये। चार कैसेट तथा उससे ज्यादा का डाक व्यय हम देंगे। तीन कैसेट तक के लिये १० रूपये डाक तथा पैकिंग के भी भेजिये।
- वी. पी. पी. के आदेश पर डाक एवं पैकिंग व्यय आपको देना होगा।

विशेष उपहार :- १२ कैसेट मंगाने वालों को। तथा २० कैसेट मंगाने वालों को २ कैसेट उपहार स्व[illegible] दिये जायेंगे।

सूचना - व्यापारिक विशेष छूट के लिये पूछताछ आमन्त्रित है।

संसार साहित्य मण्डल
१४१, मुलुण्ड कालोनी, बम्बई - 400 082.
फोन : ५६१ ७१ ३७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बांटिये

.	चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की	60 पैसे
	भारत के मुसलमानों का क्या करें ?—वेदभिक्षु:	60 पैसे
.	हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु:	60 पैसे
.	मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	5 रु०
.	हम सब हिन्दू हैं वीर सावरकर	60 पैसे
6.	पोस्टर—दो प्रकार के	1.20 पैसे
7.	इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी	60 पैसे
8.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी	60 पैसे
9.	हिन्दू जागो—देश बचाओ !	60 पैसे
10.	इस्लाम—एक परिचय	60 पैसे
.	Bible in the Balance	1 रु०
.	A Challenge to the Christian Faith	30 पैसे
3.	पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षु:	60 पैसे
14.	पादरियों को चुनौती	60 पैसे
5.	बाइबिल को चुनौती	60 पैसे
16.	क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	60 पैसे
17.	...और पादरी भाग गया	60 पैसे
18.	Christianity Unmasked	1 रु०
.	The Clarion Call	60 पैसे
	जनज्ञान मासिक का जय हिन्दू विशेषांक	6 रु०
.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ?	60 पैसे
.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	60 पैसे
23.	तमिल ट्विस्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	60 पैसे
24.	हिन्दू जागेगा : देश का संकट भागेगा	60 पैसे

1000 पुस्तकें मंगाने पर 50% और 500 पुस्तकें मंगाने पर 25% छूट ।

प्रत्येक आदेश के साथ संपूर्ण अथवा कम से कम एक चौथाई धन पेशगी भेजें :

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक पं० राकेशरानी द्वारा 'जनज्ञान' मुद्रणालय
दिल्ली-36 से मुद्रित एवं प्रकाशित ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक) P. O. अलीपुर दिल्ली-३६	चैत्र संवत् २०४४ मार्च १९८८	D-C-201 N. R. 10719/65

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	मूल्य 500 रु०
2.	सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं. विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)	80 ,,
3.	वेद ज्योति	15 ,,
4.	वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)	30 ,,
5.	सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या)	20 ,,
6.	अथर्ववेद परिचय	6 ,,
7.	संस्कार विधिः (सजिल्द)	20 ,,
8.	सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र)	30 ,,
9.	यज्ञ-मीमांसा (अग्निहोत्र दर्पण) (डा० रामनाथ वेदालंकार)	30 ,,
10.	सत्यार्थ-प्रकाश (10"×15") स्थूलाक्षर (सादे पेपर पर)	151 ,,
	,, ,, (आर्ट पेपर पर)	201 ,,
11.	ज्योति-स्तम्भ	10 ,,
12.	वैदिक सम्पत्ति	101 ,,
13.	योगासन	2 ,,
14.	योग और ब्रह्मचर्य	3 ,,
15.	Concept of God	3 ,,
16.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	25 ,,
17.	LIGHT OF TRUTH	50 ,,
18.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	6 ,,
19.	वैदिक गीता (गीता के श्लोकों का सरल हिन्दी भाष्य)	50 ,,
20.	संक्षिप्त महाभारत	50 ,,
21.	संक्षिप्त रामायण	10 ,,
22.	गायत्री मंत्र (चार्ट) हिन्दी व्याख्या सहित (दोनों ओर पत्ती लगा)	1.50 ,,

कम से कम दस प्रतियां मंगवायें। सूचीपत्र मुफ्त। आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

कार्यालय :

2286, आर्यसमाज रोड
करोलबाग, नई दिल्ली-110005

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर
महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
अलीपुर, दिल्ली-1100036

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi